# हमारा पर्यावरण

(तृतीय श्रेणी)

सत्यमेव जयते

विद्यालय शिक्षा विभाग । पश्चिम बंग सरकार

पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद

# विद्यालय शिक्षा विभाग । पश्चिम बंग सरकार

विकास भवन, कोलकाता- ७०००९१

# पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद

डी के ७/१, विधाननगर, सेक्टर -२
कोलकाता - ७०००९१



Neither this book nor any keys, hints, comment, notes, meanings, connotations, annotations, answers and solutions by way of questions and answers or otherwise should be printed, published or sold without the prior approval in writing of the Director of School Education, West Bengal. Any person infringing this condition shall be liable to penalty under the West Bengal Nationalised Text Books Act, 1977.



प्रथम संस्करण : दिसम्बर , २०१२
द्वितीय संस्करण : दिसम्बर , २०१३
परिवर्धित और परिमार्जित तृतीय संस्करण : दिसम्बर, २०१४

मुद्रक
वेस्ट बंगाल टेक्स्ट बुक कार्पोरेशन लिमिटेड
( पश्चिम बंग सरकार का उद्यम)
कोलकाता -७०००५६

# परिषद की बातें

नये पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसूची के आधार पर तृतीय श्रेणी के लिए **'हमारा पर्यावरण'** पुस्तक का प्रकाशन किया गया। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री माननीया ममता बन्द्योपाध्याय ने सन् २०११ में एक 'विशेषज्ञ समिति' का गठन किया था। उसी समिति की सिफारिश के आधार पर यह पुस्तक **'हमारा पर्यावरण'** तैयार की गई है।

नये पाठ्यक्रम, पाठ्यसूची एवं पाठ्यपुस्तक तैयार करने के क्रम में 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा- २००५' एवं 'शिक्षा अधिकार -२००९' -इन दोनों का विशेष रूप से पालन किया गया है। विद्यार्थियों के वैज्ञानिक शोध और खोज प्रक्रिया के हाथों-हाथ प्रयोग करने के ढेरों अवसर पुस्तक में मौजूद हैं। विद्यार्थियों के वास्तविक अनुभवों को प्रधानता देते हुए, कुछ-एक विषय (Theme) को आधार बनाकर, एक ओर जैसे इस पुस्तक को तैयार किया गया है, दूसरी ओर कक्षा की चारदिवारी से बाहर जो विश्व-प्रकृति का उन्मुक्त विस्तार है, विद्यार्थी उन्हें भी जानें-समझें और अपने ज्ञान में वृद्धि करें, इसका प्रयास भी इस पुस्तक में किया गया है। आशा है विद्यार्थियों के लिए विज्ञान, समाज, इतिहास एवं भूगोल का बुनियादी ज्ञान तैयार करने में तृतीय श्रेणी के लिए तैयार यह पुस्तक **'हमारा पर्यावरण'** महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

चुने हुए कुछ विद्वानों, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं इस विषय के विशेषज्ञों द्वारा इस पुस्तक को तैयार किया गया है। उन्हें धन्यवाद देता हूँ। प्रख्यात चित्रकारों ने विभिन्न श्रेणी की पुस्तकों को अपनी कूचियों और रंगों से चित्ताकर्षक बनाया है। उनके प्रति कृत्तज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

**'हमारा पर्यावरण'** पुस्तक विद्यार्थियों में मुफ्त वितरित की जाएगी। २०१४ शिक्षा-वर्ष में यह पुस्तक पश्चिम बंगाल के हर कोने में समय पर पहुँच जाए, इसकी व्यवस्था पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद् एवं पश्चिम बंग शिक्षा विभाग द्वारा की जाएगी। पुस्तक की उत्कृष्टता और बढ़े, इसके लिए शिक्षानुरागी व्यक्तियों की राय और परामर्श को हम सादर ग्रहण करेंगे।

जुलाई २०१४
आचार्य प्रफुल्लचन्द्र भवन
डी-के ७/१, सेक्टर-२
विधाननगर, कोलकाता-७०००९१

मानिक भट्टाचार्य
अध्यक्ष
पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद

# प्राक्कथन

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री श्रीमती ममता बन्द्योपाध्याय ने २०११ में विद्यालय शिक्षा को लेकर एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया था। इस विशेषज्ञ समिति को दायित्व दिया गया कि वह विद्यालय स्तर के तमाम पाठ्यक्रम, पाठ्यसूची एवं पाठ्यपुस्तकों पर विचार विमर्श, पुनर्विवेचन एवं पुनर्विन्यास प्रक्रिया का परिचालन करे। उसी समिति की सिफारिश के आधार पर नये पाठ्यक्रम, पाठ्यसूची एवं पाठ्यपुस्तक का निर्माण हुआ है। हमने यह काम जबसे शुरू किया तब से ही राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा २००५ (NCF 2005) एवं शिक्षा का अधिकार कानून २००९ (RTE 2009) इन दोनों का अनुसरण किया है। साथ ही हमने अपनी परियोजना में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शिक्षा के प्रति आदर्श एवं उनकी रूपरेखा को आधार स्तम्भ बनाया है।

रवीन्द्रनाथ ने लिखा था, '...सीखने के समय, बड़े होते जाने के समय प्रकृति का सहयोग अति आवश्यक है। पेड़-पौधे, स्वच्छ आकाश, मुक्त वायु, निर्मल जलाशय, मुक्त परिवेश आदि बेंच और बोर्ड, पोथी एवं परीक्षा से कम जरूरी नहीं हैं।' ('शिक्षा की समस्या') 'हमारा पर्यावरण' श्रेणी की पुस्तकें हमने उदार प्रकृति के संग सम्बन्ध स्थापित करते हुए तैयार करने की कोशिश की है। विद्यार्थी जिज्ञासु मन के साथ नियमित ही प्रकृति के बीच जाकर खड़े हों, हमने पुस्तक में इसकी सम्भावना भी रख छोड़ी है। तृतीय श्रेणी की 'हमारा पर्यावरण' पुस्तक में एक निश्चित विन्यास है। प्रकृति के साथ मानव जीवन के विभिन्न सम्बन्धों को इस पुस्तक में दिखाया गया है। अत: 'हमारा पर्यावरण' श्रेणी की पुस्तकें हमने पर्यावरण से परिचय के माध्यम से विज्ञान, भूगोल एवं इतिहास के प्राथमिक स्तर की धारणाओं को समाहित करने की कोशिश की है।

चुने हुए शिक्षाविदों, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विषय-विशेषज्ञों द्वारा बहुत ही कम समय में पुस्तक को तैयार किया गया है। पश्चिम बंगाल की प्राथमिक शिक्षा का नियम निर्धारक पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद है। उनके द्वारा गठित समिति ने पुस्तक का अनुमोदन कर हमारी मदद की है। समय-समय पर पश्चिम बंग सरकार के शिक्षा विभाग, पश्चिम बंग सर्वशिक्षा अभियान, पश्चिम बंग शिक्षा अधिकार ने सहायता प्रदान की है। उन्हें हम धन्यवाद देते हैं।

पश्चिम बंग के माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. पार्थो चट्टर्जी ने जरूरी राय और परामर्श देकर हमारा मार्गदर्शन किया है। उन्हें हम अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

पुस्तक की उत्कृष्टता बढ़ती रहे, इसके लिए हम शिक्षाप्रेमी लोगों के विचार-परामर्श सादर ग्रहण करेंगे।

जुलाई, २०१४

निवेदिता भवन<br>
पंचम तल<br>
विधाननगर, कोलकाता -७०००९१

अभीक मजुमदार<br>
चेयरमैन<br>
विशेषज्ञ समिति<br>
विद्यालय शिक्षा विभाग<br>
पश्चिम बंग सरकार

## विशेषज्ञ समिति द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक निर्माण परिषद

### पुस्तक निर्माण व विन्यास

अध्यापक अभीक मजुमदार (चेयरमैन, विशेषज्ञ समिति)

अध्यापक रथीन्द्रनाथ दे (सदस्य सचिव, विशेषज्ञ समिति)

रत्ना चक्रवर्ती बागची (सचिव, पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद)

डॉ. देवब्रत मजुमदार    डॉ. सन्दीप राय    अनिर्वाण मंडल

### परामर्श व सहयोग

अध्यापक ए. के. जलालउद्दीन    डॉ. शीलांजन भट्टाचार्य    डॉ. देवी प्रसाद दुयारी    अध्यापक सुमन राय

अध्यापक मिनहाज हुसैन    अध्यापक मिता चौधुरी    देवाशीष मंडल    डॉ. धीमान बसु

सुब्रत हाल्दार    वन्दना सरकार भट्टाचार्य    प्रसेनजित चक्रवर्ती

सुब्रत गोस्वामी    पार्थप्रतिम राय    विश्वजीत विश्वास

रूद्रनील घोष    देवब्रत मजुमदार    सुदीप्त चौधुरी

नीलांजन दास    डॉ. श्यामल चक्रवर्ती    संजय बड़ुआ

### पुस्तक सज्जा

आवरण व भीतरी साज-सज्जा : देवाशीष राय

आवरण लिपि : देवब्रत घोष

सहयोग : सुब्रत माजी, विप्लव मंडल

हिन्दी अनुवाद : सुशील कान्ति

सहयोग : जे.के. भारती, डॉ. प्रमथनाथ मिश्र

सम्पादक : डॉ कृपाशंकर चौबे

शरीर १–२५

खाद्य २६–५०

पोशाक ५१–६४

घर–द्वार ६५–९०

परिवार ९१–१११

आकाश ११२–१३०

सम्पदा १३१–१४५

सावधानी १४६–१५३

रंगबहार १५५–१५७

हमारा पन्ना १५८–१५९

पाठ्यसूची – १६०

मूल्यांकन की रुपरेखा – १६१–१६२

शिक्षण परामर्श १६३–१६६

# इस पाठ्य पुस्तक के विषय में कुछ बातें

हमारी बीमार शिक्षा प्रणाली के रोग एवं उसकी चिकित्सा के विषय में सन् १८९२ में 'शिक्षा का हेर-फेर' निबंध में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा था :

**"इसका मुख्य कारण, बचपन से ही हमारी शिक्षा के साथ आनन्द का जुड़ाव नहीं है। ... एक शैक्षणिक पुस्तक को नियमत: हजम करने के लिए अनेक पाठ्यपुस्तकों की सहायता आवश्यक हो जाती है। आनन्द के साथ पढ़ते-पढ़ते पढ़ने की शक्ति अनजाने ही समृद्ध होती रहती है; ग्रहणशक्ति, धारणशक्ति, चिन्तनशक्ति बड़े सहज एवं स्वाभाविक नियम से बल प्राप्त करती है।"**

हमने रवीन्द्रनाथ के इस चिकित्सा विधान को मान कर ही यह 'पाठ्य पुस्तक' तैयार करने की कोशिश की है। हमें आशा है कि शिशु 'आनन्द के साथ' यह पुस्तक पढ़ेगा। उनसे आपस में जो चर्चा (आपसी बातचीत)करने के लिए कहा गया है, उसे वे 'आनन्द के साथ' करेंगे। अपनी कक्षा में अप्रासंगिक विषयों पर उनका शोरगुल क्रमश: 'आनन्दमय सामूहिक चर्चा' में रूपान्तरित हो जाएगा। मुहल्ले में एवं दूसरों के साथ भी वे 'आनन्द के साथ' चर्चा करेंगे।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा २००५ में कहा गया है **"Intelligent guessing must be encouraged as a valid pedagogic tool. Quite often children have an idea arising from their everyday experiences, or because of their exposure to media, but they are not quite ready to articulate it in ways that a teacher might appreciate it. It is in this 'zone' between what you know and what you almost know that new knowledge is constructed. Such knowledge often takes the form of skills, which are cultivated outside the school, at home or in the community. All such forms of knowledge must be respected"**

शिशु घर व मुहल्ले के शिक्षित लोगों से तो सीखेगा ही, कई बार अपने करीबी निरक्षर लोगों से भी ज्ञान धारण (idea) करेगा। उसके पहले और बाद में भी 'आनन्द के साथ' इस पुस्तक को पढ़ने के फलस्वरूप उनके ज्ञान गठन की प्रक्रिया उन्नत होगी। इसके कारण केवल उनके 'पढ़ने की शक्ति अनजाने ही समृद्ध' होती रहेगी, ऐसा नहीं है, आत्मपरीक्षण और पर्यावरण परीक्षण के विषय में उनकी 'ग्रहणशक्ति, धारणशक्ति, चिन्तनशक्ति बड़े सहज एवं स्वाभाविक नियम से बल प्राप्त करती रहेगी।

मगर ये सब अचानक ही नहीं होनेवाला। शिक्षक व शिक्षिकाओं, अभिभाविका व अभिभावकों के सक्रिय समर्थन व सहयोग के बिना कभी भी सफलता नहीं मिल सकती। अत: ये सारी बातें मुख्य रूप से उनको लक्षित करके ही कही गई हैं।

शिशुगण अपनी कक्षा में क्या करेंगे, शिक्षक व शिक्षिका कैसे उनके मददगार (facilitator) होंगे, इसका उदाहरण पुस्तक के हर पृष्ठ पर मौजूद है। घर के लोगों और मुहल्ले के लोगों से क्या मदद माँगी गई है, इसका उदाहरण भी पुस्तक में कई जगह दिया गया है।

संभव है, इसके बाद सिखाने की सलाह की जरूरत न हो। फिर भी हम जानते हैं, इस रास्ते पर हम सब पहली बार चल रहे हैं। इस विशाल क्षेत्र के रास्ते पर चलने का अनुभव हमें नहीं है। इसीलिए कुछ 'सिखाने का परामर्श' पुस्तक के अंत में दिया गया है। आप भी सोचें और अपनी भावनाओं से हमें अवगत कराएँ।

आइए, हम सब मिलकर शिशुओं से उसका शैशव न छीनकर उन्हें ऐसी पुस्तक से परिचित कराएँ, जो रवीन्द्रनाथ के शब्दों में 'शिक्षा पुस्तक' नहीं, 'पाठ्य पुस्तक' है।

# हमारा पर्यावरण

नाम ..........................................................................................................

माँ का नाम ..................................................................................................

पिताजी का नाम ............................................................................................

रोल नम्बर ...................................................................................................

विद्यालय का नाम ..........................................................................................

घर का नम्बर और रास्ते का नाम ......................................................................

..................................................................................................................

गाँव का नाम / मुहल्ले का नाम .........................................................................

जिले का नाम ...............................................................................................

# शाम के नये-नये खेल

कक्षा में आते ही शिक्षिका ने पूछा — कल शाम को तुम लोगों ने कौन-कौन से खेल खेले?

विमल ने हँसकर कहा — हमलोगों ने फुटबॉल खेला।

तितली ने कहा — जानती हैं मैडम, वह बहुत अच्छा खेलता है।

— फुटबॉल खेलने में पैरों की बहुत कसरत होती है। खूब दौड़ना पड़ता है।

हामिद ने कहा — मैडम, हमलोगों ने क्रिकेट खेला।

रीना ने कहा — क्रिकेट खेलने से हाथ और पैर दोनों की मेहनत होती है। है न मैडम?

— बैट-बॉल करना, रन लेना, फिल्डिंग करना- सभी तो हाथ और पाँव के काम हैं।

वीणा ने कहा — हमलोगों ने कल इक्का-दुक्का खेला। एक पैर से कूदने पर पैर का काम और अधिक होता है?

— पैर के तलवे, एड़ी, घुटना— सभी काम करते हैं।

अमिना ने कहा — मगर लुका-छुपी खेलने में भी बहुत दौड़ना पड़ता है।

सबिना ने कहा — मैं रोज स्किपिंग करती हूँ। उससे भी पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है।

— निश्चित ही। स्किपिंग से उँगुली, कब्जी, केहुनी, कन्धे - इन सबका भी बहुत व्यायाम हो जाता है। इसके अलावा पैर का व्यायाम तो है ही।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

नीचे हाथ और पैर के विभिन्न भागों के चित्र दिये गये हैं। इनमें से किसका क्या काम है? चित्र के बगल में लिखो :

## अच्छा खेलना और अच्छा सुनना

रीना ने कहा— मैडम, कल हमलोगों ने कबड्डी खेली।

अमिना ने कहा— उसमें बहुत दम है। वह जिस दल में रहती है, वही जीतता है।

सीमा ने कहा— वह बहुत धीरे-धीरे गुनगुनाती हुई कबड्डी-कबड्डी बोलती है। सुनाई भी नहीं पड़ता। क्या पता साँस भी ले लेती हो।

विशु ने हँसते हुए कहा— इस बात को लेकर खूब झगड़ा हुआ। सीमा कहती है, तुमने साँस ली है। पर रीना नहीं मानी।

रीना ने कहा— और तो कोई नहीं कहता। वह कम सुनती है। तो मैं क्या करूँ?

मैडम ने जानना चाहा— किस कारण से सुनने में कठिनाई होती है, मालूम है?

दिलीप ने कहा— कान बन्द हो जाने से सुनने में कठिनाई होती है।

— कान में मैल जमने की बात कह रहे हो क्या?

निशा ने कहा— हाँ मैडम, कान में खोंट जम जाए तो कान बन्द हो जाता है।

— ठीक कहा तुमने। कान साफ करना चाहिए मगर सावधानी से। कान के भीतर एक बहुत पतला सा पर्दा है।

— कहाँ? दिखाई तो नहीं पड़ता!

कुछ भीतर की ओर होता है। उसमें चोट लग जाए तो मुश्किल होती है।

दिलीप ने कहा— मेरे दादा जी मेरे कान साफ कर देते हैं।

— अच्छी बात है। कानों का मैल साफ करने में बड़ों की मदद लेनी चाहिए।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

कैसे क्या करते हो? क्या करने से क्या होता है? नीचे लिखो :

| | |
|---|---|
| हम किसके द्वारा साँस लेते हैं? | |
| साँस लेते समय शरीर का कौन सा भाग फूलता है? | |
| बातें करते समय शरीर का कौन सा अंग काम करता है? | |
| कान के अलावा मुँह में और कहाँ-कहाँ गंदगी जमती है? | |

## देह, हाथ, पैर की देखभाल

रबीन ने कहा— मैडम, खेलते-खेलते हाथ के नाखून के नीचे मैल जम जाते हैं।

अमिना ने कहा— नाखून साफ करना बहुत आसान है। सबसे पहले नेल-कटर से नाखूनों को काटोगे। उसके बाद साबुन से उसे धो लोगे।

मैडम ने कहा— ठीक कहा है। साबुन लगाओगे। उसके बाद नाखून को घिस लोगे।

रीना ने कहा— मैडम, नेल-कटर तो अँग्रेजी शब्द है न?

—हाँ, नेल का मतलब नाखून। और जिससे काटा जाता है, वह कटर।

ऋजु ने कहा— ब्लेड द्वारा भी नाखून काटे जाते हैं।

रीना ने कहा— हाँ, मगर सावधानी से काटना पड़ता है। उँगली कट जाने का डर रहता है। मेरे दादाजी नहरनी से नाखून काटते हैं।

— अच्छा, कान और नाखूनों के अलावा शरीर में और कहाँ मैल जमता है?

असीम ने कहा— हाथ, पैर और शरीर का चमड़ा जहाँ-जहाँ मुड़ता

है, वहीं मैल जमता है।

— जहाँ आखँ नहीं देख पाती, वहाँ भी मैल जमता है- जैसे पीठ, गर्दन, कनपट्टी।

दिलीप ने कहा— केहुनी में जमता है। पैर के ऊपर भी जमता है।

— जाड़े के मौसम में पैर के ऊपर मैल जमने से मुश्किल होती है। पैर की चमड़ी फट जाती है।

हीना ने कहा— एड़ियों में भी मैल जमते हैं। जाड़े में एड़ियाँ फट जाती हैं।

— साबुन से इन जगहों को साफ करना चाहिए।

दीपिका ने कहा— साबुन लगाने के बाद धो लेना पड़ता है। भीगे हुए चमड़े को हाथ से रगड़ना पड़ता है। तब चमड़ा साफ हो जाता है।

जुलेखा ने कहा— उसके बाद थोड़ा तेल लगाने से और अच्छा होगा।

— देखती हूँ, तुमलोग तो बहुत कुछ जानते हो। सभी नियमित रूप से सिर, देह, हाथ-पैर साफ करोगे। नाखून बढ़ते ही काट लोगे।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

नाखून, सिर, देह-हाथ-पैरों को साफ करने में क्या क्या समस्याएँ आई हैं? नीचे लिखो :

| विषय | क्या-क्या समस्याएँ आईं ? | कैसे समाधान हुआ ? |
|---|---|---|
| | | |

# सुबह उठकर सबसे पहले माँजें हम सब दाँत

दूसरे दिन, कक्षा में मैडम के आते ही रेहान ने पूछा — मैडम, जीभ पर भी तो बहुत गन्दगी जमती है।

मैडम ने कहा — हाँ, जमती है। मुँह साफ करते हो न ? जीभिया से सभी लोग जीभ को भी साफ कर लोगे। उसके बाद कुल्ला करोगे। जीभ साफ हो जाएगी।

एमिलि ने कहा — दाँतों में भी गन्दगी जमती है। मुँह से दुर्गन्ध आती है। इसीलिए हर रोज दाँत माँजती हूँ।

— मगर दाँत माँजने के भी नियम हैं।

— सभी चौंक पड़े ! दाँत माँजने का कैसा नियम ?

— निचली दाँतों के लिए नीचे से ऊपर ब्रश करोगे और ऊपरी दाँतों के लिए ऊपर से नीचे।

दिलीप ने कहा — मैडम, आँख और नाक में भी गन्दगी जमती है।

— नाक और आँखों को भी साफ करना पड़ता है।

पिकू ने कहा — गन्दगी जमकर सख्त हो जाने पर पानी से भिगो लेना चाहिए। पानी से भिगोने पर गन्दगी नर्म हो जाती है। साफ करना आसान हो जाता है। है न मैडम ?

— वाह ! तुम्हें तो मालूम ही है। सभी लोग रोज सुबह दाँत, जीभ, नाक, आँख, मुँह-सब साफ करोगे।

# नाक, कान, आँख, जीभ और त्वचा मिलजुल कर हम हैं पाँच

अमिना के नाना जी कुछ सोच रहे थे। अमिना ने पेन्सिल को नाना जी की केहुनी में छुला दिया। नाना जी ने अमिना की तरफ देखा। कहा–कहाँ पेंसिल छुलाने से समझ में आता है। जरा बताओ तो ?

— चमड़े पर।

— शरीर पर त्वचा (चमड़ा), जहाँ पतली होती है, वहाँ ज्यादा समझ में आती है।

— यह तो सबको मालूम है।

नाना जी ने हँसते हुए कहा — यदि गन्ने से शरीर को दबाओ तो दर्द महसूस होगा। मगर जीभ से चखो तो मीठा लगेगा। अब, दिन के उजाले में आँखें बन्द कर लो। कुछ नहीं दिखेगा। आँखों में उजाला जाए, तभी देख पाओगी। वैसे ही, कान बन्द रखो। कोई पुकारे तो नहीं सुन पाओगी। नाक को जोर से दबा लो तो सूँघ नहीं पाओगी।

दूसरे दिन अमिना ने स्कूल में सब को बताया। गन्ने के बारे में उसके नाना जी की बातें सुनकर सब को मजा आया। मैडम ने कहा— आँख, कान, नाक, जीभ और चमड़ा, इन पाँच अंगों को इन्द्रिय कहते हैं। पाँच हैं, इसीलिए पंचेन्द्रिय हैं।

तियान ने कहा— गले की आवाज से पता चलता है कि कौन बुला रहा है।

रबिन ने कहा — जान पहचान का होने पर ही पता चलता है।

— हाँ, देखकर पहचानना और गले की आवाज सुनकर पहचानना। दोनों ही अलग–अलग काम हैं। जो आँखों से कम देखते हैं, वे कानों को खूब काम में लगाते है।

हीरा ने कहा — मेरी दादी माँ आँखों से नहीं देख पातीं। गले की आवाज से ही हमें पहचान लेती हैं। छूकर भी पहचान सकती हैं।

— हाँ। एक इन्द्रिय अगर काम करना बन्द कर दे, तो दूसरी इन्द्रियाँ उसके काम में मदद करती हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१. इन्द्रियों के नाम और काम नीचे लिखो :

| इन्द्रियों के नाम | इन्द्रियों के काम |
|---|---|
| जीभ | खाने का स्वाद लेना। नाना प्रकार के स्वादों का अन्तर समझना। |
| | |
| | |
| | |
| | |

२. नीचे एक व्यक्ति का चित्र बनाओ। सिर, मुँह, हाथ, पैर और उँगलियाँ दिखाओ। किस अंग का क्या काम है? अंगों को साफ कैसे रखोगे? लिखो :

| व्यक्ति का चित्र और विभिन्न अंगों के नाम | इस अंग से हम कौन सा काम लेते हैं? | इन अंगों को हम कैसे साफ करेंगे? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |



विभिन्न इन्द्रियाँ व उनका काम

मुख्य वाह्य अंग व उनका काम

# काना माछी भों भों जिसको पाओ उसको छू

काना माछी के खेल में सभी काना माछी को घेरकर दौड़-भाग करते हुए बोलते हैं :

काना माछी भों-भों जिसको पाओ उसको छू!

उस दिन मैडम ने खेलने का नया नियम बताया।

एक दल में छह लोग रहेंगे। एक काना माछी बनेगा। एक रेफरी। बाकी चार थोड़ी दूरी पर खड़े हो जाएँगे। दौड़ेंगे नहीं। हर एक को चार-चार बार कहना है :

काना माछी भों-भों जिसको पाओ उसको छू!

काना माछी सुनेगा। अन्दाजा लगाएगा, आवाज किधर से आ रही है? फिर उसे ढूँढ़ेगा। एक मिनट के भीतर उसे छूना पड़ेगा। नहीं छू पाया तो फिर सभी हट जाएँगे। पुनः चार बार-काना माछी भों-भों जिसको पाओ उसको छू कहेगा।

इसी तरह कुछ देर तक खेल चला। नये नियम से बहुत मजा आया। थोड़ी देर बाद तियान बोला-एक नियम और हो सकता है। पहले

घूमते घूमते सभी— काना माछी भों-भों कहेंगे। फिर रेफरी किसी एक को बोलने के लिए कहेगा। वह कहेगा। काना माछी गले की आवाज पहचान कर कहेगा, किसकी आवाज है।

मैडम ने कहा—वाह! यह तो बहुत मजेदार नियम है।

रबिन ने भारी स्वर में कहा— मैं आवाज बदलकर कहूँगा।

प्रकाश ने कहा— देखना, मैं फिर भी पहचान लूँगा।

सीमा ने कहा— ठीक है, प्रकाश ही पहले काना माछी बने।

प्रकाश काना माछी बना। तियान के नियम से दोबारा खेल शुरू हुआ।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

काना माछी का खेल तो हुआ। अब नीचे लिखो :

| | |
|---|---|
| काना माछी खेल के इन दोनों नियमों में कौन-सी इन्द्रिय आँखों के बदले काम करती है? | |
| और कौन से नये नियम से काना माछी का खेल हो सकता है? | |
| जिस नियम के बारे में तुमने लिखा है उसमें कौन सी इन्द्रिय आँखों के बदले काम करेगी? | |

# आँखों जैसा कोई दोस्त नहीं

कक्षा में आते ही मैडम ने कहा— रीना, तुम कल स्कूल क्यों नहीं आई थी?
रीना ने कहा—पेट खराब हो गया था।
— आजकल बहुत उल्टी-पुल्टी चीजें खाती हो। इसमें पेट की क्या गलती? सुनील, तुम भी पिछले तीन दिन अनुपस्थित थे?
सुनील ने कहा— बहुत सर्दी लगी थी। बुखार भी था।
मैडम ने सुनील की तरफ देखा। उसका चेहरा उतरा हुआ था। उसे नजदीक बुलाया। पिन्टू ने कहा— मैडम, सिर में बहुत दर्द हो रहा है। कई दिनों से पढ़ते समय ऐसा हो रहा है।
शिक्षिका ने उसे एक किताब पढ़ने को दी। पिन्टू किताब को आँखों के बिल्कुल करीब ले गया। तब पढ़ सका।

शिक्षिका समझ गईं कि वह दूर की चीज ठीक से नहीं देख पाता है। मैडम ने कहा — अपने पिताजी को कल ही स्कूल आने को कहना। तुम्हें आँखों के डाक्टर को दिखाना पड़ेगा। शायद, तुम्हारा सिर इसी कारण दर्द करता हो। तुम में से किसी और को भी ऐसी समस्या है तो हाथ उठाओ।

इधर-उधर से कुछ हाथ ऊपर उठे।

मैडम ने कहा — ठीक से देख नहीं पाओगे तो इस सुन्दर पृथ्वी को समझोगे कैसे ?

रीना ने कहा — ठीक से देख नहीं पाने से हमें बहुत कुछ सीखने में समस्या भी होती है।

— ठीक कहते हो। आँखें रोशनी को पहचान कर हमें देखने में मदद करती हैं। इसीलिए आँखों की देखभाल करनी चाहिए। देखभाल न हो, तो कम उम्र में ही चश्मा लेने की जरूरत पड़ती है। अब मुझे ही देखो, मैं करीब की चीजें साफ-साफ नहीं देख पाती। मुझे भी इसीलिए चश्मा लगाना पड़ा है।

पल्टू ने कहा — मेरा मौसेरा भाई रंगों की पहचान नहीं कर पता। उसकी चिकित्सा चल रही है।

हमारी आँखों में ऐसे कुछ तत्त्व हैं जो रंगों की पहचान कराने में हमारी मदद करते हैं। हो सकता है तुम्हारे भाई की आँखों में वे तत्त्व ठीक से काम नहीं कर रहे हैं।

इमरान ने कहा — मेरे दोस्त तपन को रात में ठीक से दिखाई नहीं पड़ता

— लगता है तपन को रतौंधी बीमारी है। असली बात ये है कि, आँखें हमें सबकुछ देखना सिखाती हैं। जानना सिखाती हैं। पहचानना सिखती हैं। इसीलिए आँखों की देखभाल बहुत जरूरी है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुममें से किसको कौन सा रोग हुआ था? उस रोग से कहाँ और क्या कष्ट हुआ था? किस रोग से क्या कष्ट होता है, घर में बड़ों से जानकारी हासिल करो। उसके बाद नीचे लिखो :

| रोग का नाम | कहाँ कष्ट हुआ और क्या कष्ट हुआ? |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

## इन्द्रियों की हलचल आसानी से समझना

मरियम एक गुलाब लाई है। डाल के सिरे पर एक फूल, कई पत्ते है। उसमें छोटे–छोटे दो काँटे भी हैं। जियाना ने फूल लेने के लिए हाथ बढ़ाया। पकड़ते ही उसके मुँह से आह निकली और डाली को उसने छोड़ दिया। दिलीप और हिमू देख रहे थे। दिलीप ने आगे बढ़कर कहा– काँटा चुभा? या नाक में कोई कीड़ा चला गया?

जियाना ने अपनी उँगली देखी। खून निकला है या नहीं?

हिमू ने कहा– काँटा ही चुभा है। काँटा चुभते ही उसने छोड़ दिया। इसीलिए खून नहीं निकला।

जियाना की आँखें भर आई थीं। खून तो नहीं निकला, मगर चुभा था।

— मरियम ने फूल को जियाना की नाक के करीब बढ़ाया। जियाना ने दो बार लम्बी–लम्बी साँसें खींचीं। कितनी अच्छी सुगन्ध है! हँसती हुई बोली–जैसी काँटे की चुभन, वैसी ही अच्छी सुगन्ध!

मैडम कुछ दूर से यह सब देख रही थीं। पास आकर उन्होंने जियाना की उँगली को देखा। फिर हँसते हुई बोलीं– जियाना तुमने दर्द को चमड़े पर महसूस किया और सुगन्ध को नाक से। तो अब नाक और चमड़े का काम एक साथ समझ गयी!

— जियाना ने दर्द भरी मुस्कान के साथ कहा– हाँ मैडम।

रिक्ता बोली– मैडम, काँटा तो चुभा, उसकी उँगली में, मगर आँखों में पानी क्यों आया?

— तुम्हारे किसी दोस्त को चोट लग जाए तो दूसरों को कष्ट नहीं होता? उसकी एक इन्द्रिय को चोट लगी, दूसरी इन्द्रियों को उससे तकलीफ पहुँची। चमड़ा (त्वचा) भी तो एक इन्द्रिय है।

दिलीप ने कहा– मैडम, किसी के डाँटने पर भी तो आँखों में पानी आ जाता है। उस समय तो किसी इन्द्रिय को चोट नहीं लगती?

-तब इन्द्रिय को नहीं, मन को कष्ट होता है।

तितली ने कहा– डर लगने से भी रोना आता है।

–हाँ, अपने आस–पास के वातावरण से इन्द्रियाँ प्रभावित होती हैं। अचानक आई तेज रोशनी से आँखें बन्द हो जाती हैं। तेज गर्मी हो तो शरीर से लगातार पसीना बहता रहता है। ठण्ड से चमड़ा फटने लगता है। वज्रपात से कान बन्द हो जाते हैं। बहुत तीखा हो तो जीभ जलने लगती है। नाक में कुछ घुस जाए तो नाक सुड़सुड़ाने लगती है। असल में इन्द्रियाँ बहुत सजग होती हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

अपने आस-पास के पर्यावरण से इन्द्रियाँ और मन कैसे प्रभावित होते हैं, इसे नीचे लिखो :

| चारों तरफ का प्रभाव | इन्द्रियाँ और मन की अनुभूति |
|---|---|
| किसी की फटकार | आँखों में आँसू आना। रोने का मन करना। मन में दुःख होना। गुस्सा आना। |
| वज्रपात होना | |
| | |
| | |

## तैरते चलो आर-पार

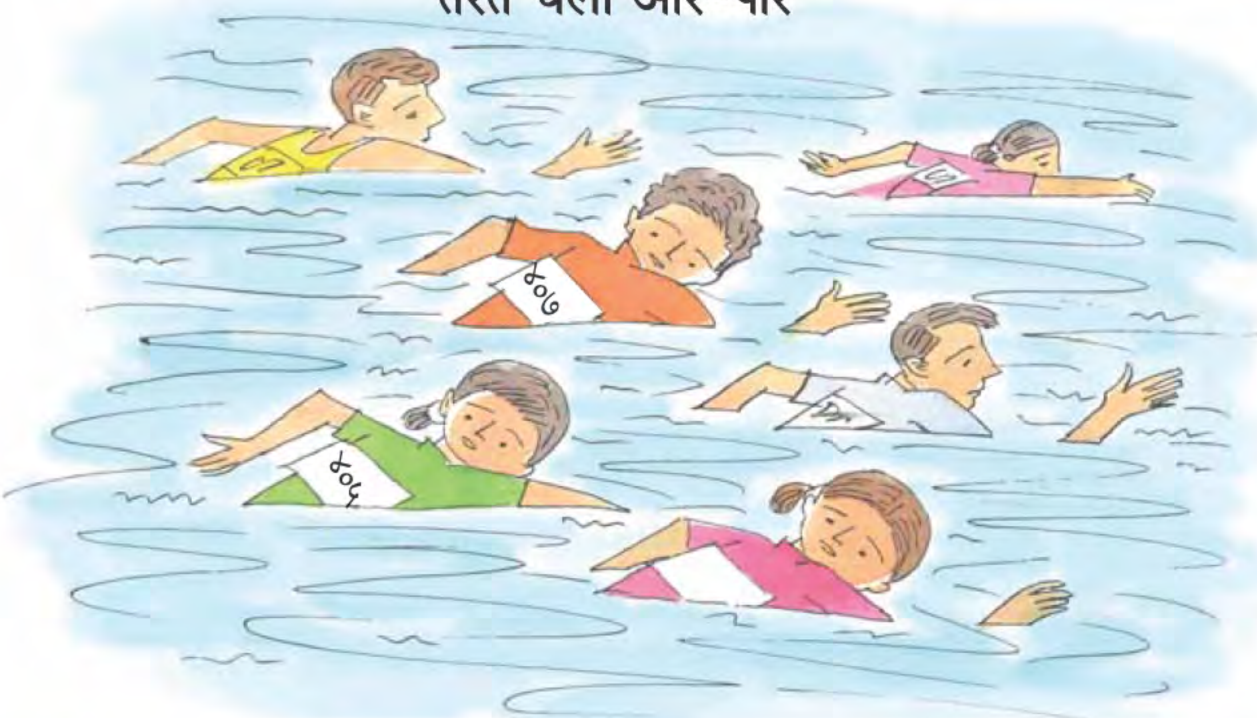

मुहल्ले में एक बड़ा तालाब है। अपने-अपने घरों से चलकर लड़के-लड़कियों का एक समूह वहाँ इकट्ठा हुआ है। दीपक, अरुणा, नीलिमा, जॉन, सोनाई, टिकाई, डमरू, हसन, बिल्टू,साजिया एवं और भी अनेक। कोई पानी में उतरने से डर रहा है। किसी ने अभी भी अच्छी तरह तैरना नहीं सीखा है। कोई बहुत अच्छा तैरता है। विद्यालय की तैराकी-प्रतियोगिता में पुरस्कार भी जीत चुका है। टिकाई ने पानी में उतरने से पहले व्यायाम करना शुरू किया। जॉन ने कहा- तुम हर रोज व्यायाम करने के बाद पानी में उतरते हो। बताओ तो क्यों ?

टिकाई ने कहा- पहले व्यायाम कर लेना अच्छा होता है।

-क्या अच्छी तरह तैरा जा सकता है ?

-हाथ और पैर को पहले खींचना पड़ता है। तेजी से साँस लेना और छोड़ना पड़ता है। उसके बाद तैरने उतरो तो अच्छा होता है।

इधर कई लोग तालाब में उतर चुके हैं। तैरना शुरू किया है। एकबार दाहिना हाथ उठाता है, तो दूसरी बार बायाँ। विद्यालय शुरू होने में अभी भी डेढ़ घण्टे की देर थी। विद्यालय की प्रधान शिक्षिका तालाब के किनारे से जा रही थीं। सबको देखते-देखते गईं मगर उनको किसी ने नहीं देखा।

दोपहर के भोजन के बाद प्रधान शिक्षिका की कक्षा थी। शिक्षिका ने कक्षा में आते ही पूछा- कौन-कौन तैरना जानते हो ? हाथ उठाओ।

बहुतों ने हाथ उठाया। प्रधान शिक्षिका ने देखा कि तीन बच्चों ने हाथ नहीं उठाया। मौमिता, सफिकुल, और एलिस ने। दीपक और सोनाई अगल-बगल बैठे हुए थे। मैडम ने उनकी ओर देखते हुए कहा- तुमलोग मौमिता, सफिकुल और एलिस को तैरना सिखा दोगे।

चलने, तैरने और खेलने में उपयोग होने वाले अंगों के नाम

मौमिता से कहा– साजिदा सीख रही है। तुमलोग भी सीख लेना।

मौमिता ने गर्दन हिलाई। मैडम ने फिर कहा– तैरने से क्या होता है, बताओ?

डमरू ने कहा– बहुत अच्छा व्यायाम होता है।

– ठीक कहते हो। और समझाकर बताओ।

डमरू ने कहा– हाथ हिलाना पड़ता है। पैर हिलाना पड़ता है। सीने और पीठ पर पानी का धक्का लगता है। कहीं भी दर्द नहीं हो सकता।

मैडम ने अब अपनी केहुनी मोड़कर दिखाई। कहा– ठीक कहते हो। अब देखो, कब्नी के पास दो हड्डियों का जॉइण्ट या जोड़ है। इसी तरह पूरे शरीर में बहुत से जोड़ हैं। तैरने से इन जोड़ों का हिलना–डुलना होता है। ये अंग स्वास्थ रहते हैं।

एलिस ने कहा– दूसरा व्यायाम करने से नहीं होगा?

– होगा। सब तरह के व्यायाम से शरीर का उपकार होता है। जैसे पी टी करना। तुमने दोनों हाथ ऊपर उठाए। उससे

चलने, तैरने और खेलने में उपयोग होने वाले अंगों के नाम

हाथ और कंधों के जोड़ हिलते-डुलते हैं।

टिकाई ने कहा- मगर तैरने से सारे जोड़ों को एक साथ फायदा होता है।

- ठीक कहा। एक बात और। तैरने से बार-बार लम्बी साँसें लेनी पड़ती हैं। उससे भी शरीर का बहुत लाभ होता है।

सफिकुल ने कहा- फुटबॉल खेलते समय भी बहुत दौड़ना पड़ता है। हाँफ जाता हूँ, तब लम्बी साँसें लेता हूँ।

मौमिता ने कहा- मैडम, कबड्डी खेलने से भी यही होता है। बहुत हाँफ जाती हूँ।

- यह भी सही है। फुटबॉल, कबड्डी, बैडमिण्टन- ये सब खेलना भी अच्छा है। शरीर के कई अंगों का व्यायाम हो जाता है।

टिकाई ने कहा- तैरने से एक साथ ही सब अंगों का व्यायाम हो जाता है।

— हाँ। कम समय में ही होता है और अच्छा होता है। इसीलिए तैरना बहुत अच्छा है। मगर तैरना सीखे बिना गहरे पानी में उतरना ठीक नहीं है।

चलने, तैरने और खेलने में उपयोग होने वाले अंगों के नाम

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

शरीर में कहाँ–कहाँ हड्डियों का जोड़ है? नीचे चित्र बनाकर दिखाओ। चलने में, विभिन्न खेलों में और तैरने में शरीर के किस–किस हिस्से का व्यायाम होता है, उसे नीचे लिखो :

| आदमी का एक चित्र बनाओ। कहाँ–कहाँ हड्डियों का जोड़ है, उसे ० निशान से चिह्नित करो। | चलने में, विभिन्न खेलों में और तैरने में शरीर के किस–किस स्थान का व्यायाम होता है, उसे लिखो। |
|---|---|
| | पैदल चलना : |
| | फुटबॉल खेलना : |
| | कबड्डी खेलना : |
| | क्रिक्रेट (बॉलिंग करना) : |
| | क्रिक्रेट (बैटिंग करना) : |
| | क्रिक्रेट (फिल्डिंग करना) : |
| | स्किपिंग करना : |
| | बैडमिण्टन खेलना : |
| | तैरना : |

चलने, तैरने और खेलने में उपयोग होने वाले अंगों के नाम

# आस-पास, बारह मास मित्रों से भरा मेला

रेहाना और रिहान स्कूल से लौटकर रोज अपने बत्तखों को बुलाकर घर ले जाते हैं। बत्तखों का झुण्ड सुबह-सुबह चारा खाकर पानी में उतरता है। उसके बाद पूरा दिन पानी में रहता है।

रविलाल और पीरू हर दिन मैदान जाते हैं। खेलने के बाद मैदान से अपनी गायों और बकरियों को लेकर घर लौटते हैं। मौटूसी की शाम अपनी बिल्लियों की धमा-चौकड़ी देखते-देखते कट जाती है। रिमली ने एक झुण्ड गौरैया पाल रखी है। सुबह-सुबह वे सारे गौरैया खिड़की के पास चली आती हैं। रिमली उन्हें धान खिलाती है। ज्यादा नहीं, दो मुट्ठी धान में ही उनका हो जाता है। धान छितरा रिमली मुँह धोने जाती है।

टिकलू के पास एक कुत्ता है। टुनकी के पास मैना। टुनकी उनके लिए केंचुआ खोज कर रखती है। उनके आते ही वह उन्हें खिलाती है। कुट्टुस की नजर हमेशा छिपकली और गिरगिट की ओर रहती है।

छिपकलियाँ घरों के कीड़े खाती हैं। गिरगिट पेड़ों पर घूमता है। केवल अपना रंग बदलता है। कुट्टुस अवाक होकर देखता है।

टिपाई फतिंगा खोजते फिरता है। नाना प्रकार के फतिंगे। कोई कूदनेवाला। कोई उड़नेवाला। तिन्नी तितलियों के पीछे कभी इस बगीचे तो कभी उस बगीचे में घूमती रहती है। रिन्टू को तरह-तरह की मधुमक्खियाँ देखने का शौक है। इतु मछलियों को खिलाती है। अपना खाना खाते समय थोड़ा भात थाली में छोड़ देती है। उसे लेकर वह तालाब के घाट पर चली आती है। पानी में फेंकते ही मछलियों का झुण्ड आता है।

कक्षा में एक दिन यही सब बातें हो रही थीं। सबकी बातें शिक्षिका ने सुनीं। फिर कहा– वाह! तुमलोगों ने बहुत ध्यान से सबकुछ देखा है। अब जो जिसे अधिक जानता हो, वह उसके बारे में अन्य मित्रों को कहेगा।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

पिछले पन्नों पर जिनकी बातें हुईं, उनके कौन-कौन से अंग हैं? कितने हैं? कैसे हैं? नीचे लिखो :

| अंगों के नाम | गाय | मैना/कौवा | छिपकली/गिरगिट | तितली/फतिंगा |
|---|---|---|---|---|
| पैर | हैं/ चार बड़े-बड़े | | | |
| नाखून | है/नाम खुर भोंथरा | | | |
| रोआँ | हैं/पूरे शरीर में, कई रंगों के | | | |
| दाँत | हैं/भोंथरे | | | |
| डैना | नहीं | | | |
| सींग | हैं/दो कड़े-कड़े | | | |
| आँख | हैं/दो बड़ी-बड़ी | | | |
| पंख | नहीं | | | |

| | |
|---|---|
| **कौन-कौन से प्राणी कूद सकते हैं** | |
| **कौन-कौन प्राणी उड़ सकते हैं** | |

**मेल ज्यादा हैं, भिन्नता कम हैं, ऐसे प्राणियों का समूह बनाओ। एक/दो नाम लिखे हुए हैं, और नाम लिखो :**

| गाय, बकरी | गौरैया | छिपकली | कतला | तितली |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |

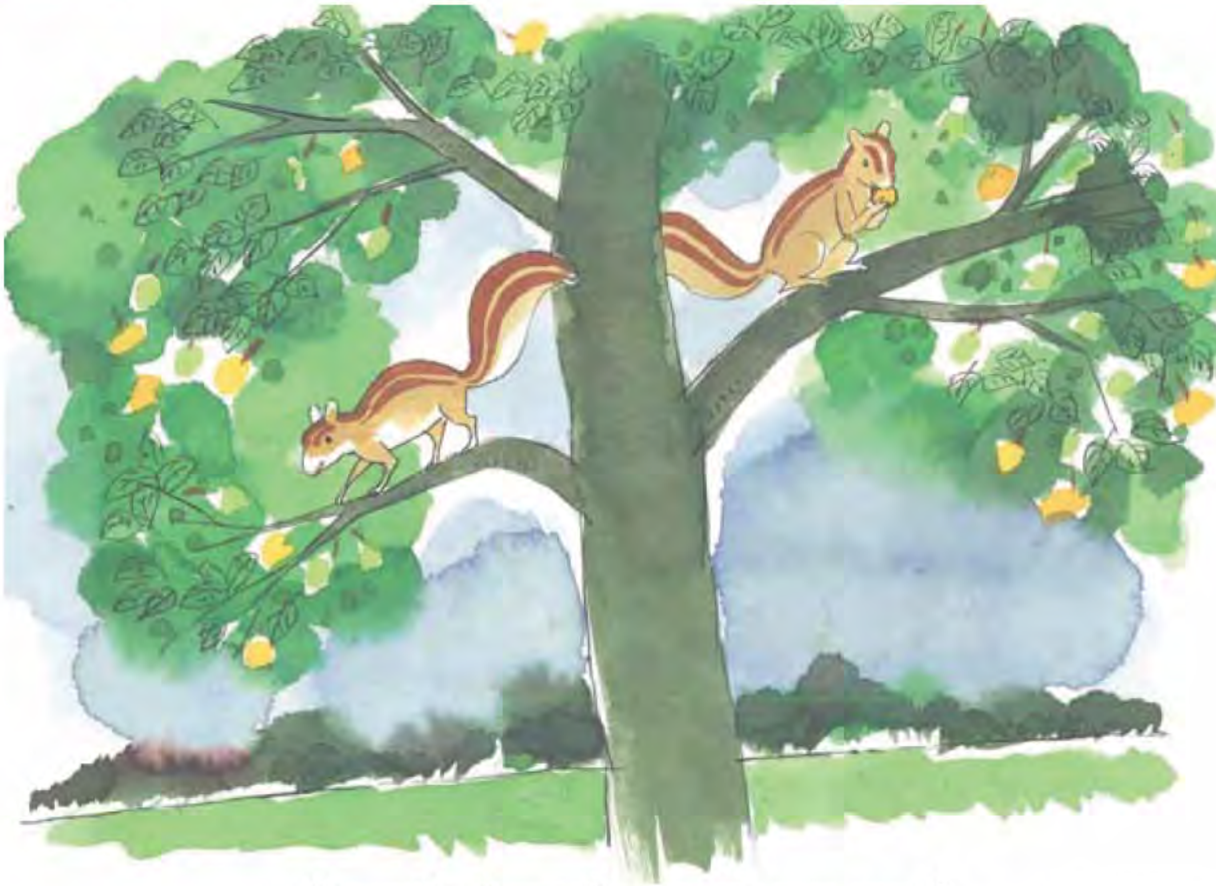

# गिलहरी, गिलहरी अमरूद तुम खाओ

साइना ने अमरूद के पेड़ की ओर दिखाते हुए कहा- वह देखो मेरे गुट्टू और गुट्टी! वे मेरे बहुत प्यारे दोस्त हैं। रोज मुझसे मिलने आते हैं।

मिन्टू ने देखा कि एक गिलहरी अपने हाथ में अमरूद लेकर खा रही है। दूसरी गिलहरी दौड़ रही है।

साइना ने कहा-देखा! हमारी गिलहरियों के हाथ-पैर हैं!

मिन्टू ने कहा- सच? गिलहरी के हाथ-पैर होते हैं?

साइना ने बड़ों की तरह कहा— देख नहीं रहे, गुट्टी कैसे अपने चार पैरों पर भाग रही है! दौड़ते समय चारों, पैर बन जाते हैं! और गुट्टू कैसे अपने दोनों हाथों से खा रहा है! खाते समय सामने के दोनों पैर हाथ बन जाते हैं। ही ही!

- मैंने भी ऐसा देखा है। चिड़ियाखाना में। गिबन चिंपाजी।

- हनुमान को नहीं देखा है? वह भी ऐसा ही होता है।

- नहीं, हनुमान से भी अधिक सीधा चिंपाजी खड़ा हो सकता है।

प्राय: मनुष्य की तरह ही। जो समने की ओर थोड़ा झुककर खड़े होते हैं, उनकी तरह ही। हाथ पर रख कर खाना खाते हैं। ठीक जैसे कोई मनुष्य हों!

-दो पैरों पर चलते हैं?

–नहीं! चलते समय दोनों हाथ सामने के दोनों पैर हो जाते हैं।

–तो भी सुविधाजनक है।

मिन्टू समझ नहीं पाया। कहा–किसकी सुविधा? कैसी सुविधा?

साइना ने कहा– चिंपाजियों की सुविधा। कुत्ते, बकरियाँ कोई भी चीज हाथ से पकड़कर नहीं खा सकते। शरीर पर कुछ काटता रहे पर उसे छुड़ा नहीं सकते। शरीर को झाड़ने लगते हैं।

अब मिन्टू ने समझा। कहा– दो पैर और दो हाथ होने के बहुत फायदे हैं। चिंपाजी पेड़ पर चढ़ सकते हैं। हाथों से पेड़ का फल तोड़कर, उसे फेंककर मार भी सकते हैं।

साइना दूसरे दिन मिन्टू को अपने स्कूल लेकर गई। मैडम से कहा– मेरा ममेरा भाई है। कोलकाता में रहता है। जानती हैं मैडम, इसने चिड़ियाघर में चिंपाजी देखा है।

मैडम ने कहा– वाह! तब तो आज हमलोग मिन्टू से चिंपाजी की कहानी सुनें। चिड़ियाखाना के बारे में भी सुनेंगे।

सबने चिंपाजी और चिड़ियाखाने की कहानी सुनी। साइना वाली गिलहरियों की भी बातें हुईं। मैडम ने कहा– हाथ रहने से कितनी सुविधा है, इसे जाना गया।

बातें करें मिलकर

रखेंगे लिखकर

आदमी के पास चार पैर के बदले दो पैर और दो हाथ हैं। इससे क्या क्या सुविधाएँ हैं? नीचे लिखो :

| | |
|---|---|
| खेलना | |
| खाना | |
| खेती करना | |
| मछली पकड़ना | |
| रसोई बनाना | |
| | |

# मनुष्यों जैसे और भी जो हैं

सुबह नींद से जागते ही हीरामति ने एक नीली चिड़िया देखी। खिड़की के बाहर पेड़ पर बैठी हुई थी। उसने चिड़िया को बुलाया। उसकी इच्छा थी कि चिड़िया उसकी खिड़की पर आकर बैठ जाए! मगर चिड़िया ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। उड़ गई। हीरामति ने सोचा, हमारे जिस तरह हाथ होते हैं, वैसे ही चिड़ियों के डैने होते हैं। वे भी अपने डैनों को पसारकर हवा में तैरती हैं। उसने मन ही मन तय किया कि आज दोस्तों को चिड़िया की बात बताएगी।

मछलियों को देखकर टिकाई सोचता है, उन्हें कितना मजा है! जब तक मन हो पानी में रह सकती हैं। कैसे रह सकती है? उनके पास क्या है? जो हमारे पास क्यों नहीं? मेरे पास भी यदि वह रहता! मैं भी केवल तैरते रहता।

स्कूल जाते समय वे लोग यही बातचीत कर रहे थे। मनुष्य के पास क्या-क्या है? दूसरे जीव-जंतुओं के पास क्या-क्या है?

लावण्य ने कहा– मनुष्य चिड़िया की तरह उड़ नहीं सकता। मगर उड़ने के लिए उसने हवाई जहाज बनाया है।
इस्माइल ने कहा– जानते हो, मनुष्य ने पनडुब्बी भी बनाई है। पानी के बहुत नीचे से दूर तक जा सकती है।
साइना ने कहा– मनुष्य बहुत बुद्धिमान होता है। मनुष्य के साथ दूसरे जीव-जंतुओं का असली अन्तर यही तो है।
डमरू ने कहा– हनुमान भी बुद्धिमान होता है। बहुत कुछ याद रखता है।
साइना ने कहा– चिंपाजी की बुद्धि और भी ज्यादा हो सकती है।
सारी बातें सुनकर मैडम ने कहा– वाह! तुमलोगों ने काफी सोचा है! जिन्हें पहचानते हो, उनकी बातें ही सोचो। कौवा, अन्य चिड़िया, बन्दर, हाथी, कुत्ता, बिल्ली में से कौन ज्यादा बुद्धिमान है? किसे कौन-कौन सी सुविधाएँ हैं?

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

जिनकी बातें कीं, क्या तुमने सोचा कि उनके साथ मनुष्य का कहाँ-कहाँ मेल है, उन्हें नीचे लिखो :

| जिनके साथ मनुष्य का सबसे ज्यादा मेल है– उनका नाम | किन-किन बातों में वह मनुष्य जैसा है? | किन-किन बातों में उनके साथ मनुष्य का कुछ-कुछ मेल है? |
|---|---|---|
| चिंपाजी | | |
| गिबन | | |
| गोरिल्ला | | |
| ओरांग ओटांग | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# जीभ से पानी गिरने का रहस्य

दोपहर का भोजन हो चुका है। चार दोस्त मैदान में खड़े होकर बातें कर रहे हैं। इतु एक मुट्ठी पके बेर लाई है। पीले रंग के। कोई-कोई हल्के लाल रंग का भी है। गोल-गोल। बेर देखते ही मौमिता की जीभ में पानी भर आया। सोचा, कच्चे आम की फाँक देखकर भी जीभ में पानी भर आता है। इमली देखने पर भी आता है। लोगों को फुचका खाते देखकर मुँह में पानी आता है। फुचका के लिए, न कि इमली वाली पानी के खट्टेपन को सोचकर? किसके चलते जीभ में पानी आता है?

शिक्षिका कक्षा में आईं। इतु ने कहा- मैडम, बेर खाएँगी?

शिक्षिका ने कहा— मित्रों को दिया है?

इतु के जवाब देने से पहले ही मौमिता ने कहा- अच्छा मैडम, खट्टी चीजें देखने से ही जीभ में पानी आता है?

मैडम जवाब सोच रही थीं। तभी तपन ने कहा- मैडम, रसगुल्ला देखने से भी मेरी जीभ में पानी आता है।

डमरू ने कहा- मुझे तो मांस देखने से भी जीभ में पानी आता है।

शिक्षिका ने पूछा- झाल-नमकीन चनाचूर देखने से?

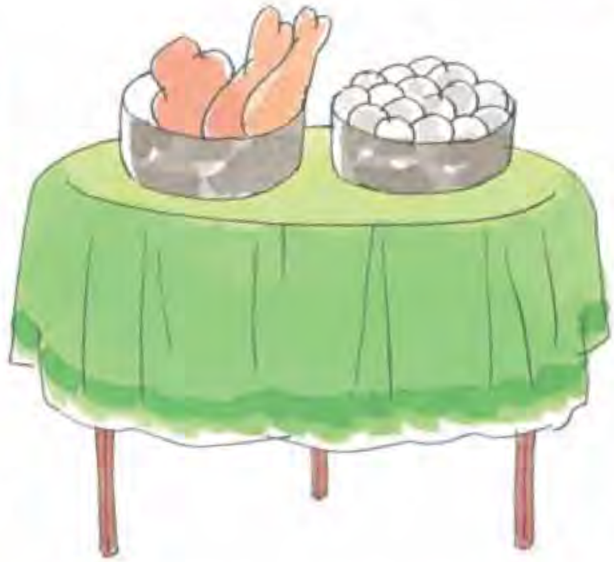

एमिलि ने कहा- उससे भी आता है।

मैडम ने हँसते हुए कहा- जीभ के इस पानी को वास्तव में मुँह का लार कहते हैं। वह भोजन पचाने के काम आता है। कुछ देर बाद-बाद यह शरीर भोजन माँगता है। तभी खाना देखते ही जीभ में पानी आता है। मनपसन्द खाने की चीज देखने से यह ज्यादा होता है।

**इसके बाद थोड़ा रुककर बोलीं—** कड़वी चीजें देखकर किसी की जीभ में पानी आता है?

कालू ने कहा- नीम-बैंगन की भुजिया देखने से भी मेरी जीभ में पानी आ जाता है।

— अच्छी बात है। तो किन-किन स्वादों वाले खाने की बात हुई?

-पीकू ने कहा- खट्टा, मीठा, तीखा या झाल, नमकीन, कड़वा।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

पाँच प्रकार के स्वादों की बातें हुईं। इन पाँच स्वादों वाली कौन-कौन सी चीजें तुमने खाई हैं? उन्हें नीचे लिखो:

| खट्टा | मीठा | तीखा/झाल | नमकीन | कड़वा |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

# साग-पात की खोज-खबर

बैशाखी के दादाजी की माँ बगान में घूम-घूम कर नाना प्रकार के साग उखाड़ती हैं। बेले साग, ब्राह्मी का साग, पालक का साग, चना साग, मटर साग, हेलेंचा एवं और भी कई प्रकार के साग। वे स्वयं काटती भी हैं।

घर में लौकी का साग अथवा पूई साग पहले से ही बना है। फिर भी ब्राह्मी साग चुनकर, धोकर बैशाखी की दादी से कहती हैं- बहू, इसे बनाकर। बुड़ि को देना।

बैशाखी को वे बुड़ि के नाम से बुलाती हैं। बैशाखी भी उन्हें बड़ीदादी माँ कहती है। खाने जब बैठी तो बैशाखी ने पूछा- यह कौन-सा साग है?

बड़ीदादी माँ ने कहा- इसका नाम ब्राह्मी साग है। खाओ, इसे खाने से उपकार होता है।

बैशाखी ने पूछा- अच्छा, कौन साग है और कौन घास है, कैसे पहचानती हो?

बड़ीदादी माँ ने कहा- अच्छी तरह देखने से सब समझ में आता है। मेरे साथ एक महीना बगान में घूमो तो जान जाओगी कि कौन साग है और कौन घास।

बैशाखी ने सोचा, कौन-सी चीज खाने की है और कौन-सी नहीं- यह कैसे समझा जाए? स्कूल जाकर उसने शिक्षिका से जानना चाहा।

शिक्षिका ने कहा- जिसे खाकर हजम किया जा सकता है, वह खाने की चीज यानी खाद्य है। मनुष्य घास खा ले तो हजम नहीं होगा। इसीलिए घास मनुष्य का भोजन नहीं है।



खाने योग्य विभिन्न उद्भिजों के नाम

मंगल ने पूछा- मैडम, गाय-बैल घास हजम कर सकते हैं। क्या इसीलिए घास गाय-बैलों का खाद्य है?

— ठीक कहा। कुछ चीजें हैं, जिनका एक अंश मनुष्य के लिए खाद्य है, दूसरा अंश मनुष्य का खाद्य नहीं है, लेकिन जाने-पहचाने जीव-जन्तुओं का खाद्य है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

कुछ चीजों का एक अंश। मनुष्य का खाद्य है, दूसरा अंश पहचाने जीव-जंतुओं का खाद्य है। नीचे लिखकर बताओ :

| जो अंश मनुष्य खाता है | मनुष्य का खाद्य नहीं है मगर पालतू पशुओं के लिए वह अंश खाद्य है |
|---|---|
| आम और लीची का गुदा, रस/कटहल का कोआ, बीज | आम, लीची और कटहल का छिलका गाय बकरियों का खाद्य है। |
| | मछली की अँतरी-काँटा (कुत्ते-बिल्लियों, कौवों का खाद्य पदार्थ है) |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

# खाद्य पदार्थों के गुण-अवगुण

घर लौटकर सुहास ने सोचा, भोजन तो हमेशा हजम नहीं होता। पेट खराब हो जाता है। उल्टी होती है। दूसरे दिन स्कूल में उसने यही चर्चा की।

शिक्षिका ने कहा- ऐसा दो कारणों से हो सकता है। ज्यादा खा लेने से, और खराब हो चुके भोजन को खाने से।

टिकलू ने कहा- भोजन खराब कैसे होता है?

-अत्यधिक गर्मी से भोजन सड़ जाता है। बासी हो जाने से भी भीतर से खराब हो जाता है। कभी-कभी फफूँदों के कारण भी ऐसा होता है।

तुताई ने कहा- ज्यादा तीखा भोजन से भी हो सकता है?

सानिया ने ठट्ठा किया - ओह! तुम्हें तीखा सहन नहीं होता क्या?

यह सुनकर शिक्षिका को हँसी आ गई। बैशाखी ने कहा, मैडम, बासी, सड़ा भोजन अगर खराब खाद्य हैं, तो घास को क्या कहेंगे? अखाद्य?

-ठीक। घास मनुष्यों के लिए अखाद्य है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

मनुष्यों के खाद्य और अखाद्य वस्तुओं की तालिका है। इस तालिका में, और भी खाद्य और अखाद्य वस्तुओं के नाम लिखो :

| खाद्य | अखाद्य |
|---|---|
| भात, रोटी ........................................... | पुआल, ........................................... |
| सरसों, ........................................... | सरसों का खोल, ........................................... |
| फूलगोभी, पालक साग, ................. | ........................................... |
| ओल, कच्चू ................................... | ........................................... |
| ईख, ताल ........................................... | ........................................... |
| आम, नारंगी ........................................... | ........................................... |



खाने योग्य विभिन्न उद्भिजों के नाम

# विभिन्न प्रकार की साग–सब्जी

पेड़–पौधों के पत्ते, लता, डंठल, फूल, कली, फल, बीज –यह सब हम खाते हैं। धान का छिलका उतारो, तो चावल हो गया। उबालो, तो भात। गेहूँ के बीज को पीस कर आटा। पानी से सानकर, बेलकर सेंक लो, तो रोटी। मगर फूलगोभी क्या है? फूल है या कली? समीर ने कहा– कली। खिल जाए तो अच्छी तरह सीझती नहीं है। रेवा ने कहा– इसका मतलब है कि प्याज का डण्ठल फूल का डण्ठल नहीं है बल्कि कली का डण्ठल है।

सम्पत ने घर में प्याज देखकर सोचा, प्याज आखिर है क्या?

रिम्पा ने सोचा, सेम का हर अंश खाया जाता है। मगर हम मटर के केवल बीज या दानों को खाते हैं। छिलका फेंक देते हैं। गाय छिलका भी खाती है।

करैले के बीज रीना को बिल्कुल पसन्द नहीं है। बीज को निकालकर खाती है। मगर परवल के बीज अगर नर्म हो, तो खा लेती है। रीना सोचने लगी– करैला, परवल आदि के बीज खाद्य हैं या अखाद्य?

दूसरे दिन शिक्षिका से सबने अपनी–अपनी बातें कहीं। सब सुनकर शिक्षिका ने कहा– प्याज है पौधे का तना! धान, गेहूँ, दाल इनके बीज ही खाद्य हैं। सेम और मटर के भी।

सम्पत ने कहा– सेम, बरबट्टी, बीन अगर हरा रहे, तब तो उसे पूरा ही खाया जा सकता है?

–तुमने ठीक कहते हो। मगर करैला, परवल, लौकी आदि के बीज अधिक पुष्ट हो जाए तो खाने योग्य नहीं रहता। हजम भी नहीं होता है। हरे बीज अवश्य ही खाये जा सकते हैं।

आयशा ने कहा– मैडम, सहिजान का डण्ठल पर डण्ठल नहीं, सहिजन का फल है। इसके भीतर भी बीज होते हैं। पक जाए तो अखाद्य हैं!

–ठीक कहा। साग के पौधे के बड़े हो जाने पर, उसका डण्ठल भी हम खाते हैं। लाल साग का डण्ठल, पूई डाँटा। ये सभी साग के पौधे का तना ही है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

किस पेड़/पौधे का कौन-सा भाग हमारा खाद्य है? उन्हें नीचे लिखो :

| पत्ता | डण्ठल/तना | अग्रभाग/ फुनगी | कली | फूल | फल | बीज |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | पान | | | | |
| | | प्याज का डण्ठल | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |

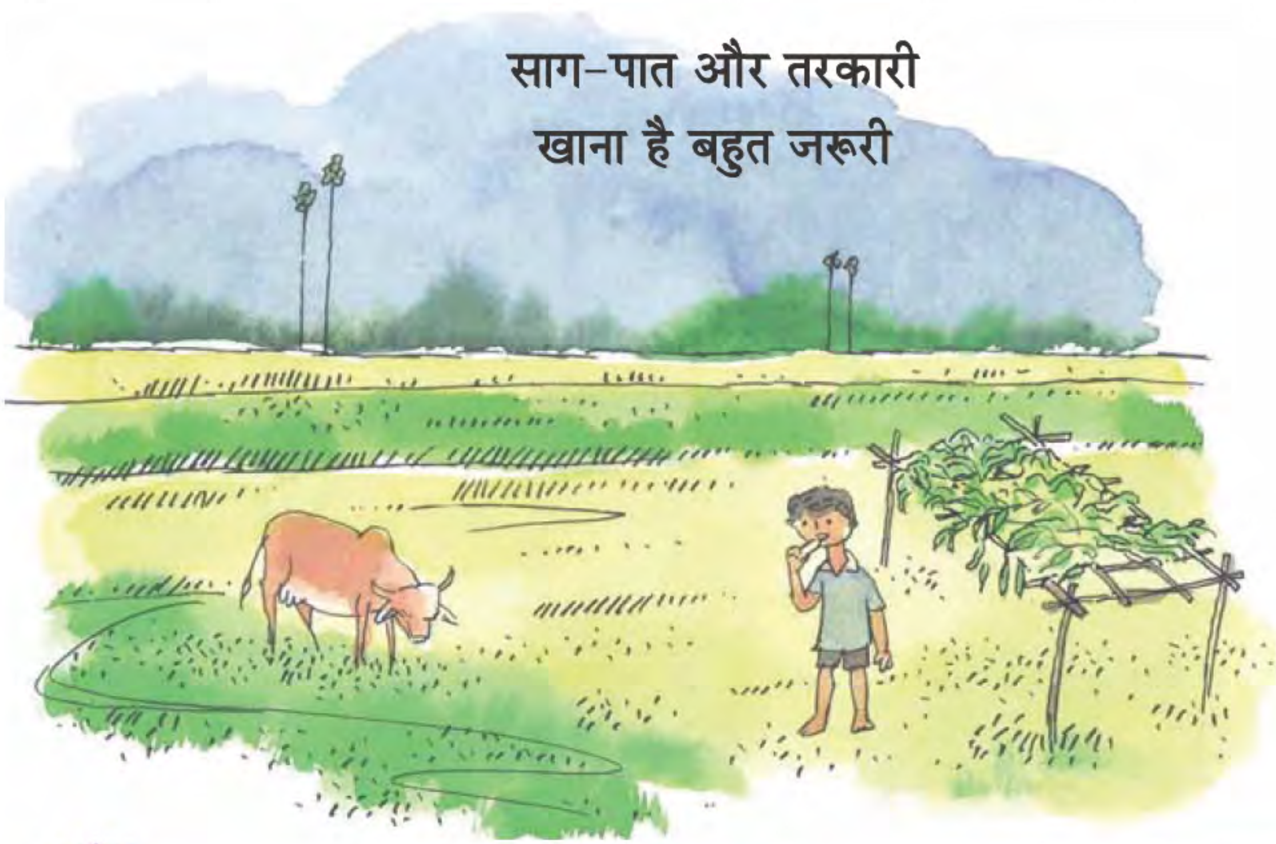

तुताई और उसके घर के लोग कच्चा खीरा, टमाटर, प्याज, गाजर का सलाद खाते हैं। एकदिन तुताई अपने घर के पास सब्जी के बगान में टहल रहा था। भिंडी, झिंगा फले हुए थे।

अचानक उसने सोचा, भिंडी क्या कच्ची खायी जाती है? खाकर देखता हूँ! तीखा तो है नहीं! एक भिंडी तोड़कर उसने खा लिया। खराब तो नहीं लगा। फिर भी थोड़ा डर गया। हजम होगा न? कच्ची भिंडी क्या हमारे खाने योग्य है? स्कूल पहुँचकर उसने टिपाई को सब बताया। टिपाई ने हँसते हुए कहा- मैंने कितना खाया है! नरम भिंडी, ककड़ी खा कर देखना। सब हजम हो जाता है।

शिक्षिका के आने के बाद तुताई ने पूछा- मैडम, खीरे की तरह और क्या-क्या है, जिसे हम कच्चा खा सकते हैं?

शिक्षिका ने कहा— बहुत तरह के अनाज हैं, जिन्हें कच्चा खाया जा सकता है। एक समय था, जब लोग रसोई बनाना नहीं जानने थे। सब कच्चा ही खाते थे। तुमलोग भी खा सकते हो। मगर किसी अनाज को कच्चा खाने से पहले उसे अच्छी तरह धो लेना।

फातिमा ने पूछा- मैडम, सब्जी और अनाज क्या एक ही बात है?

— कोई सब्जी कहता है। कोई अनाज कहता है। पकाने के बाद तरकारी कहते हैं। बहुत से लोग कच्ची सब्जी को भी तरकारी कहते हैं। कुछ अनाजों के कई नाम होते हैं। जैसे पटल और परवल एक ही अनाज है।

तुताई ने कहा- जैसे बोरो और बरबट्टी एक ही अनाज है।

मंगल ने पूछा- मैडम, आलू भी क्या अनाज है?

— हाँ। चुकन्दर, गाजर भी है। एक वाक्य में कहें तो मिट्टी के नीचे पैदा होने वाली सारी सब्जियाँ ही अनाज हैं।

सगीना ने पूछा- मैडम, ओल, कच्चू भी क्या अनाज हैं?

— हाँ, मगर ओल, कच्चू को कच्चा मत खा लेना।

मौमिता ने कहा- मैडम, मुझे सब्जी खाना बिल्कुल पसन्द नहीं है।

— यह अच्छी बात नहीं है। साग-सब्जी से शरीर को बहुत फायदा है। बीमारी की दवा है। बीमारी से बचाता है। घर में जब भी साग-सब्जी बने, जरूर खाना।

जॉन ने पूछा- मैडम, किस साग में क्या फायदा है?

बैशाखी ने चटपट जवाब दिया- मैं जानती हूँ। ब्राह्मी साग खाने से उपकार होता है। मेरी बड़ी दादी माँ ने बताया है।

— बहुत से लोग ऐसा कहते हैं। तलकर खाने से अच्छा लगता है।

कालू ने पूछा- और नीम की पत्ती का फायदा क्या है?

शिक्षिका ने हँसते हुए कहा— नीम की पत्ती से फोड़े-फुन्सी नहीं होते।

रमजान ने कहा- और अनाज? किस अनाज से क्या उपकार होता है?

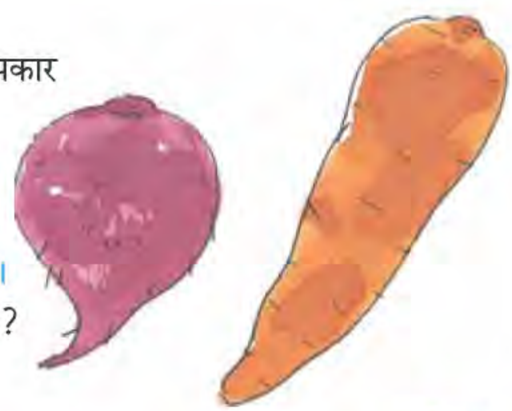

— कच्चे केले से खून की कमी नहीं होती। पपिता पचाने में या हजम होने में सहायता करता है। शलगम-गाजर जैसी रंगीन सब्जियाँ हमें कई गम्भीर रोगों से बचाती हैं।

दिलीप ने पूछा- मैडम, केले का फूल खाने से क्या लाभ होता है?

— तुम्हें केले का फूल पसन्द है? इससे भी खून की कमी की समस्या दूर होती है। अब देखो, कितने तरह के साग हैं, कितने तरह के अनाज हैं? इनसे कई तरह की दवाइयाँ भी बनती हैं। सब क्या मुझे मालूम है? इन सब के बारे में अपने घर के बड़ों से पता करना। उसके बाद स्कूल आकर आपस में भी बातचीत करना।

रीता ने कहा- हमारे मुहल्ले के नरेन दादा जी तो कविराज हैं। सभी को साग-सब्जियाँ खाने के लिए कहते हैं। उनसे पूछूँगी?

–तब तो और भी अच्छा होगा। अपने परिचित डाक्टरों के साथ भी बातचीत कर सकते हो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

नाना प्रकार के साग, पात, अनाजों के नाम और उन्हें खाने से कौन से फायदे होते हैं, नीचे लिखो :

| साग-पात-अनाजों के नाम | खाने से फायदे हैं |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

# फल खाने के फायदे

पानी और फल दोनों शरीर को चाहिए। पाचन में सहायक है पानी। कभी-कभी हमलोग खाद्य के साथ कुछ अखाद्य भी खा लेते हैं। उस अखाद्य को शरीर से बाहर निकालने में पानी ही सहायक होता है। इसीलिए दिन भर में कम से कम दो से तीन लीटर पानी पीना ही चाहिए।

नाना प्रकार के फल शरीर के लिए जरूरी हैं। फल के गुदा में बहुत कुछ होता है। यह शरीर के लिए बेहद उपयोगी है। ये जरूरी चीजें दूसरे किसी खाद्य पदार्थ से नहीं मिल सकतीं।

इतना सुनते ही इमरान ने कहा- मैडम, बीमार पड़ने पर, माँ फल खाने को देती हैं। मैडम ने कहा-ज्यादातर फल सहजता से हजम हो जाते हैं। हम जब बीमार पड़ते हैं तब शरीर के सारे अंग-प्रत्यंग शिथिल हो जाते हैं। तब यह शरीर हर तरह के भाजन नहीं पचा पाता है। इसीलिए फल खाया जाता है। रोग को दूर रखने के लिए भी फल खाना जरूरी है। हमारे खाने में अगर फल की मात्रा ज्यादा हो, तो मोटा होने की सम्भावना नहीं रहती।

**मीना ने कहा- फल खाने में भी अच्छा लगता है। फल में पानी की मात्रा भी बहुत होती है।**

-बहुत से लोग पानी पीना नहीं चाहते। फल खाने से उनके शरीर को भी पानी मिल जाता है।

रेहाना ने कहा- एक फल है, जिसे खा लेने से पानी की जरूरत ही नहीं है।

रासू ने कहा- डाभ की बात कर रहे हो? मगर डाभ क्या, फल है? डाभ में तो केवल पानी होता है!

— बहुतों का यही कहना है। किन्तु मुझे लगता है कि इसमें और भी कुछ होता है। नहीं तो स्वाद में अलग कैसे होता? पेट की बीमारी में डाभ का पानी बहुत लाभदायक है। कुछ देर बाद फिर बोलीं- डाभ पेड़ पर होता है। फल तो होते ही हैं। पक जाए तो नारियल बन जाता है। बीज में सार होता है। वही हमलोग खाते हैं। कुछ फलों में पानी की मात्रा अधिक होती है। डाभ उनमें से एक है।

रासू ने कहा- मगर खजूर का रस क्या हमें फल से प्राप्त होता है? वह तो पेड़ का रस होता है?

शिक्षिका ने कहा– ठीक कहते हो। फिर कुछ सोचकर बोलीं– पेड़ के फूल से फल होता है। फल अपने आवरण में होता है। मतलब छिलका होता है। मगर पेड़ का रस भी हमारा खाद्य है।

पराग ने कहा– मैडम, डाभ तो सालों भर मिलता है। खजूर का रस तो केवल जाड़े में ही मिलता है।

— हाँ। कुछ फल साल भर मिलते हैं, कुछ गर्मी में, कुछ केवल जाड़े में। कुछ चीजें हैं, जो कच्ची हैं तो अनाज हैं। पक जाएँ तो फल।

कर्मा ने कहा– जानता हूँ मैडम। पपीता, ककड़ी। खीरा के साथ उलटा है। कच्चा रहे तो फल। पक जाए, तो माँ तरकारी बना लेती हैं।

श्रावणी ने कहा– आम के बारे में नहीं कहा? कच्चे आम डालकर दाल–सब्जी नहीं खाया है?

रासू ने कहा– हमलोग लिख लें। कौन किस मौसम का है? किसे कच्चे में सब्जी और पक जाए तो फल कहते हैं?

—जरूर लिखोगे। किसका स्वाद कैसा है, यह भी लिखो। किससे क्या फायदा है, इसे भी लिखो।

हेमन्ती ने पूछा– पहले अपने घर के बड़ों से, उसके बाद दोस्तों से बातें कर लें तो?

हाँ! कविराज दादू की बात मत भूलना। उनके साथ भी बातें कर लेना।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

कौन–सा फल किस ऋतु में होता है? कच्चा खाते हैं या पका? खाने से क्या लाभ होता है? नीचे लिखो :

| नाम | किस मौसम में होता है? | अनाज किस स्थिति में है? | फल किस स्थिति में है? | खाने से क्या लाभ है? |
|---|---|---|---|---|
| आम | बसन्त, गरमी, वर्षा | कच्चा | कच्चा, पक्का दोनों में | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

# कुछ फल जो खाने योग्य नहीं हैं

सालों पहले की बात है। केतकी के दादा जी की माँ तब छोटी थीं। मुहल्ले के सिधु सोरेन मधु लाने जंगल गये थे। मधु के साथ-साथ कुछ अपरिचित फल भी लाए थे। दिखने में जामुन जैसा था। इससे पहले किसी ने नहीं देखा था। सिधु ने स्वयं नहीं खाया। मगर सिधु की माँ बेटे को भात देकर स्वयं वह फल खाने बैठ गई थीं। उसके बाद ही उनकेपेट में दर्द शुरू हो गया था। शहर के अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था।

यह बात सबको मालूम है। बड़ी दादी माँ से केतकी ने कई बार सुना है।

इसीलिए उसने कहा- मैडम, विषाक्त फल भी होता है न?

नरेन ने पूछा- विष क्या है?

— जिसे अल्प मात्रा में भी खाने से शरीर खराब हो जाता है। हाथ-पैर सुन्न हो जाते हैं। ज्यादा खा लिया जाए तो मनुष्य की मृत्यु भी हो सकती है।

हसन ने पूछा-आम का फल विष नहीं है, ये कैसे पता चला?

—मनुष्य ने खाकर देखा है। विषाक्त फल खाकर मनुष्य अस्वस्थ हुआ है। किसी-किसी की मृत्यु भी हुई है। पशु-पक्षियों को कई तरह के फलों को खाकर मरते देखा है। इसे देखकर ही मनुष्य ने सीखा है। फिर उन फलों को इन्सानों ने नहीं खाया।

दयाल ने कहा- इस तरह तो बहुत लोग मरे होंगे।

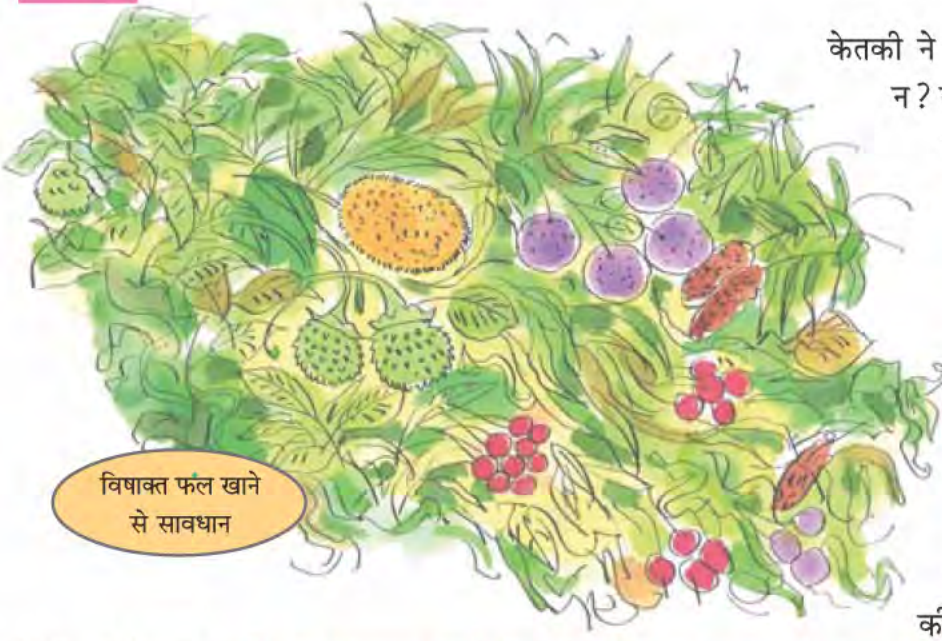


केतकी ने कहा–बहुत पहले की ही बात है न? बड़ी दादी माँ जब छोटी होंगी, तब की।

— उससे भी पहले की। तुम्हारी बड़ी दादी माँ सत्तर–अस्सी साल पहले छोटी रही होंगी। तब, लोग विषाक्त फलों के बारे में जानते थे। इन्सानों ने फलों की पहचान बहुत पहले ही कर ली है। तब कोई खेती नहीं करता था। खाना बनाना नहीं जानता था।

यह बात सुनकर केतकी ने सिधु की माँ की कहानी सुनाई।

शिक्षिका ने कहा— दो–एक विषाक्त फलों से अभी भी लोग अनजान हो सकते हैं। इसीलिए अपरिचित फलों को नहीं खाना चाहिए।

अमीना ने कहा – कौन–कौन से फल विषाक्त हैं?

— कुछ विषाक्त फलों के आवरण पर काँटे होते हैं। बिना काँटे वाले कुछ फल भी विषाक्त होते हैं। इसके बारे में अपने घर के बड़ों से पूछना। और भी कौन–कौन से फल विषाक्त होते हैं– ये भी जानना।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुमने किन–किन विषाक्त फलों के बारे में जाना? नीचे लिखो, चित्र बनाओ/ किस–किस फल के ऊपर काँटे हैं, यह भी लिखो :

| विषाक्त फलों के नाम और चित्र | काँटे हैं या नहीं? | विषाक्त फलों के नाम और चित्र | काँटे हैं या नहीं? |
|---|---|---|---|
| | | | |

# प्राणियों से प्राप्त होनेवाले खाद्य

रमेश को अंडा खाना बहुत पसन्द है। उबला अंडा। तला हुआ अंडा। इन चीजों को रमेश बहुत पसन्द करता है। मछली की तरह काँटे नहीं चुनने पड़ते। मांस की तरह दाँतों में नहीं फँसता। बहुत लोग इसीलिए अंडे खाना पसन्द करते हैं। दोपहर के भोजन के साथ जिस दिन अंडे मिल जाएँ, उस दिन बड़ा मजा आता है।

मगर लुत्फा को मछली ज्यादा पसन्द है। रेहू, नैनी, टेंगरा, पोठी, हिलसा आदि मछलियाँ उसे पसन्द हैं। लुत्फा के चाचा तालाब में मछली पालन का काम करते हैं। बारिश शुरू होते ही मछलियों के बच्चे तालाब में डाल देते हैं। नियमित रूप से चारा डालते हैं। तीन महीने के बाद जाल लेकर तालाब से मछली पकड़ना शुरू करते हैं।

डमरू को अगर मांस मिल जाए, तो और कुछ नहीं चाहिए। तापस को बचपन से ही आदत है, खाने के अन्त में दूध के साथ भात खाना। अकबर को हमेशा सर्दी-खाँसी होती रहती है। उसकी माँ इसीलिए उसे रोज सुबह मधु खाने को देती है।

सारी बातें सुनकर शिक्षिका ने कहा- नाना प्रकार के जन्तुओं से हमें ये खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। इसीलिए इन्हें 'प्राणिज खाद्य' कहते हैं।

खाने योग्य विभिन्न उद्भिजों के नाम

मछली पालन

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

किन प्राणियों से विभिन्न प्रकार के प्राणिज खाद्य प्राप्त होते हैं? इन प्राणियों का पालन कैसे होता है? नीचे लिखो :

| खाद्यों के नाम | अंडा | मछली | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किन प्राणियों से प्राप्त होते हैं | मुर्गी, बत्तख | | | | |
| इन प्राणियों का पालन कहाँ किया जाता है? | | | | | |
| इन प्राणियों के भोजन क्या क्या हैं? | | | | | |

## दूध, दही, छेना

चिनू बचपन से ही बहुत दुबला-पतला था। तब से ही उसकी माँ उसे रोज छेना खिलाती है। रिंकू को दही पसन्द है। भोज का मजा ही है चीनी के साथ जमाया हुआ दही, रसगुल्ला और सन्देश। रिंकू की माँ दूध में कॉफी मिलाकर पीती हैं। उसका भाई पाम क्रिम बिस्कुट, केक और चॉकलेट खाना पसन्द करता है। आइसक्रीम या मलाई बर्फ मिल जाए तो भी खुश हो जाता है।



प्राणियों से प्राप्त खाद्यों के नाम

उन लोगों की बातें सुनकर मैडम ने कहा- अभी जिन-जिन चीजों के नाम तुमलोगों ने लिये, वे सब दूध से बनती हैं। दूध के साथ कुछ-कुछ मिलाना होता है। आइसक्रीम बनाने के लिए दूध को ठण्डा करना पड़ता है।

रेहाना नो कहा- छेना बनाने के लिए दूध को गरम करना पड़ता है। आइसक्रीम बनाने के लिए ठण्डा करना पड़ता है।

## चटपटा भोजन

केक-चॉकलेट की तरह और भी सामान दुकान में मिलते हैं। चनाचूर, नाना प्रकार के चिप्स, नमकीन आदि। ये सामान खरीदकर ही खाये जाते हैं। इन्हें मुखरोचक भी कहते हैं।

मगर तमिम का मन प्रसन्न नहीं रहता। चनाचूर मुँह में लिया नहीं कि उसके नाना उसे पुकारने लगते हैं। कहते हैं- ये बहुत पहले का तला हुआ है। पुराने तेल की बद्बू है। ये सब विष के समान हैं। इससे अच्छा है कि घर में ही चप-बैगनी तली जाए। मूढ़ी के साथ खाओ।

इतना सुनकर कक्षा में सभी मुश्किल में पड़ गये। पिन्टू ने शिक्षिका से जानना चाहा- क्या चनाचूर बहुत दिन पहले का तला हुआ होता है?

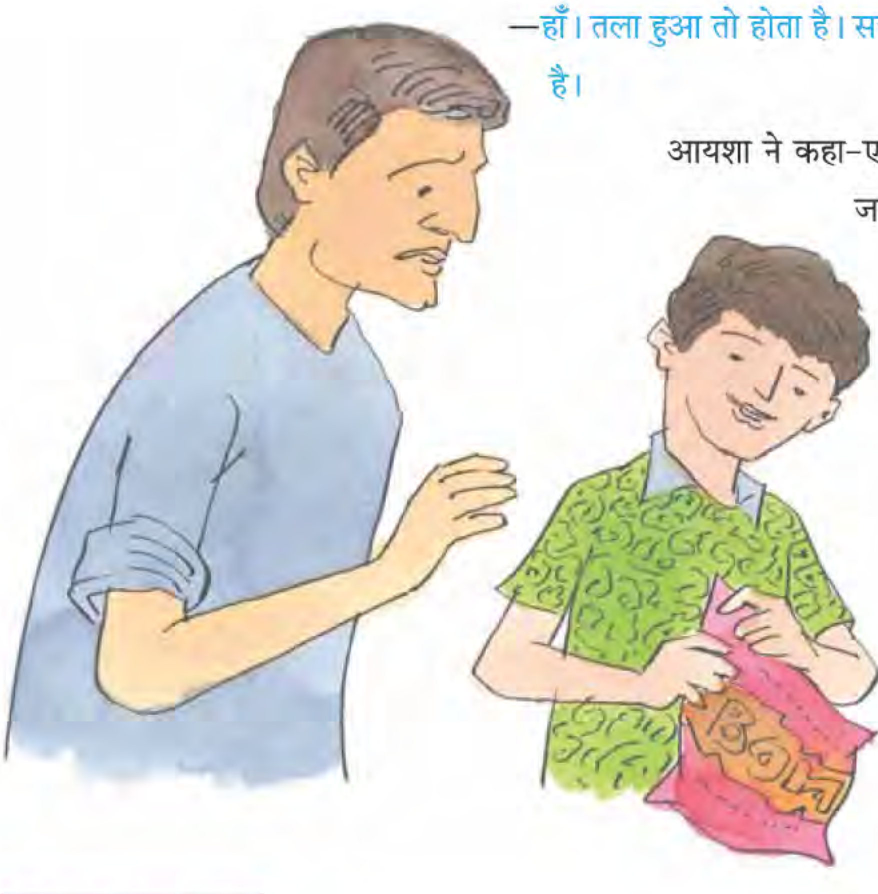

—हाँ। तला हुआ तो होता है। सच है कि कुछ दिन पहले का ही होता है।

आयशा ने कहा-एक पैकेट चनाचूर कुछ दिन तो चल जाता ही है।

— वे लोग इसमें ऐसी कोई चीज मिलाते हैं, जिससे कुछ दिनों तक अच्छा रहता है।

केतकी ने कहा -घर में गरम-गरम तेल में पीठा भी तला जाता है। वह भी कई दिनों तक अच्छा रहता है।

शिक्षिका ने कहा- ठीक कहते हो। दुकानों में नमकीन, चनाचूर आलू की भुजिया के पैकेट मिलते हैं। मैदा, बेसन, दाल से ये सामान

तैयार करके पैकेट में डाले जाते हैं। उसके बाद बेचा जाता है। दो-तीन महीने तक तो ठीक रहता है। पैकेट पर तारीख लिखी होती है कि कितने दिनों तक खाने योग्य है? ऐसे सामान खरीदते समय तारीख अवश्य देख लेनी चाहिए।

लक्ष्मीमणि ने पूछा- पावरोटी भी क्या तल कर बनायी जाती है?

— हाँ। मगर यह तेल में तली नहीं होती। कुछ अलग से तैयार की जाती है। आग पर सेंक कर। दो-तीन दिन ही खाने योग्य रहती है। फिर कुछ रुककर बोली- पहले से ही खाने योग्य बनाकर और भी बहुत कसे सामान पैकेट बनाकर बेचे जाते हैं। इन्हें तैयार भोजन कहते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

पैकेट में तैयार नाना प्रकार के खाद्यों के नाम लिखो। कौन किस से तैयार होता है, यह भी लिखो :

| खाद्यों के प्रकार | खाद्यों के नाम | किस-किस चीज से बनता है |
|---|---|---|
| मिठाई | | |
| भुजिया और नमकीन | | |
| खट्टा | | |
| खट्टा-मीठा तीखा | | |

# चूल्हा और आग

घर में रोज खाना बनता है। किन्तु मैडम बता रही थीं कि एक समय था जब इन्सान खाना बनाना नहीं जानता था। कमल ने पूछा–मनुष्य तब खाता कैसे था?

दीपू ने पूछा– बैगन का भर्ता खाए हो न? ऐसे ही जलाकर खाता था।

आयूब ने कहा — जो चीज पकाकर नहीं खाई जाती थी, वह नहीं खाते थे?

केतकी ने कहा — क्यों नहीं खाते थे, कच्चा खाते थे।

हीरा ने कहा– मगर बनाना क्यों नहीं जानता था? कड़ाही नहीं थी?

केतकी ने कहा – क्या चूल्हा नहीं था? मैं जानती हूँ, बड़ी दादी अम्मा जब छोटी थी, तब उनके यहाँ गैस का चूल्हा नहीं था।

फातिमा ने कहा– गैस के चूल्हे के बिना खाना नहीं बन सकता? हमारे घर में तो अभी भी गैस का चूल्हा नहीं है? लकड़ी का चूल्हा, कोयले की आँच अथवा केरोसिन स्टोव से खाना बनता है। इतना सुनकर शिक्षिका हँसती हुई बोलीं– लोग पहले आग जलाना जानते थे या नहीं यह तो सोचो? तुम्हारे घर में कैसे आग जलायी जाती है?

डमरू ने कहा– दियासलाई की तीली से। दियासलाई के डब्बे पर तीली में लगे बारूद के घिसते ही आग जल जाती है।

–डिब्बे पर क्या होता है, देखा है?

डमरू ने कहा–देखा है। डिब्बे पर भी बारूद लगा होता है। जिधर बारूद नही होता उधर घिसने से नहीं जलेगा।

–वाह! तुमने तो अच्छी तरह देखा है। और किस तरह आग जलाई जाती है?

टिपाई ने साधारण गैस लाइटर की बात कही। फातिमा ने गैस का चूल्हा जलानेवाले लाइटर के बारे में बताया। सुजान ने आग से आग जलाने की बात की।

इसमाइल ने कहा – रसोई बनाना सहज काम नहीं है। आग–चूल्हा, बर्तन, खाने–पीने के सामान –सबकी जरूरत पड़ती है।

शिक्षिका ने हँसकर कहा –बिल्कुल सही है। जैसे चावल, मछली, अनाज हैं। मगर ये कच्चे हैं। भात, मछली की सब्जी, तरकारी बनेगी। इसमें और क्या-क्या लगेगा ? उनसे क्या-क्या बनेगा ?

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

अनाज को पकाने के लिए और किस-किस चीज की आवश्यकता होती है ? और क्या-क्या करना होता है ? नीचे लिखो :

| कच्चे खाद्यों के नाम | बनाने में और क्या-क्या लगता है ? | तलकर, सेंककर या फिर किसी और तरीके से ? |
|---|---|---|
| चावल, आटा, दाल, | | |
| तरकारी | | |
| दूध | | |
| मछली | | |
| मांस | | |
| ...................... | | |
| ...................... | | |

## बर्तन

घर लौटते समय केतकी सोचने लगी। खाना बनाने के लिए लोगों ने कितने उपाय ढूँढ़ लिये हैं। कितने तरह के बर्तन। अल्युमीनियम के, स्टील के एवं और भी कई प्रकार के! घर पहुँचकर बड़ी दादी अम्मा से उसने ये सब बताया। बड़ी दादी अम्मा ने सुनकर कहा– पहले तो ये सब नहीं थे। मिट्टी के बर्तन होते थे। मिट्टी की हाँड़ी, कड़ाही, पीतल की कलछुल। पीतल और काँसे की ग्लास, कटोरी।

केतकी को आश्चर्य हुआ। भात बनाने के लिए चावल में पानी डालना पड़ता है।

पानी डालने से मिट्टी गल नहीं जाती ? बड़ी दादी अम्मा ने हँसते हुए कहा–हँड़िया तो मिट्टी को पकाकर तैयार की

जाती है। मिट्टी से तैयार ईंट क्या पानी में गल जाती है?

अब केतकी की समझ में आया, मिट्टी को पकाकर मिट्टी की हँड़िया तैयार होती है। उसने फिर कहा- अच्छा, कच्ची ईंट तो लकड़ी के एक साँचे से तैयार होती है। हँड़िया तैयार करने का साँचा कैसा होता है? बड़ी दादी अम्मी की हँसी अब थम नहीं रही थी। कुछ देर बाद उन्होंने कहा–चलो, पूर्वी मुहल्ला चलते हैं। तुम्हारे कुम्हार दादाओं के घर। वहीं देखना।

कुम्हार दादा जी चाय की कुल्हड़ तैयार कर रहे थे। उन्होंने केतकी को कुल्हड़ तैयार करने की प्रक्रिया दिखलाई। स्कूल जाकर केतकी ने मिट्टी के कुल्हड़ तैयार करने की कहानी सबको बताई। शिक्षिका ने कहा–वहाँ तुमने जो चाक देखा था, उसे कुम्हार का चाक कहते हैं। इसे जिन लोगों ने सबसे पहले तैयार किया था, वे लोग तब सबसे बुद्धिमान प्राणी थे। बहुत सम्भव है कि इसका निर्माण सबसे पहले हमारे देश में ही हुआ हो।

आयूब ने कहा- आग जलाना सीखने के बाद ही लोगों ने ये सब सीखा होगा। उसके बाद लोगों ने भात बनाना सीखा होगा।

–ठीक कहते हो। इसके बाद लोगों ने पीतल, काँसा, लोहे का बर्तन तैयार किया होगा।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुम्हारे घर में क्या-क्या बर्तन हैं, उनके नाम लिखो और चित्र बनाओ :

| लोहे और स्टील के बर्तनों के नाम और चित्र | पीतल-काँसे के बर्तनों के नाम और चित्र | अन्य चीजों से तैयार बर्तनों के नाम और चित्र |
|---|---|---|
| | | |

# भोजन चला देश–विदेश

केतकी ने चावल के बारे में सोचा। चावल तब क्या था? दूसरे दिन केतकी ने स्कूल में चावल की चर्चा छेड़ी। शिक्षिका ने सुनकर कहा– सही कहती हो। तब तो खेती होती नहीं थी। जंगलों से पेड़ों पर लगे फलों को इकट्ठा करना पड़ता था। इसीलिए किसी को हमेशा भात नहीं मिलता था।

उत्तम को आलू खाना बहुत पसन्द है। इसीलिए उसने कहा– और आलू?

–आलू इस देश में आया है लगभग चार–पाँच सौ साल पहले। दूर किसी देश से।

आसिफ ने कहा–कैसे आया?

—जहाज से। उस देश और हमारे देश के बीच गहरा समुद्र है। लोग जहाज पर चढ़कर समुद्र पार करके उस देश से हमारे देश कभी–कभी आते थे। वे लोग ही अपने साथ आलू ले आये थे।

बैशाखी को आम पसन्द है। उसने कहा–और आम?

आम तो इस देश का ही फल है। नाना प्रकार के आम होते हैं।

बैशाखी ने कहा–जानती हूँ मैडम। हमारे बगीचे में ही पाँच प्रकार के आम होते हैं।

उत्तम ने जानना चाहा- और क्या-क्या दूसरे देश से आया है?

शिक्षिका ने कहा— ऐसे बहुत से सामान हैं। इस देश में जो नहीं मिलता था, लोग उसे दूसरे देश से लेकर आते थे। उस देश में जो नहीं मिलता, उसे लेकर जाते थे।

शिक्षिका ने और भी बातें बताईं। बोर्ड पर छह तरह के खाद्य-पदार्थों के नाम लिखे दिए। कौन सा दूसरे देश से यहाँ आया, कौन सा इस इस देश से दूसरे देश गया। सबने पढ़ा। शिक्षिका की बातें सुनीं। फिर समझा :

आलू : दूसरे देश से इस देश में आया।
टमाटर : दूसरे देश से इस देश में आया।
आम : इस देश से दूसरे देश में गया।
मिर्च : दूसरे देश से इस देश में आयी।
अनारस : दूसरे देश से इस देश में आया।
गोलमिर्च : इस देश से दूसरे देश में गयी।

**पृथ्वी के स्थल भाग पर पहले केवल वन था। वनों के फल-फूल खा कर लोग सीखते थे कि कौन सा खाने योग्य है? अलग-अलग जगहों के लोगों ने अलग-अलग खाने की चीजों को पहचाना था। समुद्र के आर-पार के दो स्थलों के बीच कोई सम्पर्क नहीं था। बीच में था समुद्र। अथाह जल राशि। बहुत दिनों बाद लोगों ने बड़ा जहाज बनाना सीखा। उसके बाद एक देश के लोग दूसरे देश आने-जाने लगे। साथ ही साथ नाना प्रकार के खाने-पीने की चीजें देश-विदेश में फैलती गईं।**

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

आम के सम्बन्ध में क्या जानते हो, लिखो। जरूरत पड़े तो बड़ों की मदद लो।

| विभिन्न तरह के आमों के नाम | वह आम कहाँ मिलता है? | कब पकता है? | स्वाद कैसा होता है? |
|---|---|---|---|
| | | | |

# पशुपालन और आग का इतिहास

बहुत पहले लोगों के पास भात बनाने के लिए चावल नहीं था। नदी थी। नदी के पास ही घर बना कर वे रहते थे। नहीं तो पीने का पानी कहाँ से मिलता? तालाब भी थे। मछलियाँ मिल जातीं। वनों के जीव-जन्तुओं को मार कर मांस मिल जाता। लाठी, पत्थर से पशुओं का शिकार किया जाता। तीर-धनुष, भाला-बल्लम आदि तब नहीं थे।

इतना सुनने के बाद आयशा ने पूछा- लोग क्या पहले गाय-बकरी बत्तख-मुर्गी नहीं पालते थे?

शिक्षिका ने कहा-पहले नहीं पालते थे। कौन-सा पालतू जानवर है, यह तो नहीं मालूम था। मालूम हो जाने के बाद पशुपालन का काम शुरू हुआ था।

रिम्पा ने पूछा- और फल-फूल?

वनों से फल-फूल चुनकर लाते थे। पेड़ों से तोड़कर लाते। जब भी जो मिल जाता वही खाते।

टिकाई ने पूछा-सब कच्चा ही खाते थे।

पहले लोग आग का उपयोग नहीं जानते थे। लोगों ने फिर आग का उपयोग सीखा। तब कुछ-कुछ चीजें आग में पकाकर खाने लगे।

इतु ने पूछा -आग जलाते कैसे थे? दियासलाई तो थी नहीं?

पहले तो आग जलाना जानते नहीं थे। आँधी आती तो वनों में पेड़ों की सूखी डालियाँ एक -दूसरे से रगड़ खातीं। इससे आग लग जाती। वही लकड़ी लाकर रखते। आग बुझने लगती, तो दूसरी लकड़ी जला लेते।

रबीन ने पूछा- बुझ जाने से फिर जला नहीं सकते थे?

ठीक कहा। इन्तजार करना पड़ता। कब फिर जलती हुई लकड़ी मिलेगी?

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

पहले के लोगों द्वारा खाना बनाने और भोजन जुटाने के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है? नीचे लिखो :

| खाना कैसे जुटाते थे? | क्या क्या खाना मिलता था? (चित्र सहित दिखा सकते हो) | कैसे खाते थे? | | |
|---|---|---|---|---|
| | | आग के उपयोग से पहले | आग के उपयोग के ठीक बाद | मिट्टी की हँड़िया, कड़ाही में बनाने के बाद |
| वनों में शिकार करके | हिरण, गधा, गाय, भैंस | | | |
| | | | | |

# रंग-बिरंगी पोशाक

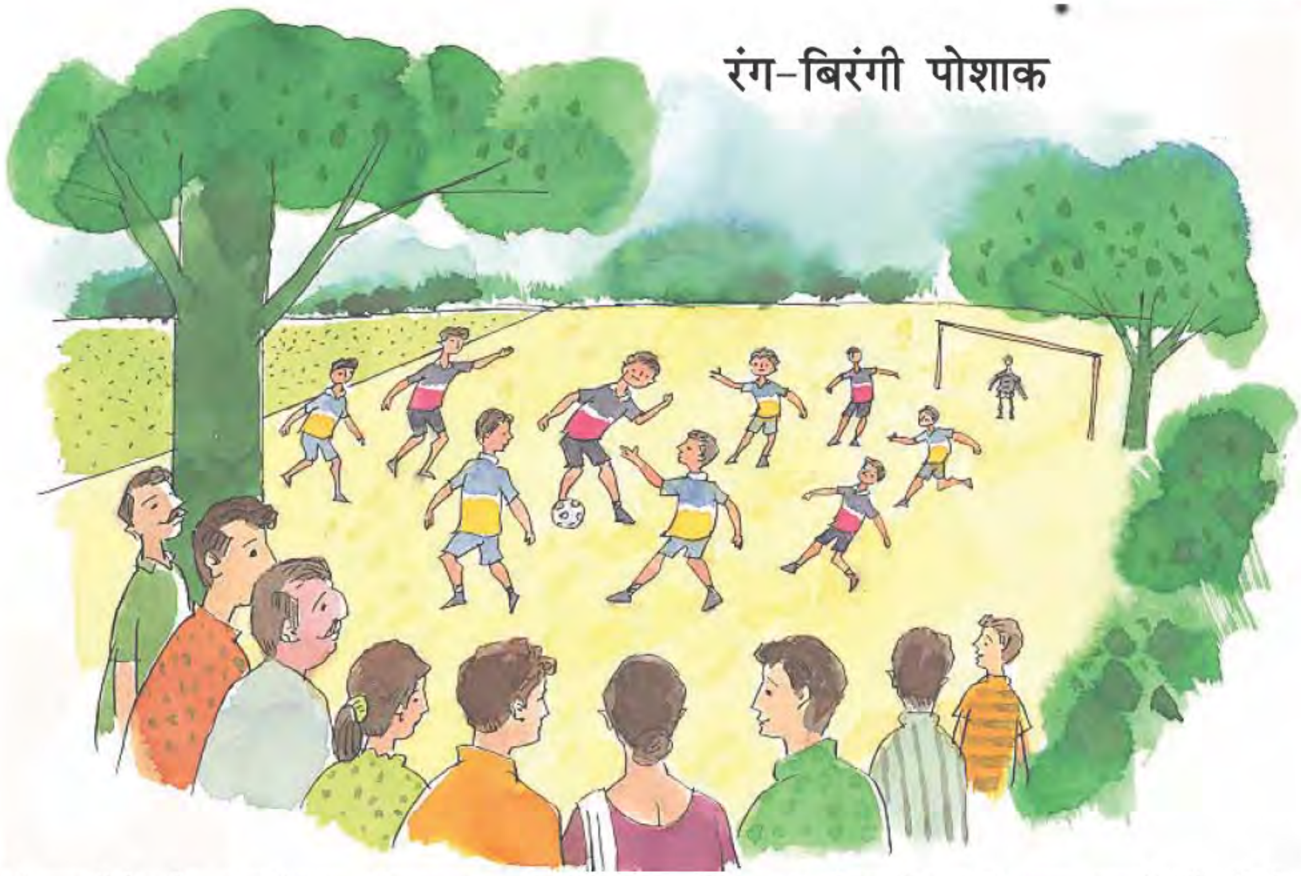

दो स्कूलों के बीच फुटबॉल का खेल चल रहा है। खिलाड़ी जर्सी पहनकर मैदान में उतरे हैं। लाल-काली और नीली-पीली जर्सी है। गोल कीपर ने फुल बाँह की गंजी पहन रखी है।

खेल देखने काफी लोग जुटे हैं। टिन्कू पीली गंजी पहनकर आया है। मुन्नी उसकी दीदी है। वह हरे रंग की सलवार-समीज पहनकर आई है। टिन्कू ने देखना शुरू किया कि और लोग क्या-क्या पहनकर आये हैं? रघु भैया लुंगी और नारंगी रंग की कमीज पहनकर आये हैं। सरोज दादाजी सफेद धोती और राख (छाई) के रंग का कुर्ता पहनकर आये हैं। हारान चाचा हरे रंग की कमीज पहने हुए हैं।

अचानक ही सभी चिल्ला उठे-गो ओ ओ ओ ल! अचकचाकर टिन्कू ने पास बैठी दीपा की तरफ देखा। वह कह रही थी- देखो-देखो, हमारे स्कूल ने गोल दिया है।

टिन्कू ने कहा- ओह! मैं तो हारान चाचा की हरी कमीज देख रहा था। दूसरे दिन दीपा ने स्कूल में इस घटना के बारे में सबको बताया। खूब हँसी हुई। तपन ने कहा- खेल देखने गये थे या लोगों की पोशाक देखने?

शिक्षिका ने कहा- ठीक ही तो है। इसमें गलत क्या है? खेल भी देखना हुआ, पोशाक भी देखना हुआ।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

गर्मियों में लोग क्या-क्या पहनते हैं, नीचे लिखो:

| किसकी पोशाक | पोशाक का नाम | पोशाक का रंग | किससे बनी है? |
|---|---|---|---|
| | | | |

## पोशाक की पहचान

स्कूल से लौटते समय टिन्कू ने कहा- बताओ तो, दो दलों की जर्सी दो तरह की क्यों होती है?

डमरू ने कहा- ऐसा न हो, तो अपने दल के खिलाड़ी से ही बॉल छीनना शुरू कर देगा।

अमिना ने पूछा- गोल कीपर की अलग जर्सी क्यों होती है?

मजिद ने कहा- हाथों से बॉल कौन पकड़ सकता है? केवल गोल कीपर। उसकी पोशाक तो अलग होगी ही।

रिन्कू ने कहा- अस्पताल में भी नर्सों को अलग से पहचाना जा सकता है। झक्क सफेद साड़ी। नहीं तो, सफेद स्कॉर्ट। स्कूल में भी छात्र-छात्राओं का यूनिफार्म होता है।

तपन ने कहा-डॉक्टर एक ढीला-ढाला चोंगा पहनता है। गले से पैर तक लम्बा। जैसे बारिश में हमलोग रेनकोट पहनते हैं, ठीक उसी तरह।

रिन्कू ने कहा- उसे एप्रॉन कहते हैं।

टिकाई ने कहा- होटल में जो लोग खाना खिलाते हैं, उनकी पोशाक भी अलग होती है।

टिन्कू ने कहा- और पुलिस? ऊपर से नीचे तक खाकी रंग की पोशाक।

दीपा ने कहा- नहीं! कोलकाता के रास्ते पर मैंने पुलिस को सफेद पोशाक में भी देखा है।

डमरू ने कहा- मेले और हाट में जाने से भी लोगों की रंग-बिरंगी पोशाकें दिखती हैं।

बातें करें मिलकर

रखेंगे लिखकर

अलग-अलग कामों की अलग-अलग पोशाकें। किस काम में लोग किस तरह की पोशाक पहनते हैं? नीचे लिखो :

| कौन पहनता है? | क्या-क्या पहनता है? | ऐसी पोशाक क्यों है? | पोशाक का रंग |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

## मौसम बदला, पोशाक बदली

काम करते समय मनुष्य जो पोशाक पहनता है, अन्य समय वह पोशाक नहीं पहनता। घर में कोई स्कूल यूनिफॉर्म पहनकर नहीं रहता। बाहर जाते ही पोशाक बदल लेता है।

ठण्ड के मौसम में हम विभिन्न रंग के स्वेटर पहनकर स्कूल जाते हैं। मुन्नी के स्वेटर में फूल बने होते हैं। बाबाई भैया खुले सीने का एक मोटा स्वेटर पहनकर आते हैं।

ठण्ड के मौसम में बहुत-से लोग विभिन्न प्रकार की चादर और शाल भी ओढ़ते हैं। कोई चादर और शाल मोटे ऊन की बनी होती है। कोई बहुत पतले ऊन की। देखने से पता नहीं चलता कि ऊन से बुनी हुई है। बड़ी दादी माँ कह रही थीं कि वह जब बहुत छोटी थी, तब दो-एक लोगों के पास ही स्वेटर होता था। एक डॉक्टर बाबू थे। कोट और पैण्ट पहनते थे। साहबों की तरह। मुहल्ले के बाकी लोग ठण्ड में चादर या शाल ओढ़ते थे। कोई-कोई लोग, दो-तीन कमीज पहन लेते। बैशाखी ने शिक्षिका से पूछा- मैडम, अब बहुत ज्यादा स्वेटर मिलने लगे हैं?

शिक्षिका ने कहा-अब तो सिंथेटिक ऊन मिलता है। लोग जितना खरीदेंगे, कारखाने में उतना ज्यादा तैयार होगा।

साइना ने पूछा– किस चीज से तैयार होता है?

शिक्षिका ने कहा– खनिज तेल से।

फिर उन्होंने कहा– बरसात में तुमलोग जो बरसाती पहनते हो, वही सिंथेटिक है। बरसात में बहुत सी महिलाएँ सिंथेटिक साड़ी पहनती हैं। जल्दी सूख जाती है। फींचने से सिकुड़ती नहीं है। वह इस तरह के तेल से ही तैयार होती है।

वाशिम ने पूछा– गर्मी के मौसम में सूती का कपड़ा पहनना अच्छा होता है न?

–ठीक कहते हो। तो बच्चों, आज हमने पोशाक तैयार करने के विभिन्न उपादानों के सम्बन्ध में जाना। कौन-सी पोशाक किस ऋतु में पहनी जाती है, यह भी जाना।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

कोन सी पोशाक किस ऋतु में पहनी जाती है? नीचे लिखो। पोशाक का चित्र बनाओ :

| पोशाक का नाम | किस ऋतु में पहनी जाती है? | इस ऋतु में क्यों पहनी जाती है? | पोशाक का चित्र |
|---|---|---|---|
| | | | |

# ऊन, रूई और उनके प्रयोग

केतकी ने पूछा– मैडम, खनिज तेल से सूत कैसे तैयार होता है?

शिक्षिका– तेल में और भी कई सामान मिलाना पड़ता है। बहुत ही सूक्ष्म छिद्र वाली जाली होती है। उसके भीतर से तेज गति से गुजारना होता है। बहुत ही महीन धागा तैयार होता है। उसके बाद इससे कपड़े तैयार होते हैं। ये सब काम बड़े-बड़े कारखानों में होते हैं।

आयशा ने पूछा– मैडम, कपास की रूई से बने सूत को ही तो सूती कहते हैं?

–हाँ, कपास रूई।

केतकी ने पूछा– हमारी जमीन में रूई की खेती होती है। आसिफ के मौसा जी गमछा बुनते हैं। आसिफ ने देखा है। मौसाजी लाल, सफेद, पीला धागा खरीद कर लाते हैं। बनने के बाद चेक-चेक दिखता है। उसने कहा– सूत से गमछा भी तैयार होता है।

बैशाखी अब तक चुपचाप सुन रही थी। इसके बाद उसने पूछा– मैडम, ऊन पहले कहाँ से मिलता था?

–पहले भेड़ के रोएँ से ऊन तैयार होता था। किसी-किसी बकरे के रोएँ से भी ऊन तैयार होता था। अधिक मात्रा में मिलता भी नहीं था। वह ऊन अभी भी मिलता है। अभी उसे पशम कहते हैं। ऊन शब्द अँग्रेजी के ऊल शब्द से बना है।

रेहाना ने पूछा– और सिंथेटिक ऊन?

–असल में इसे कैशमिलन कहते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

कौन–सी पोशाक कैसे तैयार होती है, नीचे लिखो :

| पोशाकों के नाम | किससे तैयार होती है ? | तैयार करने वाली चीजें कैसे–कैसे प्राप्त होती हैं ? |
| --- | --- | --- |
| | | |

# पोशाक तैयार करना

इमरान की कपड़े सिलने की दुकान है। लोग आते हैं, और थान कपड़े तथा शरीर का माप दे जाते हैं। उसके अब्बा इन कपड़ों को माप के अनुसार काटकर सिलते हैं। इमरान ने अब्बा से पूछा था– यह दर्जी की दुकान कब बनी थी? अब्बा ने बताया था– अस्सी–नब्बे साल पहले। तब ज्यादातर खादी के कपड़े होते थे। खादी का कुर्ता भी तैयार होता था। अब तो ज्यादातर टेरीकॉट की कमीज–पैण्ट तैयार होती है।

इमरान ने अब्बा से, भैया से, अम्मी से पूछ–पूछ कर बहुत कुछ जाना है। खादी वास्तव में सूती है। रूई का मोटा धागा। बहुत से लोग घर में ही खादी का थान कपड़े, धोती, साड़ी तैयार करते थे।

स्कूल में सभी बातें कर रहे थे। बड़े–बड़े कारखानों में खनिज तेल से सिंथेटिक सूत तैयार होता है। उस सूत से थान कपड़े बनते हैं। खनिज तेल मिट्‌टी के नीचे पाया जाता है। सूती के कपड़े तैयार करने के लिए कई लोगों को काम करना पड़ता है। कपास की खेती की जाती है। रूई निकाली जाती है। रूई उड़ती रहती है। नाक में घुस जाए तो साँस लेने में तकलीफ होती है। उस रूई से सूत तैयार होता है। उसके बाद सूत को बुन कर कपड़े तैयार होते हैं।

उन सबकी बातें सुनकर शिक्षिका अवाक रह गईं। बोलीं– तुमलोगों ने इतने तरह की पोशाक तैयार करने की बातें सोची हैं? अब बताओ, तुमलोग किस–किस तरह की पोशाक पहनते हो?

रविलाल ने कहा– गर्मी के मौसम में सूती कपड़ा पहनते हैं।

बैशाखी ने कहा– ठण्ड के मौसम में ऊन का कपड़ा पहनते हैं।

–ठीक कहते हो। और भी क्या–क्या पहनते हो, उसके बारे में भी सोचो। पोशाक कैसे तैयार होती है? इस सम्बन्ध में और भी चर्चा करो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुम जो पोशाक पहनते हो, वह कैसे तैयार होती है? इसे लेकर चर्चा करो और लिखो :

| पोशाकों के नाम | कौन-कौन तैयार करता है? | कैसे तैयार करते हैं? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

## पोशाकों की अतीत-कथा

एक दिन दादी माँ ने बताया था कि पहले इतना स्वेटर नहीं था। शिक्षिका ने कहा, बड़े-बड़े कारखानों में सिंथेटिक कपड़े तैयार होते हैं। पहले तो ये भी नहीं थे। तब लोग पहनते क्या थे?

इन सारी बातों को सोचकर बैशाखी ने अपनी दादी माँ से पूछा- तुमलोग बचपन में क्या पहनते थे?

-तुम्हारी उम्र में हमलोग साड़ी पहनते थे। छोटी-छोटी साड़ियाँ थीं। और फीता वाला हाफ पैण्ट।

-और लड़के क्या पहनते थे?

-वे लोग धोती अथवा लूंगी पहनते थे। छोटे-छोटे बच्चे हाफ पैण्ट पहनते थे। लड़कियों की तरह ही।

-तुम्हारे दादा-दादी बचपन में क्या पहनते थे?

-वे लोग बचपन से ही धोती और साड़ी पहनते थे।

बैशाखी ने कुछ देर सोचा। फिर कहा-अच्छा, लोग जब आग जलाना नहीं जानते थे, तब क्या पहनते थे?

दादी माँ ने कहा- ये सब बातें अपनी मैडम से पूछना।

दूसरे दिन शिक्षिका ने बैशाखी का प्रश्न सुनकर कहा- तब लोग कपड़े बनाते भी कैसे?

टिपाई ने पूछा- तो क्या पहनते थे?

-एक समय था जब कुछ नहीं पहनते थे। एक बार बहुत दिनों तक लगातार बेहद ठण्ड पड़ी। जिसको जो मिला, वही बदन में लपेट कर ठण्ड से बचने की कोशिश करने लगे। तब से ही पशुओं की खाल-चमड़ा, पेड़ों की छाल, लता-पत्ता आदि पहनना शुरू हुआ।

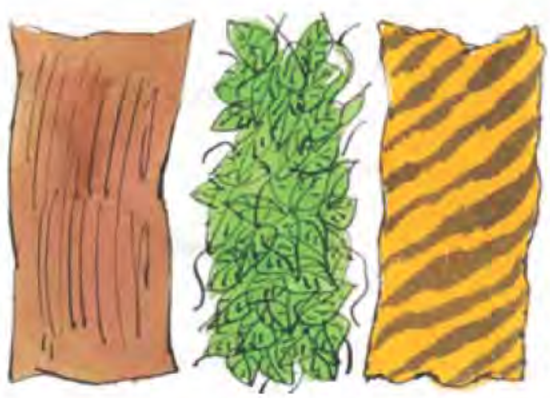

केतकी ने पूछा- पशुओं की खाल धो-सुखाकर रखते थे?

इमरान ने पूछा- अपनी माप से काट लेते थे।

काटता कैसे? कैंची भी तो नहीं थी। सुई भी नहीं थी। लोहे के बारे में किसी को पता नहीं था। केवल लकड़ी थी, पत्थर था।

वशिम ने पूछा-चमड़े को बदन पर कैसे लपेट कर रखते थे?

-तुमलोग स्वयं सोचकर बताओ तो!

बतें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

मान लो तुमलोग प्राचीन दिनों के व्यक्ति हो। खूब ठण्ड पड़ रही है। ठण्ड से बचना होगा। पशुओं की खाल, पेड़ों की छाल, लता-पत्ता आदि के अलावा और कुछ नहीं है। इन्हें पहनकर कैसे बचोगे, इसे अन्दाज से नीचे लिखो :

| पहनने के लिए क्या-क्या हो सकता है? | मनुष्य इसका उपयोग करके कैसे बच सकता है? |
|---|---|
| पेड़ों की छाल, लता, पत्ता | |
| पशुओं की खाल, | |
| | |
| | |

## पोशाकों की और भी कहानियाँ

किसी समय मनुष्य पेड़ों की छाल लपेट कर रहते थे। मगर आज पोशाकें ही पोशाकें हैं। ऐसा बदलाव कैसे हुआ? बीच में क्या हुआ था? पेड़ों की छाल, पशुओं की खाल के बाद क्या आया? सभी सोच रहे हैं।

डमरू ने कहा- लताओं को बुनकर पोशाक बनाई जा सकती है।

तितली ने कहा- हाँ! खजूर के पत्तों को बुन कर जैसे चटाई बनती है।

अमिना ने कहा-एक प्रकार की घास को बुन कर भी चटाई बनती है।

रमजान ने कहा– किन्तु सिलाई करना कब से शुरू हुआ?

मंगला ने कहा– मुझे लगता है सूई के बदले काठी का प्रयोग होता था।

शिक्षिका ने कहा– मरे हुए जानवरों की हड्डी से काठी का काम लिया जाता।

भूतनाथ ने कहा– हो सकता है, पेड़ों के मजबूत रेशों से धागे का काम होता हो।

उनकी बातें सुनकर शिक्षिका बहुत खुश हुईं। बोलीं– पहले ऐसा ही होता था। पाट तो पेड़ का रेशा ही है। सनई नामक एक और पौधा होता है। उसके रेशे बहुत मजबूत होते हैं।

तियान ने कहा– लोग सनई को बुन कर भी पहनते थे।

रियाज ने पूछा– जैसे गमछा बुनते हैं?

–पहले इतनी अच्छी बुनाई लोग नहीं जानते थे। जैसे-तैसे जोड़ लेते थे।

जाड़े में तिन्नी अपनी बिल्ली को कपड़े पहनाकर रखती है। स्कूल आने से पहले खोल देती है। शाम को फिर पहना देती है। यह सुनकर लोकनाथ ने कहा– हमलोग भी अपनी पालतू गायों को कपड़े पहनाते हैं। बोरे की कमीज। शाम को पहनाते हैं। सुबह खोल देते हैं।

मंगला ने पूछा– उनको भी बहुत ठण्ड लगती है न?

दीपा ने कहा– ठण्ड नहीं, मच्छर भी तो हैं। गाय-बैल अपनी पूँछ द्वारा मच्छर भगाते हैं। मगर शरीर के हर हिस्से में पूँछ तो नहीं पहुँचती है। बोरे की कमीज पहना देने से मच्छर ज्यादा काट नहीं पाते।

भूतनाथ ने कहा- मेरे मामा लोग अपने पालतू तोते को भी कपड़ा पहनाते हैं।

तीन चार छात्राएँ एक साथ हँस पड़ीं- ओह! तुमलोग चिड़िया पालते हो? मालूम है तुम्हें, चिड़िया को पिंजड़े में नहीं रखना चाहिए।

भूतनाथ ने अचकचा कर कहा- हमलोग नहीं, मामा लोग पालते हैं। ठीक है, मामा को बता दूँगा।

आयशा ने कहा- जाड़े में बकरियों को भी कष्ट होता है। थर-थर, थर-थर काँपती रहती हैं।

उनकी बात सुनकर शिक्षिका ने कहा- पशु-पक्षियों के शरीर में रोयाँ या पंख होते हैं। इससे ठण्ड थोड़ी कम लगती है।

तिन्नी ने कहा- मैडम, मैना जाड़े के मौसम में अपने पंख फुलाकर रखती है।

-वाह! यह भी लक्ष्य किया है तुमने। ठण्ड से बचने के लिए ही अपने पंख फुलाकर रखती है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१) किस तरह मनुष्य ने अपनी पोशाक क्रमशः बेहतर बनाना सीखा? इसका अंदाजा लगाओ और नीचे लिखो :

| किन-किन साधनों का व्यवहार किया? | मनुष्य ने इन साधनों से किस प्रकार पोशाक तैयार की? |
|---|---|
| १. पेड़ों की छाल, पत्ता, लता | |
| | |
| | |
| | |
| | |

२) ठण्ड से बचने के लिए तुम्हारे परिचित पशु-पक्षी क्या-क्या उपाय करते हैं? उसे नीचे लिखो :

| पशु-पक्षी का नाम | ठण्ड से बचने के लिए क्या उपाय करते हैं? | स्वयं करते हैं या दूसरे की मदद से? | किसकी मदद से? |
|---|---|---|---|
| | | | |

# बारिश आई झूमकर

खेल शुरू हुए अभी दस मिनट भी नहीं हुए थे। विमल ने तीन लोगों को छकाते हुए अभी-अभी एक गोल दिया ही था, बस तभी झमाझम बारिश शुरू हो गई। साहिल आदि खेल देख रहे थे। वे लोग दौड़ते हुए तीनू के दादाजी के घर में घुस गए। जो लोग खेल रहे थे, वे लोग भी दो मिनट के भीतर वहाँ पहुँच गए।

सबलोग अभी पहुँचे ही थे कि बारिश थम गई। इसके बाद सबलोग बाहर निकल आए।

साहिल ने कहा- दादाजी, आपके घर ने हमलोगों को बचा लिया।

दादाजी ने हँस कर कहा- क्या कहते हो भैया। बारिश आई, इसलिए तो तुमलोग मेरे घर आए।

प्रशान्त ने कहा- हाँ, यह बात तो सही है।

तीनू नरेन के साथ पढ़ता था। गत वर्ष तीनू के पिताजी का तबादला हो गया। इस घर में दादाजी अब अकेले रहते हैं। नरेन ने कहा-दादा जी, तीनू अपने माँ-पिताजी के साथ कहाँ है?

दादा जी ने कहा- पहाड़ी अंचल में। फोटो है मेरे पास। ठहरो,

दिखाता हूँ।

दादा जी ने एक फोटो दिखाया। पहाड़ पर एक घर बना है। घर के आगे तीनू खड़ा है। उसी के सामने गहरी खाई है। उसी खाई में एक छोटा पुल बना है। उसके बाद एक रास्ता है।

स्कूल आने के बाद नरेन ने तीनू के घर के बारे में बताया। सबने शिक्षिका से पहाड़ों पर बने घरों के बारे में जानना चाहा। शिक्षिका ने हँसकर कहा– फोटो देखकर तुमलोग खुद अन्दाजा लगाओ और समझो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

अपने घर का एक चित्र बनाओ। पिछले पन्ने पर बने घरों के साथ उसकी समानता और भिन्नता लिखो:

| तुम्हारे घर का चित्र | तुम्हारे घर के साथ फोटो वाले घर की समानता और भिन्नता लिखो | |
|---|---|---|
| | समानता | भिन्नता |
| | | |

# आसानी से समझो

स्कूल से लौटते समय रेशमा ने समझना चाहा- घर के चित्र में तुमलोगों ने क्या-क्या बनाया? बरामदा, दीवार, सबकुछ?

टिकाई ने कहा- इतना सब बनाना बहुत कठिन है। मैंने केवल एक तरफ की दीवार और छप्पर बनाई है।

शेफाली ने कहा-दरवाजा, खिड़की भी नहीं बनाई?

नरेन ने कहा- वे सब तुम बनाना। तुम बढ़िया चित्र बनाती हो।

दूसरे दिन। शेफाली ने कक्षा में अपने घर का चित्र दिखाया। घर, दरवाजा, खिड़की, बरामदा, फुलवारी, सब्जी का बगिया, तालाब। बहुत अच्छा चित्र बना था। तीन-चार लोगों ने एक साथ कहा- तुमने बनाया है?

शेफाली ने कहा- मैं इतना सुन्दर कहाँ बना सकती हूँ? काका ने बनाया है।

सबको मालूम है कि शेफाली के काका अच्छा चित्र बनाते हैं।

सब देखने-सुनने के बाद शिक्षिका ने कहा-इतना अच्छा चित्र अगर तुमलोग न बना सको, फिर भी कहाँ क्या बनाना है, इसे सहजता से दिखा ही सकते हो।

अंशु ने कहा- कैसे?

-चिह्न ठीक कर लेना पड़ता है। जोड़-घटाव के चिह्न जैसे दिए जाते हैं।

| काम | चिह्न | वस्तु | चिह्न |
|---|---|---|---|
| जोड़ | + | दरवाजा | |
| घटाव | − | | |
| | | खिड़की | ⊞ |

एलिस ने कहा- दरवाजे और खिड़की के चिह्न कैसे हो सकते हैं?

शिक्षिका ने बोर्ड पर बनाकर दिखाया।

शुभम ने कहा - समझ गया। देखकर ही पता चल जाएगा कि क्या चीज है?

-समझ जाओ, तो अच्छी बात है। न भी समझो, तो असुविधा नहीं है। बगल में लिख दो कि कौन किस चीज का चिह्न है। उससे पहले सब मिलकर चिह्न की पहचान कर लो।

बैशाखी ने कहा- बरामदा, फुलवारी सबके लिए चिह्न ठीक कर लेंगे?

-रसोई, सोने का कमरा, बाथरूम, बरामदा-सबके लिए चिह्न तय कर लो। इससे घर के सारे हिस्से दिखाए जा सकते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

घर और उसके आस-पास को समझने के लिए किस-किस चिह्न का उपयोग करोगे? इसे ठीक करो। अब नीचे लिखो और चित्र बनाकर दिखाओ :

| सामान | चिह्न | सामान | चिह्न | सामान | चिह्न |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | |

# एक सरल मानचित्र

दूसरे दिन शेफाली ने विभिन्न प्रकार के **चिह्नों** से घर के लिए जरूरी सब कुछ चित्रित कर दिया। यह देखने में पहले वाले चित्र की तरह सुन्दर नहीं था। मगर, सब कुछ समझ में आ रहा था, कोई कमी नहीं है। घर के भीतर किधर से प्रवेश करना है, यह दिख रहा है। फूलों का बगीचा कहाँ है, कौन-सा कमरा किस काम के लिए है, यह भी पता चल रहा है। कौन-सा चिह्न किसके लिए है, चित्र के बगल में अंकित है।

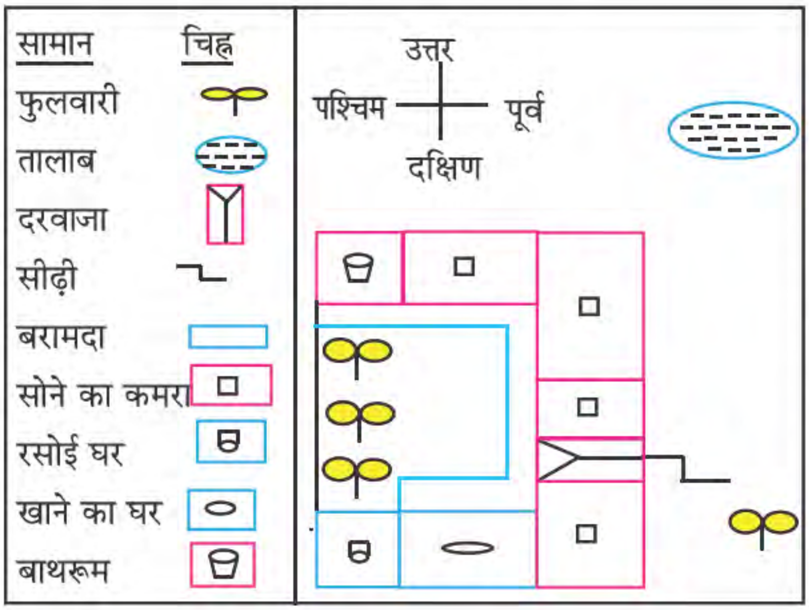


सबने अच्छी तरह देखा। शेफाली ने कहा- यह चित्र काका ने नहीं बनाया है। मैंने खुद बनाया है।

शिक्षिका ने कहा- इसे क्या घर का चित्र कह सकते हैं?

सभी सोचने लगे। अचानक ही सुहाग ने कहा- मैडम, मैप क्या इसे ही कहते हैं?

अरुण ने कहा- यह कैसे हो सकता है? मैप तो वह है, जो दीवार पर टँगा हुआ है।

-वह हमारे राज्य का मैप है। यह है बैशाखी के घर का मैप या मानचित्र।

केतकी ने पूछा- राज्य के मैप में भी क्या ऐसे ही चिह्न दिए हुए हैं?

-कौन सा कौन जिला है, यह अलग-अलग रंगों से दिखाया गया है।

रिन्कू ने कहा- पेड़, तालाब- ये सब तो नहीं हैं।

-नहीं, ये सब नहीं हैं। बहुत बड़ी एक जगह को इतने छोटे एक कागज में दिखाया गया है। एक पेड़ या तालाब इतना छोटा है कि यहाँ नहीं दिखाया जा सकता। एक जिला दिखाया जा सकता है। कुछ रुककर मैडम ने फिर कहा- मैप अँग्रेजी का शब्द है। इसका हिन्दी मानचित्र है। कौन सी दिशा किस ओर चित्रित हुई है, इसे मानचित्र के ऊपर दिखाया जाता है। इस मामले में सभी एक ही नियम का पालन करते हैं।

बैशाखी ने कहा- कैसा नियम मैडम?

-उत्तर की दिशा कागज के ऊपर की ओर दिखाना पड़ता है। सुबह का सूरज तुम्हारे घर से किस ओर दिखता है?

बैशाखी ने कहा- गेट की ओर।

-तब तो तुमने ठीक ही दिखाया है। घर की दाहिनी ओर से घर में प्रवेश का रास्ता तुमने दिखाया है। मानचित्र में वही पूर्व दिशा है। अब पश्चिम बंगाल का मैप देखो।

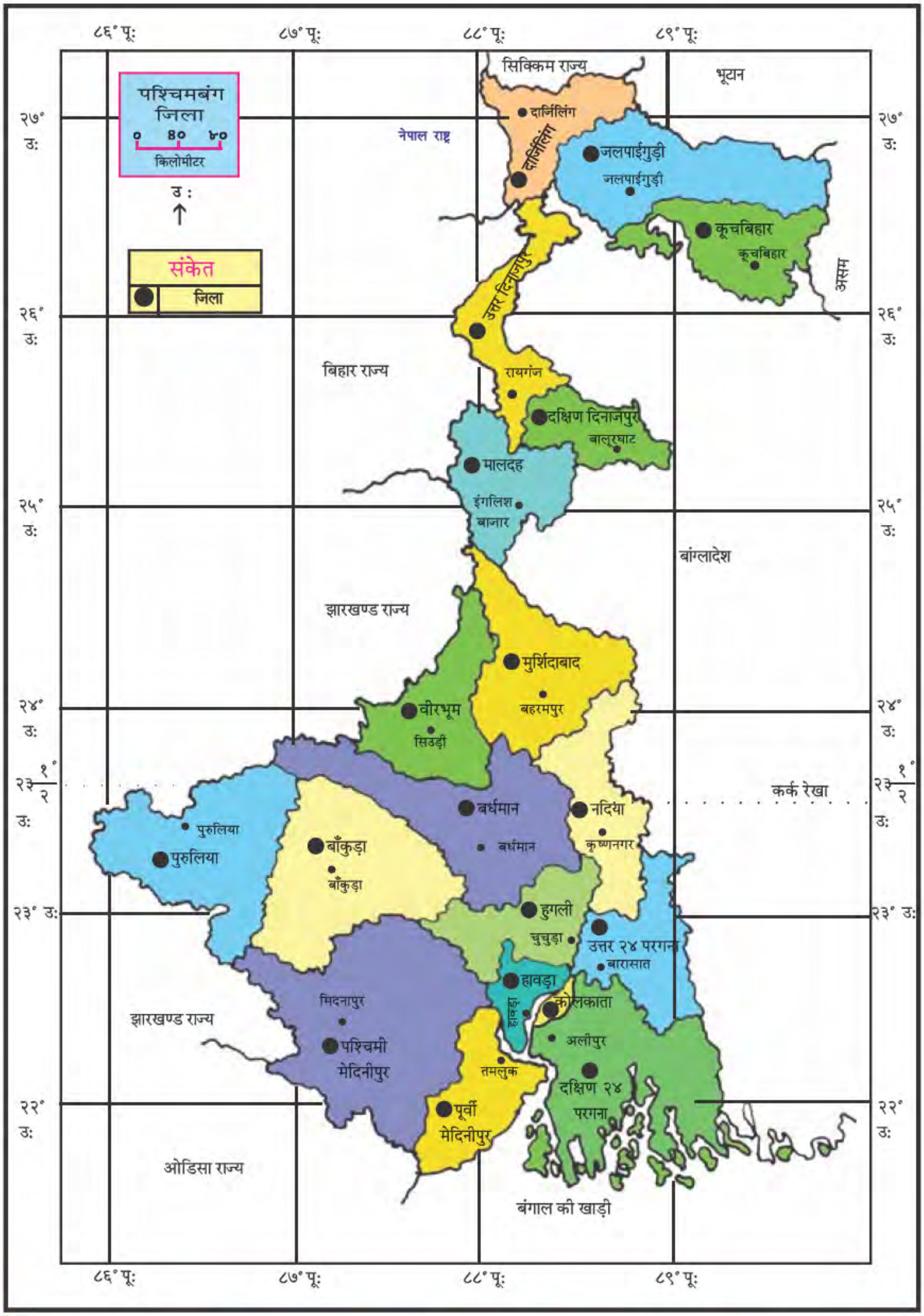


पश्चिम बंगाल का मानचित्र

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

स्कूल के गेट से देखो कि किस तरफ सूरज निकलता है? उसके बाद भवन का एक चित्र बनाओ।

स्कूल भवन का चित्र

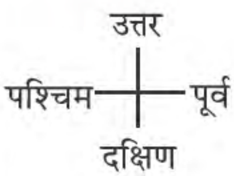

# मेल-बेमेल नाना प्रकार के चिह्न

स्कूल का मानचित्र बनाने के बाद ही छुट्टी हो गई। जाते-जाते साहिल ने सोचा, घर और स्कूल के बाहर का वातावरण लगभग एक जैसा है। मगर भीतर से दोनों में बहुत अन्तर है।

स्कूल में बेंच हैं, बोर्ड-चॉक, डस्टर हैं। घर में ये सब नहीं हैं।

मगर घर में पलंग-बिछावन है, आलना है। स्कूल में ये सब नहीं हैं।

साहिल ने दूसरे दिन मैडम से ये बातें बताईं-घर के सामान में और स्कूल के सामान में बहुत अन्तर है। भीतर के मानचित्र बनाने के लिए और भी कई तरह के चिह्न ठीक कर लेने होंगे, है न मैडम?

शिक्षिका ने कहा- ठीक कहते हो। मानचित्र में क्या-क्या दिखाना जरूरी है, उन सबके लिए चिह्न ठीक कर लो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१) अपने-अपने घर के भीतर का सामान और स्कूल के भीतर के सामन के लिए चिह्न ठीक करो और नीचे लिखो :

| अपने-अपने घर के भीतर का सामान | चिह्न | स्कूल-भवन के भीतर का सामान | चिह्न |
|---|---|---|---|
| | | | |

२) अपनी कक्षा और अपने घर के किसी भी कमरे के भीतर का मानचित्र यहाँ बनाओ :

| अपनी कक्षा के भीतर का मानचित्र | घर के रसोईघर/सोने के कमरे के भीतर का मानचित्र |
|---|---|
| | |

## समानता-असमानता की और बातें

घर लौटते समय तर्क-वितर्क शुरू हो गया। स्कूल के कमरे और घर के कमरे में समानता अधिक है या असमानता? अचानक ही पीकू ने नाटकीय अन्दाज में कहा- बेंच और पलंग। यही तो अन्तर है। तोड़कर देखो, तो दोनों ही लकड़ी है। बाहर से अलग, भीतर से दोनों एक हैं।

पीकू की बात सुनकर सभी हँस पड़े।

इस बार केतकी ने कहा-पक्के मकान का मतलब ही है ईंट, बालू, सीमेंट।

आयशा ने कहा- पानी नहीं डाला जाए, तो ईंट-बालू- सीमेंट जमेगा कैसे?

वशिम ने कहा- ईंट जोड़ने के समय ही नहीं। उसके बाद भी पानी की जरूरत है।

साहिल ने कहा- केवल पक्के मकान की बात क्यों करते हो? परेश काका के मिट्टी के घर की बात भूल गए?

घर तैयार करने के जरूरी सामान

इमरान ने कहा–फूफी जी जब पढ़ती थीं तब तो स्कूल भी मिट्टी का ही था। रोज स्कूल जाने-आने के समय रास्ते में क्या बातें हुईं, जब तक शिक्षिका से न कह दे, तब तक उनलोगों को शान्ति नहीं मिलती थी। दूसरे दिन शिक्षिका ने सारी बातें सुनीं। सुनने के बाद कहा– अभी भी बहुत लोग मिट्टी के घरों में रहते हैं।

हारुन ने कहा– केवल मिट्टी ? मैडम, बहुत से घर तो टाट के बने होते हैं।

रेवा ने कहा– बाँस की फट्टी से टाट बनाकर उसके ऊपर मिट्टी का लेप चढ़ा कर भी दीवार बनाते हैं। उसे फड़की की दीवार कहते हैं।

प्रकाश ने कहा– एक तरह के पत्तों को सजाकर भी घर की छप्पर तैयार की जाती है। मैंने चित्र में देखा है।

मैडम ने कहा– अब देखो, तुमलोग कितनी बातें जानते हो। दीवारें और छप्पर की बात बताई। किस चीज से बनाई जाती है-ये भी तुमलोगों को मालूम है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

घर तैयार करने के विषय में चर्चा करो। उसके बाद नीचे लिखो और चित्र बनाओ :

| घर की दीवार बनाने की चीज | घर की छत छप्पर बनाने की चीज | घर का चित्र |
|---|---|---|
| | | |

# मनुष्य द्वारा निर्मित

शाम के समय मैदान में चार लोग बैठकर बातें कर रहे हैं। कुहेली, साइना, राबिया और टिकाई। कुहेली ने पत्तों से बनी हुई छप्पर की बात की। टिकाई ने कहा- मेरे दादाजी बताते हैं कि पहले तो ये सब ही मिलते थे। बाँस-खपची, ताड़-खजूर का तना, मिट्टी, बालू, खर, नाना प्रकार के पत्ते। टाली, टिन, एस्बेस्टस, ईंट, लोहा, सीमेंट आदि तो मनुष्य ने बहुत बाद में तैयार किये।

साइना ने कहा-पत्थर तो पहले भी था। मनुष्य ने तो बनाया नहीं। पत्थर के ऊपर पत्थर रखकर घर की दीवार तैयार होती है। जोड़ की जगह पर थोड़ा-सा सीमेंट-बालू लगाया जाता है। हरेन काका कह रहे थे।

रबिया ने कहा-हाँ, पत्थर को काट-काट कर ईंट का आकार दिया जाता है। पहाड़ी प्रदेश में पत्थर से ही ईंट का काम किया जाता है।

दूसरे दिन स्कूल पहुँचकर चारों ने सारी बातें बताईं। सुनकर आयशा ने कहा-पानी की पाइप, ट्यूबवेल क्या पहले था? मनुष्यों ने ही तो बनाया है।

डमरू ने कहा-बेसिन का नल भी।

केतकी ने कहा-इलेक्ट्रिक का तार, बल्ब, फैन।

शिक्षिका उन सबकी बातें सुन रही थीं। सुनकर उन्होंने कहा-घर तैयार करने और उन्हें सजाने के लिए लोगों ने और भी बहुत कुछ तैयार किया है। मगर ढेर सारे उपादान प्रकृति से ही प्राप्त हुए हैं।

बैशाखी ने कहा-मनुष्य ने अपनी बुद्धि के बल पर उन्हें बदल लिया है।

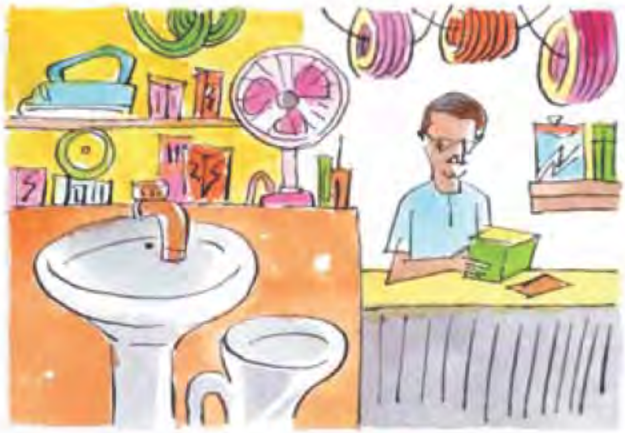

## घर-द्वार होने का तर्क-वितर्क

एक साथ कई लोग स्कूल से घर लौट रहे थे। अचानक जैकब ने सवाल किया-अच्छा, घर के लिए सबसे जरूरी क्या है? छत या फर्श या दीवार या खिड़की-दरवाजा या फिर कुछ और?

कुछ सोचकर तन्या ने कहा- खिड़की न हो तो दम घुट जाएगी।

डमरू ने कहा- छत न हो, तो बारिश में मुश्किल होगी! सो कर उठते ही देखोगे कि पूरे घर में बारिश का पानी भर गया है।

साहिल ने कहा- दीवार की जरूरत नहीं है? सोकर उठते ही देखोगे कि रसोई में सारा खाना कुत्ते-बिल्ली चट कर गए हैं।

अमिना ने कहा- दरवाजा न रहे तो भीतर प्रवेश ही नहीं कर पाओगे।

तन्या ने कहा–अगर फर्श न हो तो घर में पानी घुस जाएगा।

दूसरे दिन शिक्षिका ने सब सुनकर कहा–एक-एक करके सोचो। किस-किस कारण से घर के लिए उस-उस चीज की जरूरत है। छत या छप्पर की ही बात सोचो। कई प्रकार की छतें होती हैं। पहले पिटैया करके छत तैयार होती थी। अब ढलाई होती है। किसी-किसी के घर की छत टाली या खर से छायी रहती है। मगर छत क्या केवल बारिश रोकने का काम करती है?

साइना ने कहा- नहीं मैडम, गर्मी के मौसम में कड़ी धूप को भी छत रोकती है ।

-घर में जो भी होता है-सब जरूरी हैं। मनुष्य के लिए जो सबसे जरूरी है, उसे मनुष्य ने सबसे पहले बनाया है।

जैकब ने कहा-हाँ मैडम, सबसे पहले मिट्टी का घर बना था। मिट्टी का घर देखना होगा। तब समझ में आ जाएगा, क्या सबसे जरूरी है?

— जिसने जो भी देखा है, उसके बारे में अच्छी तरह सोचो। बहुत सी बातें समझ में आ जाएँगी। जिनका घर मिट्टी या टाट का है, वे और अच्छी तरह बोल पाएँगे। बाकी लोग भी विभिन्न प्रकार के घरों को देखो और समझने की कोशिश करो, कौन चीज सबसे जरूरी है?

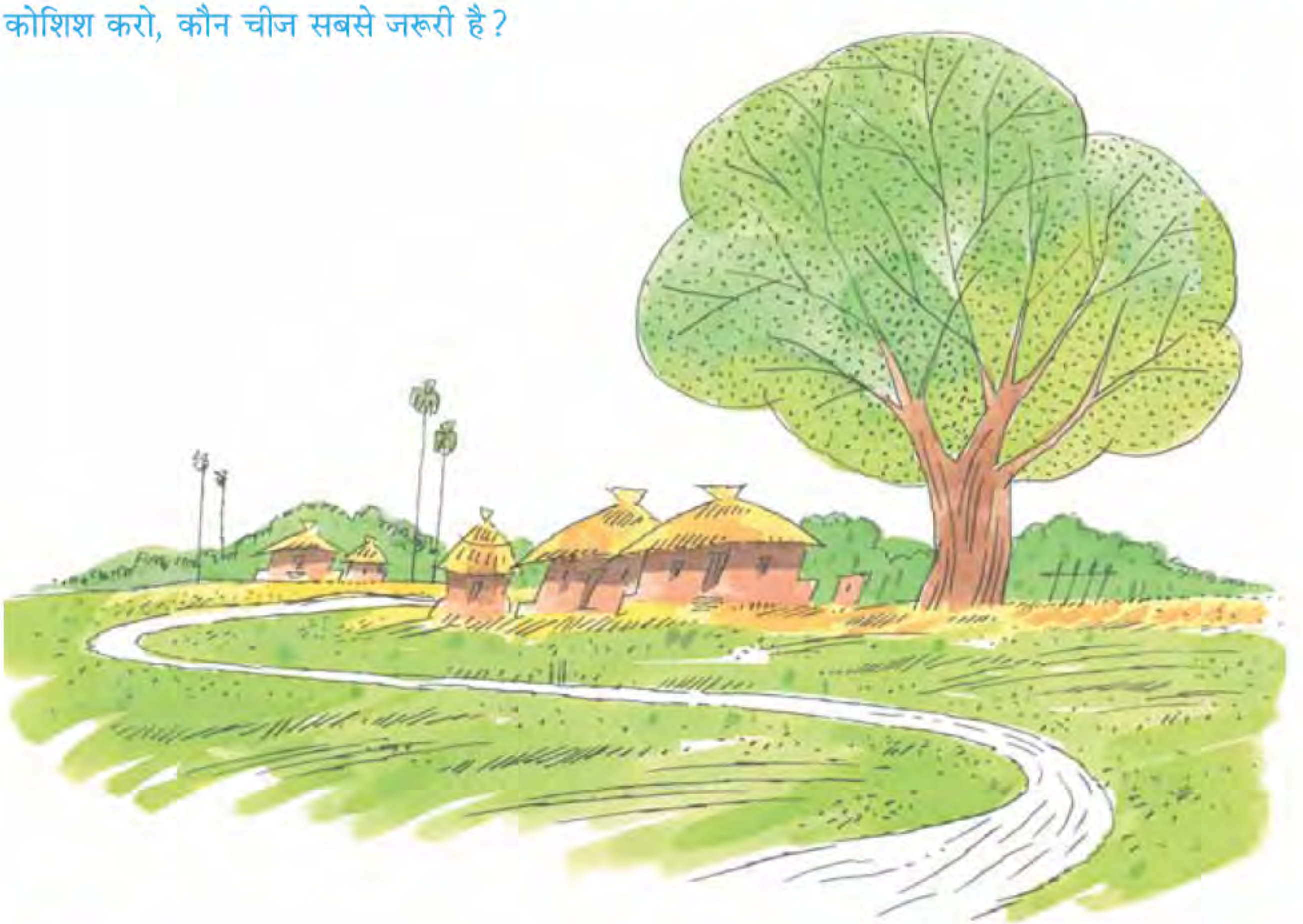

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१) अपने-अपने घर को अच्छी तरह देखो। घर के लिए कौन-सी चीज सीधे प्रकृति से ली गई है। कौन-सी चीज नाना प्रकार से रूपान्तरित कर के काम में लगा ली गई है। अब उसका उल्लेख नीचे करो :

| घर के विभिन्न हिस्से | बिना किसी बदलाव के काम में लगाया गया है | रूपान्तरित कर के काम में लगाया गया है। |
|---|---|---|
| दीवार | बाँस, ताड़-खजूर का तना, मिट्टी | ईंट, बालू, सीमेण्ट |
| फर्श | मिट्टी | |
| छप्पर / छत | | पानी-बालू-सीमेण्ट-पत्थर के कंक्रीट,टीना |
| खिड़की | | |
| दरवाजा | | |

२) तुमलोगों ने विभिन्न प्रकार के घर देखे हैं। उन घरों के कौन-से हिस्से की क्या जरूरत है? कौन-से हिस्से ज्यादा जरूरी है? इनको लेकर अपने विचार नीचे लिखो :

| घर के हिस्से का नाम | क्यों जरूरी है? |
|---|---|
| दीवार | |
| फर्श | |
| छप्पर/छत | |
| खिड़की, दरवाजा, ग्रिल | |

# निर्माण कला की कहानी

तपन के पिताजी लकड़ी का काम करते हैं। घर के निर्माण के समय खिड़की-दरवाजा लगाने जाते हैं। एक बार तपन अपने पिताजी के साथ, एक पक्के मकान का निर्माण देखने गया था।

वहाँ काफी लोग थे। कोई चहबच्चा में ईंट फेंक रहा था। कोई उन भीगे ईंटों को आगे बढ़ा रहा था। कोई कुदाल से बालू-सीमेण्ट-पानी सान रहा था। एक व्यक्ति दीवार पर पानी डाल रहा था। पिताजी ने बताया- ये सभी मजदूरी का काम करते हैं।

एक व्यक्ति हाथ में कढ़नी लेकर ईंट गाँथ रहा था। एक व्यक्ति ओलन लेकर देख रहा था कि ईंटों की गुँथाई ठीक हुई है या नहीं, एक व्यक्ति पतले-पतले तार लेकर लोहे का सरिया बाँध रहा था। पिताजी से तपन ने सुना है कि वे लोग राजमिस्त्री हैं।

दरवाजे, खिड़की का पल्ला लगाने के लिए कई तरह के औजार-आरी, बटाली तथा और भी अनेक हथियारों की जरूरत पड़ती है। तपन सब पहचानता है। मगर उसने कभी मिट्टी के घर तैयार होते नहीं देखा है। उसके जन्म से पहले ही उनलोगों का घर बन गया था। नल वाला घर केवल पक्के का है। बाकी सारे घर मिट्टी के हैं, टीना की छत है।

डमरू ने कहा-सगीना के मुहल्ले में मिट्टी का एक घर बन रहा है। चलकर देखते हैं एक दिन।

दूसरे दिन वे लोग मिट्टी के घर का निर्माण कार्य देखकर स्कूल गए।

घर तैयार करने के जरूरी सामान

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

नाना प्रकार के घर बनाने के लिए नाना प्रकार के काम करने पड़ते हैं। उन कामों के संबंध में चर्चा करो और नीचे लिखो :

| घर बनाने का काम | एक साथ क्या-क्या काम करना पड़ता है? | जो लोग काम करते हैं, उन्हें क्या-क्या कहते हैं? |
|---|---|---|
| १. दीवार चुनना | | |
| २. घर का छप्पर बनाना | बाँस और लकड़ी काटना, ढाँचा तैयार करना, छप्पर का ढाँचा बिठाना, पुआल देना | छप्पर छाने वाला |
| | | |

# घर में कितने सामान

बोतल में पीने का पानी भरते-भरते ऑलिविया ने सोचा, घर बनाने में और भी लोगों की जरूरत है। हमारे घर में और भी बहुत कुछ है! बरामदे का ग्रिल, दीवार से लगी अलमारी, पानी का पम्प। पिताजी को मालूम है कि कितने लोगों ने मिलकर इन्हें बनाया है! पिताजी से पूछा तो वे हँसने लगे। उन्होंने फिर कहा-घर बनाते समय नहीं दिखते, ऐसे भी बहुत लोग हैं। जैसे खिड़की का शीशा जिन्होंने तैयार किया है, उनका भी घर के निर्माण में योगदान

घर में व्यावहार किए जाने वाले जरूरी समान

है। पानी निकालने का पम्प जिन्होंने तैयार किया है, उनको भी इनमें शामिल करना पड़ेगा। घर निर्माण से पहले एक नक्शा तैयार किया जाता है। कहाँ कौन सा कमरा होगा? किस तरफ दरवाजा-खिड़की रखना अच्छा होगा?

ऑलिविया ने कहा-अच्छा होगा मतलब?

-घर में प्रवेश करने-निकलने में सुविधा होगी। सोने के लिए चौकी, अलमारी, किताबों का ताक रखने में सुविधा होगी।

दूसरे दिन स्कूल में ऑलिविया से सब सुनकर शिक्षिका ने कहा-अब तुमलोग जान गए हो कि एक घर में कितना कुछ सामान होता है। कितने लोग मिलकर काम करते हैं, यह भी तुमलोगों को पता चल गया।

इतना सुनकर डमरू, केतकी, सुधन, रबीना सब बताने लगे कि किसके घर में क्या-क्या है?

हमारे घर में मिट्टी की सुराही है। इस सुराही में पानी रखा जाता है। गर्मी में पानी बहुत ठण्डा रहता है।

हमारे घर में किताब रखने के लिए एक अलमारी है। पिताजी ने चायपत्ती के डब्बे की लकड़ी से बनाया है। उसमें काका की मोटी मोटी किताबें रहती हैं।

-हमारे घर की छत टीन की है। घर के भीतर एक ट्यूबवेल है।

-हमारे घर में धान झाड़ने की एक मशीन है।

-हमारे घर के करीब ही एक मैदान है। मगर घर बहुत ऊँची जगह पर है।

यह सुनकर ऑलिविया ने कहा- पिता जी कहते हैं- घर कुछ ऊँची जगह पर ही बनाना चाहिए ताकि बाढ़ का पानी घर में घुसने न पाए। खेती की जमीन और घर बनाने की जमीन अलग होती है।

शिक्षिका ने कहा-तुम्हारे पिता जी ने ठीक कहा है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

अलग अलग तरह के घर बनाने के लिए किस किस चीज की जरूरत पड़ती है? घर के भीतर और क्या क्या सामान होता है? नीचे लिखो :

| किस तरह का घर? | घर बनाने में क्या क्या लगता है? | घर के भीतर क्या क्या होता ह? |
|---|---|---|
| पक्का मकान | ईंट, सीमेण्ट, बालू, पानी, मिट्टी, लोहा, लकड़ी, टिना, रंग | |

## घरों के आस पास

घर बनाने के लिए ऊँची जगह चाहिए। अगर करीब ही कोई नदी हो तो ? नदी का किनारा तो टूटता ही रहता है। करीब ही कोई बड़ा रास्ता हो तो ? पूरे दिन बसों-ट्रकों के आने-जाने से दिन रात घर काँपता रहेगा।
बाजार में अगर घर हो तो ? बहुत हो-हल्ला होगा। दोपहर के बाद बदबू आती रहेगी।

यही सब सोचते हुए अनन्या स्कूल जा रही थी। रास्ते में लक्ष्मीमणि के साथ मुलाकात हुई। ये बातें सुनकर लक्ष्मीमणि ने अपने गाँव की बात बताई। चारों तरफ भाँय-भाँय करता हुआ खेत। करीब ही है पत्थर की खान। दिन भर पत्थर की महीन धूल उड़कर आती है। पास ही छोटा सा रास्ता है। पानी कभी नहीं ठहरता। रास्ते से ट्रक गुजरता है। बहुत धूल उड़ती है। उसके दादाजी उसी खान में काम करते हैं। उन्होंने पिताजी से कहा था, कहीं दूसरी जगह घर खोजने के लिए।

रिम्पा ने कहा- मेरे नानाजी के घर पर हाथियों का बहुत उपद्रव होता है।

स्कूल में शिक्षिका ने सब सुना। दूसरे लोगों ने भी सुना।

पीकू ने कहा कि सुनसान मैदान में घर होने से भी मुश्किल होती है। घर के आस-पास पेड़-पौधे का होना आवश्यक है। छाया मिलती है।

आयूब ने कहा-घर के पास जल-स्तर भी पहुँच में होना चाहिए। नहीं तो ट्यूबवेल नहीं बिठा सकते। पीने का पानी जुटाने में ही दिन बीत जाएगा।

शिक्षिका ने पूछा-घर के आस पास क्या-क्या होना आवश्यक है, ये समझ में आ गया।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुमलोगों का जहाँ-जहाँ घर है, वहाँ के सम्बन्ध में अच्छी तरह जानते हो। वे सब बातें नीचे लिखो :

| घर कहाँ है? | क्या-क्या सुविधा हो, तो घर बनाया जा सकता है? | क्या-क्या रहे, तो वहाँ घर बनाना मुश्किल है? |
|---|---|---|
| | | |

## घर पर आईं मुश्किलें

नदी का किनारा टूटकर घर गिर जाए तो मुश्किल। नदी का जो किनारा टूट रहा है, उस किनारे पर घर नहीं बनाया जा सकता। भूकम्प हो, तब भी मुश्किल होती है। घरों में दरार पड़ जाती हैं। ईंट-सीमेण्ट से बना मकान नष्ट हो जाता है।

जहाँ ज्यादा भूकम्प होता है, वहाँ लकड़ी का मकान बनाने से सुविधा होती है।

छत अगर टीन की हो, तो अच्छा होता है। उस लकड़ी और टीन द्वारा फिर से नया मकान बनाया जा सकता है।

जिस इलाके में मिट्टी के नीचे कोयला निकाला जाता है, कभी-कभी उस इलाके की जमीन भी धँस जाती है। घर-द्वार ढह जाते हैं। कोयला निकाल कर खाली जगह को बालू से भर देना पड़ता है। इन इलाकों में भी हल्की-फुल्की लकड़ी और टीन से मकान बनाना अच्छा होता है। मरियम ने अपने मौसाजी से सब सुना है। वे कोयले की खान में काम करते हैं। मरियम के गाँव में बाढ़ आती है। इसीलिए आजकल सभी अपने बरामदे को ऊँचा बनाते हैं। पक्का मकान बनाए तो कोई निचले तल्ले पर मकान ही नहीं बनाता। कुछ पिलरों पर छत ढलवा लेते हैं। उसके ऊपर दो तल्ले पर रहने का मकान बनवाते हैं। रूपक के दादा जी सागर के किनारे रहते हैं। वहाँ बहुत तेज आँधी चलती है। उनका पक्का मकान एक तल्ले का ही है। आँधी में ऊँचे मकान को ज्यादा क्षति पहुँचती है।

यह कहानी सुनकर शिक्षिका ने कहा- हाँ, अगर जरूरत पड़े तो बहुत ही मजबूत और ऊँचा मकान बनाया जा सकता है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

आपदा प्रवण अंचलों में घर बनाने से क्या-क्या क्षतियाँ हो सकती हैं? चर्चा करो और लिखो :

| किस अंचल का घर? | क्या-क्या आपदाएँ हो सकती हैं? | क्या-क्या क्षतियाँ हो सकती हैं? | किस-किस तरह की सावधानियाँ बरतनी चाहिए? |
|---|---|---|---|
| | | | |

# खुले आसमान के नीचे

आँधी से मकान गिर जाता है। बाढ़ आने से घरों में पानी घुस आता है। तब घर-द्वार छोड़कर चले जाना पड़ता है। दादी माँ को तीन बार इस तरह चले जाना पड़ा था। अन्तिम बार जब वे लोग गए थे, तब केतकी के पिताजी बहुत छोटे थे। उस बार स्कूल की छत पर बीस दिन रहना पड़ा था। केतकी सुनकर अवाक रह गई थी। दूसरे दिन उसने स्कूल में पूरी घटना सबको सुनाई।

शिक्षिका ने कहा- ऐसा तो बस आँधी-पानी के कारण हुआ। प्राचीन काल के लोगों को कैसे रहना पड़ता था, मालूम है?

हमीद ने कहा-जानता हूँ मैडम। गुफाओं में रहते थे। अभी की तरह घर-द्वार नहीं था।

ठीक कहते हो। मगर गुफाओं में भी शान्ति नहीं थी। कुछ दिनों बाद वहाँ भी भोजन खत्म हो जाता था।

-तब दूसरी जगह चले जाते थे?

-हाँ, इस तरह घूमते-फिरते रहने वाले जीवन को ही यायावर जीवन कहा गया है। थोड़ा-बहुत सामान और पालतू पशुओं को लेकर वे लोग निकल पड़ते।

–रात कहाँ बिताते थे?

–खुले आसमान के नीचे रहते। पेड़ों के नीचे भी रहते। छोटी-मोटी गुफा में भी रह लेते। कभी-कभी तंबू में भी रहते।

–तंबू कैसे बनाते? कपड़े तो थे नहीं!

–पशुओं की खाल जोड़कर तंबू बनाते थे। बच्चों को तंबू के भीतर रखते और बड़े लोग बारी-बारी से बाहर पहरा देते।

–पहरा क्यों देते?

–ताकि दूसरे दल के लोग आकर भेंड़-बकरियाँ लेकर न चले जाएँ। इसके अलावा शेर-बाघ का डर तो था ही।

–क्यों? वनों से दूर जाकर तंबू क्यों नहीं गाड़ते थे?

–दूर कैसे जाते? चारों तरफ तो वन ही वन था। असल में कष्ट झेलते हुए ही लोगों ने सीखा कि घर की जरूरत है। घर बनाने के लिए सुरक्षित जगह चाहिए।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

संकट की स्थिति में पड़कर मनुष्य कैसे अपने रहने की जगह बदलते थे। इस संबंध में तुम क्या सोचते हो? नीचे लिखो :

| पहले के लोग क्यों बार-बार अपने रहने की जगह बदलते थे? | जगह बदलने में क्या-क्या मुश्किलें आती थीं? |
|---|---|
| | |

पिछले दिन की बातें ही अणिमा के मन में घूम रही थीं। शिक्षिका के कक्षा में आते ही उसने कहा- बाघ-शेर मौका मिलते ही मनुष्यों को खा लेते थे, है न?

-यह डर तो था ही। इसके अलावा ये गुफाएँ और जंगल तो बाघ-शेरों के लिए भी रहने की जगह थी!

रफिक ने कहा- बाघों-शेरों को भी रहने के लिए घर-द्वार चाहिए!

बैशाखी ने कहा-सबको चाहिए। मधुमक्खियाँ भी अपने लिए छत्ता बनाती हैं, देखा ही होगा।

रबीन ने कहा-चिड़ियों का घोंसला। हर प्रकार की चिड़ियाँ अपने लिए अलग-अलग ढंग से

घोंसला बनाती हैं।

एलिस ने कहा-खेतों मे चूहों का बिल देखा होगा। मैंने भी देखा है। चींटियों का डीह, दीमकों का डीह भी तो घर ही है।

शिक्षिका ने कहा- वाह! तुमलोगों को तो बहुत से पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों के घरों के बारे में मालूम है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

पशु-पक्षी, कीट-पतंगों के बारे में तुमलोग जो भी जानते हो, नीचे के चौखाने में लिखो :

| पशु-पक्षियों,कीट-पतंगों व उनके रहने के स्थान | निवास-स्थल का चित्र | किस-किस चीज से बना है? | कहाँ देखा जाता है? |
|---|---|---|---|
| | | | |

# परिवार और शाखा-प्रशाखा

सुमना आज बहुत खुश है। छोटे भाई को साथ लेकर दादी माँ, चाचा और चाची आई हैं। सुमना अब दीदी बन गई है! कक्षा में आते ही सुमना ने सबको बताया। सुनकर शिक्षिका ने कहा- मतलब, तुम्हारे परिवार में एक सदस्य और बढ़ गया।

हामिद ने पूछा- परिवार मतलब?

तितली ने कहा- मालूम नहीं है? घर के सभी सदस्यों को मिलाकर एक परिवार होता है।

शिक्षिका ने कहा- ठीक ही कहती हो।

चयन ने पूछा- सुमना के परिवार में उसके दादा जी सबसे बड़े हैं? दादा से ही परिवार शुरू होता है?

अभी दादा और दादी सबसे बड़े हैं। पहले उनके माँ-पिता थे। अब दादा-दादी से शुरू करके परिवार की शाखा-प्रशाखा कैसे दिखानी पड़ती है, उसे देखो।

इतना कहकर शिक्षिका ने बोर्ड पर लिखना शुरू कर दिया। सुमना से पूछा- तुम्हारे माँ-पिता जी कितने भाई बहन हैं?
-पिता जी, चाचा जी और बुआ जी। और माँ तीन भाई-बहन हैं। माँ, मामा जी और मौसी जी।

-और तुमलोग?

-दीदी और मैं। और आज चाचाजी छोटे भाई को ले आए हैं!

-इसी बीच शिक्षिका ने बोर्ड पर बहुत कुछ लिख डाला था। कहा- यह रहा सुमन के परिवार की शाखा-प्रशाखा। देखो और समझो।

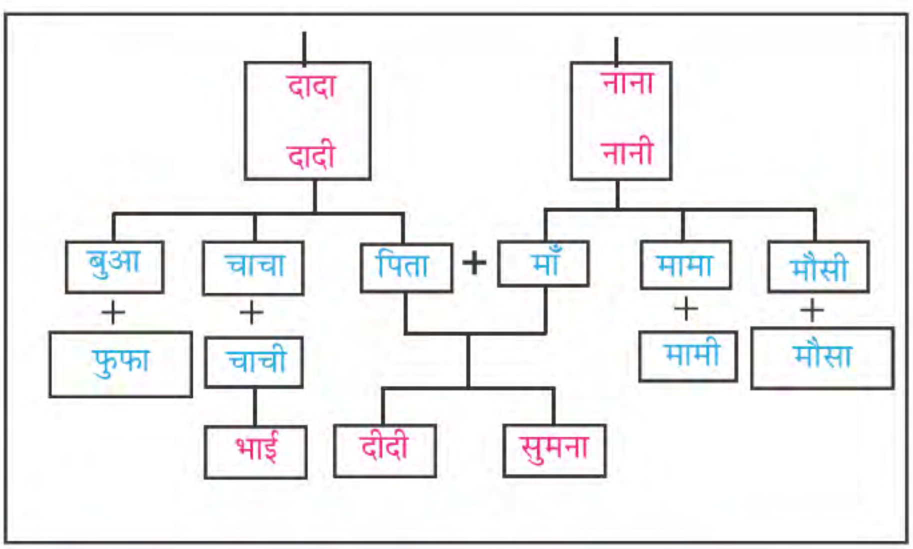


सबने ध्यान से बोर्ड पर देखा। कुछ देर बाद सानिया ने कहा- मैडम, मैं अपने परिवार की शाखा-प्रशाखा लिखकर दिखाऊँ?

-अवश्य दिखाओ।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

परिवार की शाखा-प्रशाखा जो लिखी हुई है, उस पर चर्चा करो। उसके बाद अपने परिवार की शाखा-प्रशाखा लिखो :

## परिवार की शाखा–प्रशाखा व निकट संबंधी

सानिया ने अपने परिवार की शाखा–प्रशाखा लिखकर दिखलाई। दादा–दादी सबसे बुजुर्ग हैं। वह स्वयं दो भाई–बहन हैं।

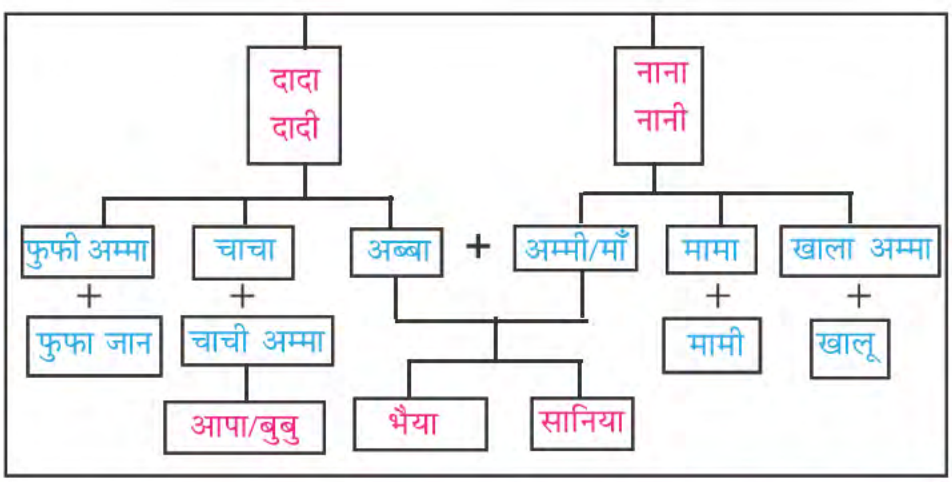

सुमना ने कहा- मैडम, चाचा की शादी के बाद चाचीजी हमारे परिवार की सदस्य हुईं।

–इसी तरह नया परिवार बनता है।

चिन्मय ने कहा- अच्छा मैडम। हमारी मौसी हैं। सौम्य, मौसी का बेटा है। मेरा अच्छा दोस्त है। कोलकाता में रहता है। हमारे परिवार की शाखा-प्रशाखा में उनका नाम रहेगा?

–रख सकते हो। मगर इस तरह परिवार की शाखा-प्रशाखा बहुत बड़ी हो जाएगी। तुम उन्हें निकट संबंधी कह ही सकते हो।

अणिमा ने पूछा- तो क्या फुआ के बेटा-बेटी भी निकट संबंधी हैं?

रुहूल ने पूछा- मामा के बेटा-बेटी भी?

– ये सब निकट संबंधी हैं। मगर परिवार की शाखा-प्रशाखा में इनका नाम भी लिख सकते हो।

मानस ने कहा- समझ गया। मैं अपने ममेरा, फुफेरा भाई-बहनों को निकट संबंधी कहूँगा।

## नाम लिखकर परिवार की शाखा-प्रशाखा की पहचान

तूफान की दीदी एक पुस्तक पढ़ रही थी। पूरे पृष्ठ पर छोटे-छोटे अक्षरों में परिवार की शाखा-प्रशाखा दिखाई गई थी। शुरू में ही लिखा हुआ था –उपेन्द्र किशोर रायचौधुरी। तूफान इस नाम से परिचित था। 'टुनटुनी की पुस्तक' इनकी लिखी हुई थी। उससे नीचे और एक नाम था- सुकुमार राय। उन्होंने ही 'आबोल ताबोल' लिखा है। पहचाना नाम था इसीलिए तूफान ने ध्यान से देखा। उपेन्द्र किशोर व विधुमुखी देवी की छह सन्तानें थीं। सबसे बड़ी थीं सुखलता। उसके बाद सुकुमार। सुकुमार के और चार भाई-बहन हैं। सुकुमार व सुप्रभादेवी के एकमात्र पुत्र थे सत्यजित राय। इस नाम को भी तूफान जानता था। फेलूदा की कहानियाँ और सिनेमा में 'गुपि गाइन बाघा बाइन' (गोपी गवैया बाघा बजैया) उसे खूब प्रिय थी। स्कूल जाकर उसने सब बताया। शिक्षिका ने सुनकर कहा- नाम लिखकर इसी तरह परिवार की शाखा-प्रशाखा दिखाई जाती है। तुमने जो देखा है वह उपेन्द्र किशोर रायचौधुरी परिवार की शाखा-प्रशाखा है।

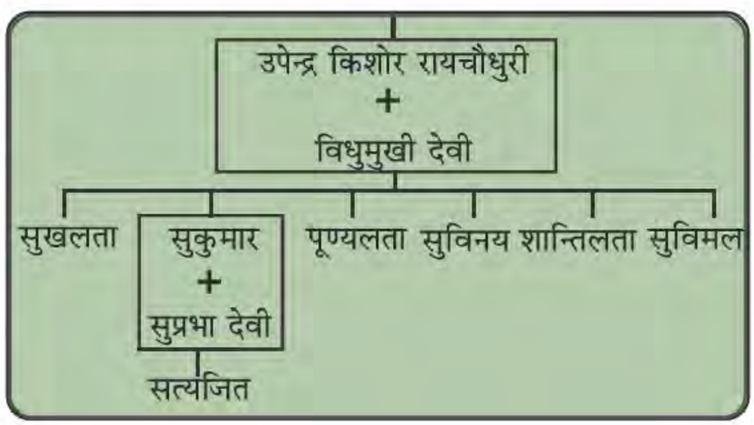


तूफान ने पूछा- किन्तु मैडम, एक ही क्यों? बाकियों का कहाँ है?

–बाकियों का नहीं दिखाया गया है। तुम उनके परिवार की शाखा-प्रशाखाओं को बोर्ड पर लिखकर दिखाओ।

तूफान ने लिखा। उसे देखकर केतकी ने कहा- हमलोग भी नाम देकर अपने परिवार की शाखा-प्रशाखाओं की दिखाएँगे।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१. नाम लिखकर अपने परिवार की शाखा-प्रशाखा तैयार करो :-

२. तुमलोग अपने निकट संबंधियों के बारे में नीचे लिखो :-

| निकट संबंधी (नाम और सम्पर्क) | कहाँ रहते हैं ? |
|---|---|
| | |

## सबके लिए हम सब

केया जब स्कूल जा रही थी। तब उसने देखा कि बगीचे में भाई के हाथ में प्लास्टिक का बैट है और दादी माँ बॉल फेंक रही हैं। बॉल चुनकर ला रही हैं। केया ने कहा– ए भाई! दादीजी से परिश्रम करवा रहे हो?

भाई ने कहा– वाह! मैं भी तो अभी जाकर दादी के पके बाल चुन दूँगा!

दूसरे दिन केया जब स्कूल से घर लौटी, तो उसकी आवाज सुनकर दादी माँ ने आवाज दी– बबुनी, सुई में धागा डाल देना।

केया दादीमाँ के कमरे में गई। दादीमाँ वहीं बैठकर कन्था सिलाई कर रही थीं। सुई में धागा डालती हुई केया ने कहा– कमर और पीठ दर्द हो, तो मुझे मत कहना।

दादीमाँ ने हँसकर कहा– तुम्हारे पिताजी ने ढेर सारे कम्बल और चादर खरीदे हैं न? मगर तुम्हारे दादा जी जाड़े की शुरुआत और अन्त में कपड़े का कन्था माँगेंगे ही। कन्था तो बनाना ही होगा! दर्द हो, तो तुम जरा मालिश कर देना!

तभी फोन की घण्टी बज उठी। दादीमाँ ने कहा–जाओ, फोन उठाओ। तुम्हारी माँ होगी।

यह केया भी जानती थी। फोन उठाते ही माँ ने कहा– हाथ–मुँह धोकर खा लो। दादीमाँ से कहो, बता देंगी।

केया ने अपने घर की बातें स्कूल में बताईं। शिक्षिका ने सुनकर कहा– तुम्हारे परिवार में सभी एक–दूसरे को बहुत प्यार करते हैं। है न?

केया ने कहा– सभी दूसरे के काम में मदद करते हैं।

–तुम कैसे दूसरों की मदद करती हो?

–कोई पीने का पानी माँगे, तो देती हूँ। कुछ लाना हो, तो दुकान चली जाती हूँ। घर से कोई बाहर जाए, तो दरवाजे की कुंडी लगा देती हूँ। कोई आए, तो दरवाजा खोलती हूँ। बगीचे में लगे पौधों में पानी देती हूँ। कोई बीमार पड़ जाए, तो माथे पर जल–पट्टी देती हूँ।

–वाह! घर में सबके लिए तुम बहुत काम करती हो।

इसके बाद मैडम ने ब्लैकबोर्ड पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा– सबके लिए हम सब। हम सबको दूसरों के लिए जीना चाहिए।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

घर में सभी एक-दूसरे की किस तरह मदद करते हैं? नीचे लिखो :-

| परिवार के लोग | वे कैसे दूसरों की मदद करते हैं? | वे दूसरों की क्या मदद करते हैं? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# पक्षियों का परिवार

पीकू ने अचानक ध्यान दिया कि कौवे लगातार काँव-काँव किए जा रहे थे। बाहर निकलकर देखा, तो एक बिल्ली थी। पेड़ के तने से पैर टिकाए खड़ी थी। तीन कौवे मिलकर एक बिल्ली को दौड़ा रहे थे। उसे पेड़ पर चढ़ने नहीं दे रहे थे। वह चढ़ भी नहीं पा रही थी। पीकू ने सोचा, कौवे इतने गुस्से में क्यों हैं?

पीकू ने अब पेड़ के ऊपर देखा। पेड़ की एक डाली पर कौवे का घोंसला था। छोटे-छोटे कई बच्चे भी थे। एक कौवा उन बच्चों के पास बैठा हुआ था। दूसरे सारे कौवे बिल्ली को भगाने में लगे थे।

अब पीकू की समझ में आया। बिल्ली, कौवे के बच्चे तक न पहुँच पाए, इसीलिए सारे कौवे बिल्ली को भगाने के लिए आ पहुँचे थे। माँ-कौवा बच्चे को सम्भाल रही थी।

उसने सोचा, क्या सारे कौवे एक ही परिवार के सदस्य हैं?

स्कूल में पीकू ने सबको बताया।

डमरू ने कहा- हाँ, मनुष्य की तरह चिड़ियों का भी परिवार है। गौरैये का भी है।

शिक्षिका को यह सब सुनकर हँसी आ गई। कहा- हो सकता है सारे कौवे एक ही परिवार के न हों। एक मुहल्ले के होंगे।

तुम्हारे मुहल्ले में किसी पर कोई विपत्ति आ जाए, तो क्या तुमलोग उनकी मदद नहीं करते ?

–करते हैं।

–यहाँ भी वही बात है। मगर पंछियों का भी परिवार होता है। तुमने देखा होगा, कौवे हमेशा अपने बच्चे की देखभाल में लगे रहते हैं। कुछ बड़े होते ही उन्हें खिलाते हैं। उड़ना सिखाते हैं। बड़े होते ही पशु–पाक्षियों के बच्चे पूरी तरह मुक्त हो जाते हैं।

बैशाखी ने कहा– कुत्ते–बिल्ली भी अपने छोटे बच्चों की काफी देख–रेख करते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुमलोग मनुष्य के अलावा और भी बहुत से प्राणियों के बारे में जानते हो। पशु, पक्षी, मक्खियों की तरह कीट–पतंग भी होते हैं। इनके परिवार के संबंध में भी तुम्हें मालूम है। नीचे उन्हीं प्राणियों के संबंध में लिखो :–

| प्राणियों के नाम | उनके परिवार के बारे में तुमने क्या देखा है ? | उनके परिवार के बारे में क्या जानते हो ? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

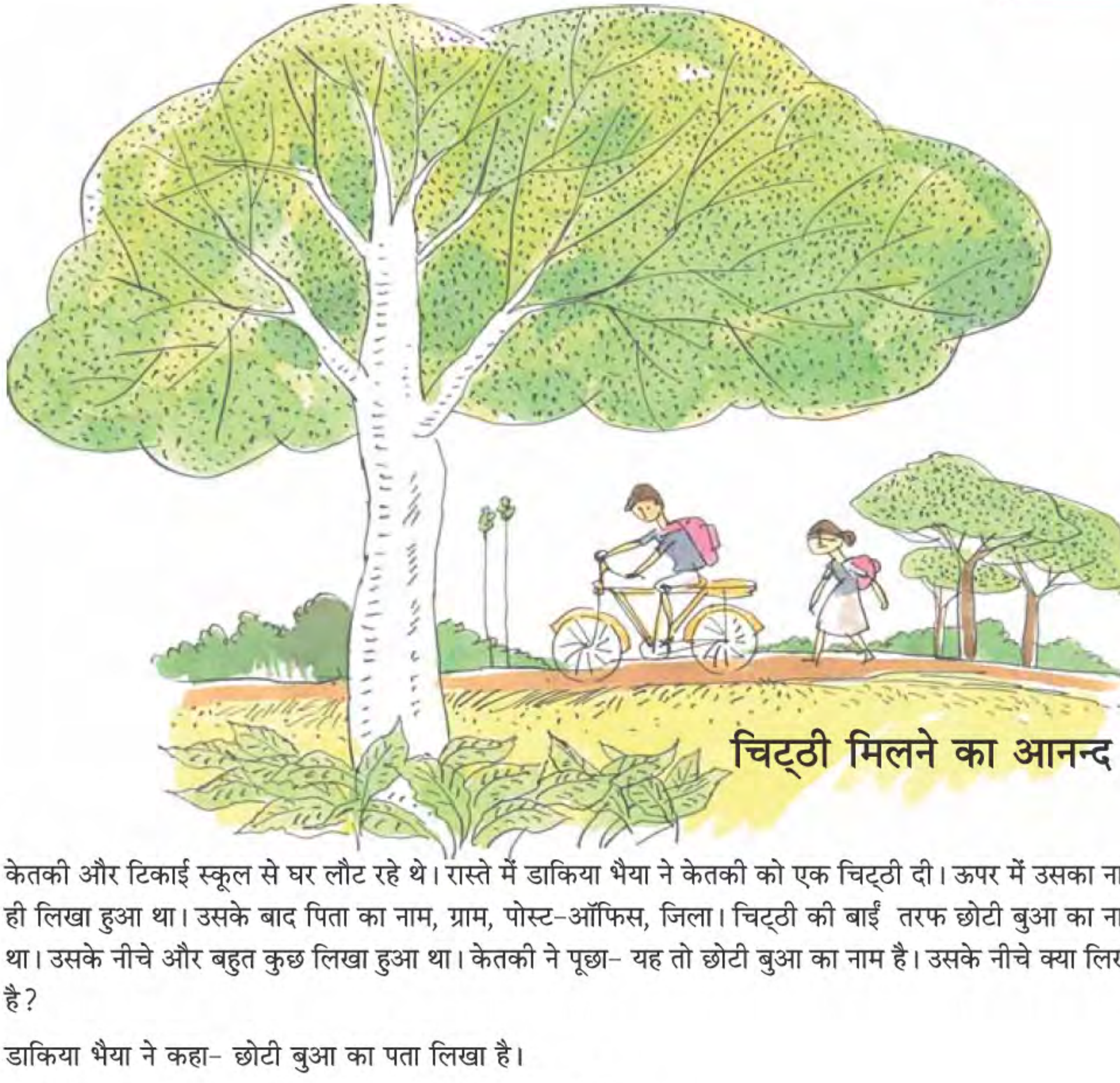

# चिट्ठी मिलने का आनन्द

केतकी और टिकाई स्कूल से घर लौट रहे थे। रास्ते में डाकिया भैया ने केतकी को एक चिट्ठी दी। ऊपर में उसका नाम ही लिखा हुआ था। उसके बाद पिता का नाम, ग्राम, पोस्ट–ऑफिस, जिला। चिट्ठी की बाईं तरफ छोटी बुआ का नाम था। उसके नीचे और बहुत कुछ लिखा हुआ था। केतकी ने पूछा– यह तो छोटी बुआ का नाम है। उसके नीचे क्या लिखा है?

डाकिया भैया ने कहा– छोटी बुआ का पता लिखा है।

केतकी समझ गई। छोटी बुआ शिवनाथ बोस के घर में रहती है।

केतकी दूसरे दिन जब स्कूल गई, अपने साथ पोस्टकार्ड भी लेकर गई। सुमना के चाचा जी भी कोलकाता से ऐसी ही चिट्ठी भेजते हैं।

सुमना ने कहा– यह केतकी की चिट्ठी है। इसीलिए उसका नाम दाहिनी तरफ लिखा हुआ है।

भेजने वाले का नाम बाईं तरफ होता है। इसी तरह चिट्ठी में पता लिखा जाता है। शहर के घरों का नम्बर होता है। घर जिस रास्ते के किनारे बना होता है, उस रास्ते का नाम भी होता है।

डमरू ने कहा– पोस्ट–ऑफिस का नम्बर होता है। कोलकाता के पोस्ट–ऑफिस का नम्बर ७०० से शुरू होता है।

उसके बाद और तीन संख्या होती है।

–देवकी की बुआ जहाँ रहती हैं, वहाँ के पोस्ट–ऑफिस का नम्बर ०२८ है?

–हाँ! मेरे चाचाजी के घर के पते का पिन कोड ७०००६४ है। इसका मतलब वहाँ के पोस्ट ऑफिस का नम्बर ०६४ है।

उसी समय शिक्षिका कक्षा में आईं। सब सुनकर उन्होंने कहा–पोस्ट–ऑफिस शब्द अँग्रेजी का है। हिन्दी में इसे डाकघर कहते हैं। देश के सभी बड़े डाकघरों का पिनकोड नम्बर होता है। यहाँ का पिन कोड ७१२४१९ है। इसी पिन कोड नम्बर के अन्तर्गत कई छोटे डाकघर होते हैं। अब तुमलोग चिट्ठी में पता लिख सकते हो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

दोस्तों और निकट संबंधियों का पता नीचे लिखो :

| तुम्हारा अपना पता | दोस्तों का पता | निकट संबंधियों का पता |
|---|---|---|
| | | |

# डाकघर को पहचानना सीखो

निताई जब पता लिखने बैठा, तो उसने सोचा, हमारे गाँव में तो डाकघर नहीं है! तमिम के गाँव में डाकघर है, लोग वहीं जाते हैं। मगर डाकघर है कहाँ? तमिम से उसने पूछा। तमिम ने कहा–हसन चाचा के घर के बगल से जाओगे। उसके बाद सीधे दक्षिण की ओर।

निताई की समझ में नहीं आया। तब शिक्षिका ने कहा– तमिम, क्या तुम डाकघर जाने वाले रास्ते का मानचित्र बना सकते हो?

तमिम ने कहा– पर मैडम, डाकघर का मानचित्र कैसे बनाऊँगा? वह तो बहुत दूर है!

–सारी चीजें दिखाने की जरूरत नहीं है। दिशा संकेत ठीक रखोगे। रास्ते दिखाओगे। जहाँ दो रास्ते मिलते हैं, वहाँ से किधर जाना है, यह समझ में आना चाहिए। आस-पास के तालाब, धानखेत, मैदान, बड़े-बड़े घर आदि दिखाओ।

–इनके चिह्न ठीक कर लें?

–हाँ, अब कोशिश करो।

तमिम और निताई ने मिलकर संकेत चिह्न ठीक कर लिए। उसके बाद डाकघर जाने वाले रास्ते का मानचित्र बनाया। पहले पूर्व की ओर। तीन रास्ते के मोड़ से उत्तर-पूर्व की ओर। उसके बाद बड़े-बड़े दो घर हैं। एक घर के बाद सीधे दक्षिण की ओर पक्की सड़क चली गई है।

निताई ने कहा– आज मैं घर जाते समय डाकघर को पहचानते हुए जाऊँगा।

किसे पत्र लिखना चाहते हो? यहाँ दिए खाली पोस्टकार्ड पर उसका पता लिखो। सही जगह पर अपना पता लिखो :

तुमलोग अपना डाकघर पहचानते हो? एक बार डाकघर जाओ। रास्ता पहचान लो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१) घर से स्कूल आने के रास्ते में जो भी चीजें देखते हो, उसका एक संकेत चिह्न निश्चित कर लो। उस रास्ते का मानचित्र बनाओ :

| चीज | चिह्न | |
|---|---|---|
| तालाब | | |

२) घर अथवा स्कूल से डाकघर जाने के रास्ते का मानचित्र बनाओ।

# अनजान रास्ते पर

कक्षा में सबने अपने द्वारा बनाए गये मानचित्र दिखाए। किसने कैसा बनाया, एक-दूसरे ने देखा।

शिक्षिका ने कहा- पता लिखना हुआ। मानचित्र बनाना हुआ। अब असली बात है, नई जगह पर पहचानते हुए जाना!

अमिना ने कहा- मैडम, कल मैं अकेली एक नई जगह जाऊँगी।

-लोगों से पूछते हुए जाओगे। सबसे पहले पूछोगी कि गाँव कहाँ है? गाँव पहुँचकर जिसके घर जाना चाहती हो, उनका नाम बताओगी। पूछोगी कि घर कहाँ है? इस तरह पहचानना भी हो जाएगा।

घर जाकर अमिना ने शिक्षिका की बात सबको बताई। माँ ने सुनकर आश्चर्य प्रकट किया। कहा- दूर किसी अनजाने गाँव में अकेली क्यों जाओगी? तुम्हारा क्या कोई नहीं है?

काफी बातचीत के बाद जाना तय हुआ। अपने ही पुराने घर झिंगापोता गाँव में। वहीं जाना होगा। माँ भी साथ जाएँगी। मगर रास्ता नहीं बताएँगी। बस से उतरने के बाद, जिससे जो भी पूछना होगा, वह अमिना ही पूछेगी।

अमिना ने पता पहले ही लिख लिया था। बड़े चाचा लोग वहीं रहते हैं।

बस से उतरने के बाद तीन गाँव पार करते हुए जाना पड़ता है। अमिना ने केवल सात लोगों से पूछा और वहाँ पहुँच गई। बेटी की काबिलियत देखकर माँ आश्चर्यचकित थीं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

पता समझकर किसी अनजान घर में जाओ। लौटकर रास्ते का मानचित्र बनाओ :-

| चीज | चिह्न | तुम्हारा पता | जहाँ गए थे, वहाँ का पता |
|---|---|---|---|
| | | | |

## घर बदल जाता है

दूसरे दिन अमिना बस स्टॉप से उस घर तक का मानचित्र बनाकर ले आई। स्कूल में सबको दिखाया। रबीन ने कहा- यह तुमलोगों का घर है पर पहले कभी गई नहीं ?

डमरू ने कहा- तुमलोग वहाँ से यहाँ क्यों चले आए?

इसका कारण अमिना को मालूम था। कहा- वहाँ बहुत बाढ़ आती है।

अब मौमिता ने कहा- बहुत पहले हमलोगों का भी घर झिंगापोता में था। दादी से सुना है।

सबीना ने पूछा- तुमलोग भी बाढ़ के कारण चले आए थे?

-यह तो नहीं मालूम। हमारे दादा जी यहाँ के स्कूल में पढ़ाते थे। उन्होंने इसीलिए यहीं घर बना लिया।

शिक्षिका ने आकर सारी बातें सुनीं। फिर उन्होंने कहा- बहुत से परिवार हैं, जिनका ठिकाना बदलता रहता है। नाना कारणों से एक जगह से दूसरी जगह चले जाते हैं। मैं ही तो इस गाँव में नौकरी करने आई हूँ।

सुमना ने कहा- मेरे चाचाजी नौकरी करने कोलकाता गये हैं।

- तुम्हारे परिचित और भी लोग दूसरी जगह से यहाँ आये हैं। कई लोग अन्यत्र कहीं चले गए हैं। इस संबंध में तुमलोग जितना जानते हो, सोचो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुम्हारी जान-पहचान में किसने अपना पता बदला है? उस संबंध में नीचे लिखो :-

| किनकी बात कर रहे हो? | कहाँ से आये थे और कहाँ चले गए हैं? | क्यों आए थे और क्यों चले गए हैं? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# जीविका की आदिम कथा

केतकी का परिवार पहले पड़ोसी राज्य में रहता था। बहुत दिन पहले उसके दादाजी के पिताजी काम की तलाश में यहाँ आए थे। दूसरे के खेतों में कृषि का काम करते थे। यहाँ बहुत काम मिल जाता था। आय भी बहुत होती थी। केतकी के दादा जी की जीविका का साधन भी दूसरे के खेतों में काम करना ही था। पर केतकी के पिताजी पंचायत में नौकरी करते हैं। अब उनलोगों की जीविका बदल गई है।

स्कूल में यह बात सुनकर शान्तनु ने कहा– हमारे दादाजी स्कूल में पढ़ाते थे। पर पिताजी घर बनाने वाले सामानों की दुकान चलाते हैं। चाचाजी भी दुकान पर बैठते हैं। अभी व्यवसाय ही हमलोगों की जीविका है।

अली ने कहा– मेरे भैया गमछा बनाते थे। अब्बा टेलरिंग की दुकान चलाते हैं। जीविका बदल गई है।

चीनू ने कहा मेरे दादाजी केश काटते थे। पिताजी अब बस के ड्राइवर हैं। ताऊजी ने एक सैलून खोला है। वे अभी भी केश काटते हैं।

आकाश ने कहा– मेरे दादाजी मछली पकड़ते थे। बाजार में बेचते थे। पिताजी भी मछली पकड़ते हैं, बाजार में बेचते हैं।

कक्षा में आकर शिक्षिका ने उनकी बातें सुनीं। उसके बाद आकाश से कहा– तुम्हारी पारिवारिक जीविका अब भी नहीं बदली है। हो सकता है, तुम बड़े होकर बदल डालो।

यह सुनकर केतकी ने कहा– मैडम, पारिवारिक जीविका क्या होती है?

–लम्बे समय से कुछ परिवार के लोग एक ही प्रकार का काम कर रहे हैं। जैसे लोहार, कुम्हार, कृषक– और भी बहुत काम हैं। इन्हें ही पारिवारिक जीविका कहते हैं।

एलिस ने कहा– अब पहले जैसी पारिवारिक जीविका नहीं है! एक ही परिवार के लोग अलग–अलग काम करते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

अपने और दोस्तों की पारिवारिक जीविका, वर्तमान जीविका के संबंध में जितना जानते हो, नीचे लिखो :

| नाम | पारिवारिक जीविका | वर्तमान जीविका |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

## लुप्त होतीं जीविकाएँ

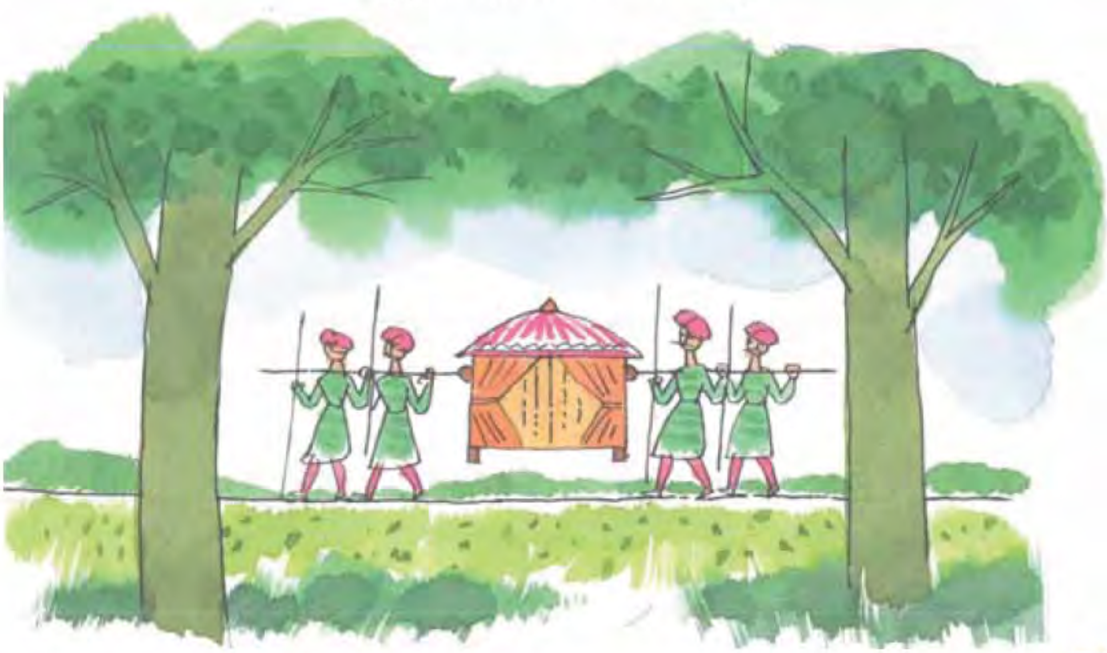

हिना ने सोचा, पहले तो बस चलती नहीं थी। फिर लोग ड्राइवर कैसे होते थे ? यह बात जब उसने घर में बताई तो दादी माँ ने कहा- पहले लोग पालकी पर चढ़कर आया-जाया करते थे। पालकी वाहक होना भी एक जीविका थी। दादा जी कहते थे- घोड़ागाड़ी भी थी। कोचवान उस गाड़ी को चलाया करते थे। वह भी एक जीविका ही थी। कुछ देर बाद हिना के भैया निकल गए। वे कैटरर का काम करते हैं। शादी-ब्याह वाले घर में कैटरिंग सेवा का काम करते हैं। उसके पिताजी अपनी दुकान खोलने चले गए। वे दुकान में फोटोकॉपी का काम करते हैं।

हिना ने दूसरे दिन स्कूल में शिक्षिका को सारी बातें बताईं। उन्होंने कहा-हाँ, कुछ जीविकाएँ अब नहीं रहीं। वे लुप्त होती जा रही हैं। कुछ जीविकाएँ पहले नहीं थीं, अब हुई हैं। वे सब नई जीविकाएँ हैं।

निताई ने कहा-मैडम, कम्प्यूटर की दुकान खोलना भी एक नई जीविका है।

बैशाखी ने कहा-पहले कुछ फेरीवाले शंख की चूड़ियाँ बेचा करते थे। फेरीवाले घूम-घूम कर कहते-शंख की चूड़ी

ले लो। बड़ी दादी माँ से सुना है।

–हाँ! शाँखा (शाँखा की चूड़ियाँ) फेरी करना, इस अंचल की लुप्त हो चुकी जीविका है। पर कहीं दूसरी जगह इस तरह का फेरीवाला हो भी सकता है।

डमरू ने पूछा– बहुत लोग बल्लम से शिकार करते थे न?

–हाँ ! शिकार करना एक प्राचीन जीविका है। पर अभी वन्यप्राणियों की संख्या अवश्य ही बहुत कम हो गई है। इसीलिए शिकार करना निषेध है। कुम्हार का काम, लोहार का काम आदि प्राचीन जीविका है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

प्राचीन जीविका, लुप्त जीविका, नई जीविका के संबंध में चर्चा करो। चर्चा के बाद नीचे लिखो :

| प्राचीन जीविका का नाम एवं काम | लुप्त जीविका का नाम एवं काम | नई जीविका का नाम एवं काम |
| --- | --- | --- |
| | | |

# नीले आकाश का रहस्य

मन्दिरा और इमरान पेड़ पर बने मधुमक्खियों के छत्ते देख रहे थे। मधुमक्खियों का आना-जाना लगा हुआ था। उड़ती-उड़ती एक मधुमक्खी आकाश में खो गई। दूसरी छत्ता में आ घुसी। मन्दिरा ने कहा- उनकी तरह नीले आकाश में खो जाने की इच्छा तुम्हारी नहीं होती?

इमरान भी यही सोच रहा था। कहा- होती है!

-इच्छा होती है, उड़ते-उड़ते सफेद मेघों के पार चले जाएँ!

-अच्छा, बताओ तो सफेद मेघ के उस पार आकाश का रंग क्या है?

नीला ही होगा। वैसे भी आकाश का रंग नीला ही है। चाचा कह रहे थे, मेघों में पानी का कण होता है। कम और छोटे-छोटे जलकण हों, तो मेघों का रंग सफेद होता है।

दूसरे दिन इमरान ने स्कूल में शिक्षिका से सारी बातें बताईं। सबने सुना।

शिक्षिका ने कहा- बहुत छोटे-छोटे जलकण हों तो मेघों का रंग काला होता है। और बड़े-बड़े जलकण हों, तो मेघों का रंग धूसर हो जाता है।

अली ने कहा- क्या आकाश का रंग नीला होता है? रात में भी क्या नीला दिखता है?

सुमि ने कहा-ठीक! रातों में तो काले आकाश पर तारे झिलमिलाते हैं।

-मगर चाँद के नजदीक चारों तरफ प्रकाश दिखता है।

हारान ने कहा- मैडम, दिन में सूरज के आस-पास का आकाश ठीक-ठीक नीला नहीं दिखता। सूरज से दूर का आकाश नीला होता है।

शिक्षिका ने कहा- ठीक कहते हो। मगर तुमने क्या सूरज की ओर देखा था? सीधे सूरज की ओर देखने से आँखों को

क्षति पहुँचती है।

सबूज ने पूछा– कैसे पता चले कि किस दिशा में सूरज है?

राबिया ने कहा– अपनी छाया को देखना। छाया के ठीक उलटी तरफ सूरज होता है।

–ठीक कहती हो। अब बताओ कि शाम को सूरज किस दिशा में होता है?

–पश्चिम की तरफ। तब मेरी छाया पूर्व की तरफ होगी।

–ठीक! तब अपनी छाया की ओर मुँह करके खड़े होने से आगे की ओर पूर्व, पीछे पश्चिम, दाहिने दक्षिण एवं बाएँ उत्तर दिशा होगी। घर जाकर और अच्छी तरह समझ लेना। छुट्टी के दिनों में कुछ घण्टों के अन्तराल पर अपनी छाया को देखोगे। इसके साथ ही यह ध्यान रखोगे कि सूरज कब किस तरफ था।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

विभिन्न समय, विभिन्न ऋतुओं में, विभिन्न जगहों में आसमान का रंग तुमने कैसा देखा है, उसे नीचे लिखो :

| किस ऋतु में देखा है? | किस समय देखा है? | आसमान की किस तरफ? | कैसा रंग? |
|---|---|---|---|
| ग्रीष्म | सुबह | पश्चिम | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

# सूरज से प्रकाश, सूरज से ताप

यह कैसी बात है? अलग-अलग समय में आसमान का रंग भी अलग-अलग होता है! सन्दीप ने पूछा, मैडम आसमान का रंग क्या बदल जाता है?

शिक्षिका ने कहा- असल में आसमान का कोई रंग ही नहीं होता। हवा बहती है। हवा में छोटे-छोटे धूलकण होते हैं। दिन में इसके ऊपर सूरज का प्रकाश पड़ता है। इसीलिए रंग दिखता है। रात के आसमान में सूरज नहीं होता। इसीलिए आसमान काला होता है।

रबीन ने कहा- चाँद रहे, तो थोड़ा प्रकाश होता है। इसीलिए कुछ-कुछ दिखता है। है न?

केतकी ने कहा- चाँद का प्रकाश कम है। ज्यादा दूर तक नहीं दिख सकता। दिन के समय बहुत दूर तक की चीज दिखती है।

–अच्छी बात है। अमावस्या में आसमान पर चाँद नहीं होता। तब कितनी दूर तक आसमान दिखता है?

आगे कोई खड़ा भी हो, तो पहचान में नहीं आता।

–अगर आसमान में पूर्णिमा का चाँद रहे तो?

केतकी ने कहा– आठ–दस मीटर दूर कोई परिचित व्यक्ति खड़ा हो तो पहचाना जा सकता है।

हरान ने पूछा– आठ–दस मीटर का मतलब?

–तीन तल्ले मकान के नीचे से छत तक की दूरी आठ–दस मीटर होती है। पूर्णिमा की रात में नीचे से, छत पर खड़े व्यक्ति को पहचाना जा सकता है।

रफी ने कहा–ओह! एक बड़े से नारियल के पेड़ जितना ऊँचा होता है।

शिक्षिका ने कहा– अच्छा, पूरे दिन क्या प्रकाश एक जैसा ही दिखता है?

–नहीं, शाम को प्रकाश कम हो जाता है। गर्मी भी कम हो जाती है।

–सूरज का प्रकाश कम होते ही गर्मी कम हो जाती है?

–कभी–कभी मेघ छा जाए तो प्रकाश कम हो जाता है, पर गर्मी कम नहीं होती।

–ठीक कह रहे हो!

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

प्रकाश और गर्मी किस समय बढ़ती है और कम हो जाती है, उसे अच्छी तरह देखकर नीचे लिखो :

| समय | घटना | दिन में प्रकाश का बढ़ना–घटना | गर्मी का बढ़ना–घटना |
|---|---|---|---|
| सुबह | सूरज पूर्वी आकाश में | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

# दिन भर छाया का खेल

पृथा ने ध्यान से देखा कि उसकी छाया कब, कहाँ पड़ रही है? छाया उससे लम्बी है या छोटी है, इसे भी उसने देखा। छाया के ठीक उलटे सूरज था। यह भी समझकर लिखा कि सूरज कब कहाँ था? चित्र भी बनाया।

**सुबह ७ बजे :**
**छाया पश्चिम की ओर।**
**लम्बी छाया।**
**सूरज पूर्व की ओर**

स्कूल में सबको उसने दिखाया।

शिक्षिका ने कहा– इस चित्र के बदले एक सहज-सा चित्र बनाकर भी समझाया जा सकता है।

इतना कहकर शिक्षिका ने एक चित्र बनाया।

कहा–यह पृथा का छायाचित्र है।

एक रेखा पृथा है, एक रेखा सूरज से पृथा के सिर को छूती हुई चली गई। और एक रेखा पृथा की छाया है। सबने अच्छी तरह देखा। हमीद ने कहा–मैं भी बना सकता हूँ।

शिक्षिका ने पृथा से पूछा–सात बजे के बाद फिर छाया नहीं देखी तुमने?

पृथा ने कहा– उसके बाद दस बजे देखा था। स्कूल आने से पहले। तब सूरज पूर्व की ओर था, लगभग सिर के ऊपर।

इतना कहकर सुबह दस बजे वाली अपनी छाया, सूरज और अपना चित्र उसने दिखाया। चित्र देखकर हमीद ने सुबह दस बजे वाला पृथा का छायाचित्र बनाकर दिखाया।

**सुबह १०बजे :**
**छाया पश्चिम की ओर। छाया छोटी। सूरज पूर्व की ओर, लगभग सिर के ऊपर।**

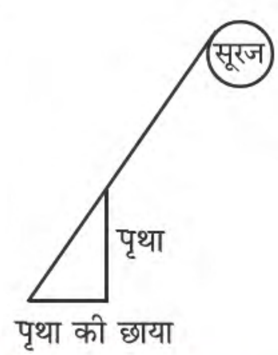


शिक्षिका ने कहा– वाह! तुमलोगों ने सीख लिया। छुट्टी के दिन तुम सबलोग देखोगे। पूरे दिन में छह बार देखोगे। देखकर रेखाचित्र बनाओगे।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

दिन भर में छह बार अपनी छाया देखो। तुमलोग, सूरज और अपना छायाचित्र बनाओ। किस समय का चित्र है, यह भी लिखो। अपनी कॉपी में भी बनाकर, लिखकर रख सकते हो :

# चाँद मामा की लुका-छिपी

चाँद को अच्छी तरह देखने के बाद पृथा ने सोचा, चाँद कहाँ से उगता है? शाम को पूरे आसमान पर उसने चाँद को ढूँढ़ा। कहीं नहीं मिला। माँ से कहा- माँ, आसमान पर तो मेघ है नहीं। फिर भी चाँद क्यों नहीं दिख रहा?

माँ ने कहा- कल तक अमावस्या थी! आज से शुक्लपक्ष शुरू है। आज पहली संध्या है। हमलोग जिसे शुक्लपक्ष की पहली तिथि कहते हैं। आज चाँद नहीं दिखेगा। कल शाम को देख सकती हो।

दूसरे दिन शाम को पृथा ने फिर देखा। सचमुच, पतली सी एक हँसिया की तरह चाँद उगा था। पश्चिम के आसमान में! माँ से उसने पूछा- माँ, चाँद पश्चिम में उगता है? सूरज की तरह पूर्व के आसमान में क्यों नहीं?

माँ ने हँसते हुए उत्तर दिया- हर दिन शाम को देखना। समझ जाओगी।

आज शुक्लपक्ष की द्वितीया है। इसके बाद तृतीया, चतुर्थी। इसी तरह आगे बढ़ेगा।

आधे घण्टे बाद पृथा फिर चाँद देखने गई तो अवाक रह गई। चाँद कहीं नहीं था।

उसके बाद पृथा ने तीन दिन लगातार चाँद को अच्छी तरह देखा। दिन-प्रतिदिन चाँद का आकार बढ़ रहा था। धीरे-धीरे मध्य आकाश की ओर बढ़ रहा था।

तीन दिन बाद। षष्टी की शाम। पृथा ने चाँद को ध्यान से देखा। नारंगी की फाली की तरह दिख रहा था। माँ को दिखाया। माँ ने कहा- जैसे-जैसे पूर्णिमा की ओर बढ़ेगा, वैसे-वैसे चाँद का आकार भी बढ़ता जाएगा।

दूसरे दिन स्कूल में पृथा ने सबको बताया।

स्वपन ने कहा- मैडम, मैंने भी देखा है। पूर्णिमा की संध्या में चाँद बिल्कुल पूर्व की तरफ निकलता है। गोल थाली की तरह।

आयूब ने कहा-पूर्णिमा के आसमान में केवल चाँद दिखता है। तारे ज्यादा नजर नहीं आते।

शिक्षिका ने कहा- ठीक कहते हो। पूर्णिमा के बाद से ही कृष्णपक्ष शुरू हो जाता है। पहली संध्या को कृष्णपक्ष की प्रथमा कहते हैं। उसके बाद की संध्या को कृष्णपक्ष की द्वितीया, उसके बाद तृतीया। इसी तरह चलते हैं। किस तिथि को आसमान में बहुत तारे दिखते हैं, बता सकते हो?

सब सोचने लगे। पृथा ने कहा- अब अच्छी तरह देखेंगे।

-ठीक है। अगले एक महीने तक हर रोज देखना। कब, किस तरफ चाँद निकलता है। कितना बड़ा निकलता है। किस तरफ बढ़ता है। कहाँ अस्त होता है। आसमान में तारे कम हैं या ज्यादा!

चाँद-तारे देखो। जो देख रहे हो, उसे कुछ दिनों के अन्तराल पर लिखो। रोज लिखना चाहो तो अपनी कॉपी में लिखो :

| अमावस्या के कितने दिनों बाद देखा | चाँद का चित्र | आसमान में किस तरफ और कब चाँद निकला है? | चाँद किस तरफ बढ़ रहा है और अस्त होता है? | आसमान में पिछली रात की तुलना में तारे कम हैं या ज्यादा? |
|---|---|---|---|---|
| तीन दिन | | पश्चिम की ओर, संध्या के समय | पश्चिम की ओर, पश्चिम की ओर | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| पूर्णिमा के कितने दिनों बाद की बात है | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

# आसमान में खिलते तारों का दरिया

रात के आसमान में कितने तारे! छोटे-बड़े प्रकाश बिन्दुओं से भरे हुए! बीच आसमान में प्रकाश की एक नदी है। लगभग उत्तर-दक्षिण की ओर। उसमें भी क्या ढेर सारे तारे हैं? तारे क्या एक ही जगह रहते हैं? या फिर सूर्य की तरह खिसकते हैं? स्टीफन ने पूर्व के आसमान में तीन तारों को लक्षित किया। सोचा, बाद में फिर आकर देखूँगा, तारे खिसकते हैं या नहीं? दो घण्टे बाद आकर देखा, पश्चिम की ओर खिसक गये थे।

उसने स्कूल जाकर ये बातें बताईं।

अली ने कहा- मैंने भी देखा है। तारे खिसकते हैं।

विशाखा ने कहा- ऐसा? मैंने तो देखा है कि आसमान पूरी रात ऐसे ही तारों से भरा होता है।

शिक्षिका ने कहा- पहले ध्यान से कुछ तारों को देखोगे। खिसकते हैं या नहीं? फिर इस पर बातचीत करेंगे।

स्टीफन ने कहा- मैडम, कुछ तारे छोटे और कुछ तारे बड़े क्यों होते हैं?

अली ने कहा- प्रकाश छोटा हो तो छोटा दिखेगा और बड़ा प्रकाश हो, तो बड़ा दिखेगा।

शिक्षिका ने कहा- ऐसा? कहाँ देखा है तुमने?

-रास्ते का प्रकाश। वह तो घर से भी बड़ा है। मगर दूर से दिखने पर एक बिन्दु प्रकाश सा दिखता है।

अपूर्व ने कहा- छोटे दिखने वाले तारे, सचमुच छोटे भी हो सकते हैं। पर वे दूर के बड़े-बड़े तारे भी हो सकते हैं।

रात का आसमान देखा है कभी? ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि आसमान की एक ओर से दूसरी ओर तक प्रकाश की एक हलकी छटा बिखरी हुई है। प्रकाश की इस पुंज को ही आकाशगंगा कहते हैं। आकशगंगा में छोटे-बड़े ढेरों तारे हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तारे और आकाशगंगा के संबंध में और क्या-क्या जानते हो ? नीचे लिखो :-

| | |
|---|---|
| कौन सी तिथि में आकाशगंगा देखी है? | |
| संध्या से रात तक किस दिशा में तारों को खिसकते देखा है? | |
| आकाशगंगा का एक चित्र बनाओ | |

# तारों की बातें मेघों की बातें

सबने अच्छी तरह देखा और एकमत से स्वीकार किया। तारे पूर्व से पश्चिम की ओर खिसकते हैं। नन्दिनी ने सबसे पहले उत्तर के आसमान में तीन तारों को देखा था। वे तारे खिसकते हैं कि नहीं, समझ नहीं पाई। उसने फिर उत्तर-पूर्वी कोने के तीन तारों को देख रखा था। दो घण्टे बाद उसने देखा कि वे तारे पश्चिम की तरफ खिसक गये थे।

शिक्षिका ने कहा- किसी ने भी दक्षिण के आसमान के तारे नहीं देखा?

रेहाना ने कहा- देखा है। वे तारे भी खिसक गये थे।

-अच्छी बात है। आज शाम को पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण के आसमान के तारे देखना। कौन ज्यादा खिसकता है, कौन कम।

-आज तो आसमान में मेघ है। रात में दिखेगा क्या?

-ठीक है। जिस शाम मेघ नहीं रहेगा, उस शाम को देख लेना।

अवन्ति ने पूछा- मैडम, मेघ क्यों होता है?

सुजन ने कहा- तालाब का पानी वाष्प बन जाता है। वही वाष्प मेघ है।

-ठीक कह रहे हो। पर पानी का वाष्प दिखता नहीं है।

सुजन ने अवाक होकर कहा- पर पानी जब उबलता है, तब धुआँ की तरह उड़ता हुआ वाष्प दिखता तो है?

-वे सब जलकण हीते हैं।

अवन्ति ने पूछा– शीतऋतु में तालाब के ऊपर जो धुआँ दिखता है?

–वे जलकण हैं। पानी का अंश या नमी हवा में भी है। पर दिखती नहीं है। उबलते पानी से हल्का ऊपर उठते ही वाष्प ठण्डा हो जाता है। हवा में रहने वाले छोटे–छोटे धूलकणों में पानी का अंश होता है। यही धुआँ जैसा दिखता है।

रेहान ने पूछा– और मेघ?

–नदियों, सागरों का जल सूखकर हवा में जलीय वाष्प तैयार करता है। हवा में उड़ते धूलकणों में इस वाष्प के कारण नमी तैयार होती है। आस–पास उड़ते रहते हैं। यही सूरज का प्रकाश रोक कर आस–पास फैल जाते हैं। आसमान में उसी स्थान को मेघ कहते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

रास्ते में धूल उड़ती है। घर के भीतर धूल देखी है? रात को टार्च की रोशनी में भी दिखती है। दिन में जब दरवाजे के छिद्र से सूरज की रोशनी भीतर घुसती है तब भी धूल दिखती है। नाना प्रकार से देखो। कहाँ किस तरह देखा, उसे लिखो और चित्र बनाओ :–

| घर की धूल कब देखी है? | किस तरह देखा है, चित्र बनाकर दिखाओ | किस समय ज्यादा धूल देखी? |
|---|---|---|
| | | |

# मेघ–बारिश–बज्र

मेघों को लेकर बातें हो ही रही थीं कि बारिश आ गई। बिजली चमकने के साथ ही गड़गड़ाहट के साथ बज्रपात होना शुरू हो गया। कक्षा में सभी चौंक पड़े।

ऋतु ने पूछा– मैडम, बज्रपात क्यों होता है?

नवीन ने कहा– मेघ से मेघ टकराते हैं। आग निकलती है।

सुजन ने कहा– यह कैसे हो सकता है? मेघ क्या पत्थर हैं? मेघ तो असल में छोटे–छोटे जलकण हैं! इसमें टक्कर कैसे हो सकती है?

सबिना ने कहा– एक कौवा उड़ते हुए इलेक्ट्रिक लाइन के दो तारों के बीच चला गया था। तेज आवाज हुई थी। चमक के साथ बिजली फूट पड़ी थी। कौवा मारा गया। उस दिन मेरा मन बहुत उदास हो गया था।

–बज्र गिरना भी ठीक ऐसा ही होता है। मेघों में एक जगह से दूसरी जगह तक बिजली छिटकती है। इससे प्रकाश की झलक दिखती है। तभी आसमान में बिजली कड़कती है। मेघ से जब धरती पर बिजली गिरती है, तब हमलोग उसे बज्र गिरना कहते हैं।

कृष्णा ने पूछा– मैडम, नारियल के पेड़ और ताड़ के पेड़ पर ही बज्र क्यों गिरता है?

–वे ऊँचे पेड़ होते हैं। उसका सिरा मिट्टी से बहुत ऊँचा होता है। इसका मतलब ये है कि ये पेड़ दूसरे पेड़ों की तुलना में मेघ के काफी करीब होते हैं।

सुजन ने कहा– मेघ के करीब होने से ही ऊँचे पेड़ों पर बज्र गिरता है।

तिन्नी ने कहा– एक बार बज्र के गिरने से हमलोगों का नारियल का एक पेड़ मर गाया था। उसी के तने से हमलोगों के तालाब का घाट बना है।

–बहुत लोग ऐसा ही करते हैं। वैसे इस तरफ के पेड़ कोई काटता भी नहीं। बज्र गिरकर अगर पेड़ नष्ट हो जाए तो कुछ किया भी नहीं जा सकता। तब उस पेड़ को न फेंककर ऐसे ही कामों में लगाया जाता है।

बातें करें मिलकर

रखेंगे लिखकर

तुम्हारे घर या स्कूल के आस-पास कहीं बज्रपात हो, तो उसके विषय में जान कर नीचे लिखो:-

| कहाँ बज्र गिरा है? | कब (बारिश से पहले, बारिश के समय या बाद में)? | इससे किसकी क्या क्षति हुई? |
|---|---|---|
| | | |

# आसमान में रंगों की छटा

बारिश के थमने के बाद छुट्टी हुई। सबलोग घर जा रहे थे। थोड़ी-सी धूप भी निकल आई थी। करीम ने अचानक देखा कि आसमान में बहुत से रंग सजे हुए थे। कहा-देखो, आसमान ने कितने रंग सजा रखे हैं। सबने देखा।

रेखा ने पूछा- कौन-कौन से रंग हैं, बताओ तो ?

सबने गिनना शुरू किया। गिनने के बाद संख्या को लेकर सभी एकमत नहीं थे।

-चार रंग। नीला, हरा, पीला और लाल।

-नीले रंग के आगे बैंगनी भी तो है ? पाँच रंग हैं।

अगले दिन कक्षा में आसमान में दिखे रंगों की छटा पर बात हुई।

शिक्षिका ने कहा- चार-पाँच रंग ही दिखे ? दूर से अच्छा ही देखा है ! मगर इस नीले रंग के दो भाग हैं। एक गाढ़ा और दूसरा कुछ हल्का। वैसे भी आसमान हल्का नीला ही दिखता है। इसीलिए उस रंग को आसमानी कहते हैं।

रिम्पा ने कहा– कुल मिलकार छह रंग हैं।

–और भी अच्छी तरह से देखो तो पीला और लाल के बीचोंबाच एक नारंगी रंग दिखता है। हमलोग इसीलिए कहते हैं कि कुल सात रंग हैं।

–बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल।

–ठीक! रंगों के नाम का पहला अक्षर क्रम से लिखो।

सबने अपनी कॉपी में लिखा–बैं नी आ ह पी ना ला।

| | |
|---|---|
| लाल | |
| नारंगी | |
| पीला | |
| हरा | |
| आसमानी | |
| नीला | |
| बैंगनी | |

तनिमा ने कहा– अच्छा मैडम, कुछ देर बाद ही सारे रंग क्यों घुल-मिल गये?

–वे असल में जल की छोटी-छोटी बूँदों के कारण तैयार होता है। ज्योंही पानी की बूँदें वाष्प बनती है तब सारे रंग घुल-मिल जाते हैं।

करीम ने आश्चर्य से कहा– जल की बूँदें?

हाँ, छोटी-छोटी बूँदों के ऊपर सूरज का प्रकाश पड़ता है।

हर एक बूँद से हर एक रंग की आभा आँखों तक पहुँचती है। जिस बूँद से जिस रंग की छटा आती है, वह उसी रंग की दिखती है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

आसमान पर रंगों की छटा देखी है? कैसी दिखती है? चित्र बनाओ। तुम कहाँ थे? सूरज कहाँ था? यह भी चित्रित करो

# धरती से मिलता आसमान

छुट्टी के दिन थे। पिनाकी, मामा के घर जा रहा था। मामा के संग। पैदल भी ज्यादा दूर नहीं था। बड़े मैदान को पार करते ही पहुँच जाएगा। दोनों ने तय किया कि पैदल ही जाएँगे। मैदान के करीब आकर पिनाकी ने दूर देखा। मैदान के उस पार, आसमान क्या पेड़ों के साथ मिल गया है? मामा से उसने पूछा। मामा ने हँसते हुए कहा– चलो, वहाँ चलकर देखते हैं। चलते–चलते वे लोग मामा के घर पहुँच गए। मामा ने कहा– देखो तो, आसमान कहाँ है?

पिनाकी ने देखा कि आसमान पहले की तरह ही ऊँचाई पर है। समझ नहीं सका, तो उसने मामा की ओर देखा।

मामा ने कहा — चलो, हमारे घर के पास ही तो खेत है। वहाँ जाकर फिर देखते हैं कि आसमान कहाँ है?

मामा के घर पहुँचकर पिनाकी अकेले ही खेतों की ओर चला गया। खेतों के उस पार आसमान अभी भी धरती से मिलता दिखाई दे रहा था।

अगले दिन पिनाकी ने स्कूल में यही चर्चा की।

तनिमा ने कहा — मैंने भी देखा है। बुआ के घर जाते हुए देखा है।

शिक्षिका ने कहा — खुले स्थान पर जाते ही ऐसा दृश्य दिखता है।

— मैडम, दूर की उस जगह को क्या कहते हैं?

— दिगंत रेखा को क्षितिज कहते हैं।

मौलि ने पूछा — मैडम, क्षिजित कितनी दूर है?

खुली जगह जितनी बड़ी होगी, क्षितिज उतनी दूर चली जाएगी। ऐसा लगेगा, आसमान धरती से पूरी तरह मिल गया है।

आयूब ने पूछा — हमारे घर के पीछे पेड़ों की कतार है। तालाब के किनारे खड़े होकर देखने से ऐसा लगता है मानों ये पेड़ बहुत दूर जाकर आसमान के साथ मिल रहे हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

नीचे एक मैदान और मैदान के पार क्षितिज रेखा का चित्र बनाओ :

# पहाड़ पर चढ़ने का मजा

लड़के-लड़कियों का एक दल शिक्षिका के साथ पहाड़ों पर घूमने गया है। रतन, इलियास, राबिया, तितली, जेम्स आदि स्फूर्ति के साथ पहाड़ पर चढ़ रहे हैं। शिक्षिका उनके साथ ताल नहीं मिला पा रही हैं।

एक मोड़ पर तितली झाड़ियों के पीछे छुप गई। उसे न देखकर रतन ने कहा- तितली कहाँ है ? इलियास उसे ढूँढ़ने दौड़ा। बहुत दूर जाकर भी तितली नहीं मिली। तभी तितली पीछे से हँसती हुई आ गई। कहा- झाड़ियों के करीब से जाते हुए एक बार देखा तो होता ? मैं तो वहीं छुपी हुई थी।

घण्टे भर तक सबने आनन्द लिया। उसके बाद सबने उतरना शुरू किया।

रिमझिम और मिठाई धीरे-धीरे उतरे।

जेम्स ने कहा— पहाड़ पर चढ़ने में बहुत मजा आता है। एक दिन फिर आएँगे।

रिमझिम बहुत दुबली थी। वह हाँफ रही थी। उसने कहा- मैं अपना स्वास्थ्य ठीक करूँगी। फिर जब आई तो हाँफूँगी नहीं। मिठाई बहुत मोटा है। उसने कहा- मैं अपने खान-पान पर ध्यान दूँगा। देखना, दूसरी बार आया तो तुमलोगों की तरह ही दौड़ता फिरूँगा!

शिक्षिका ने कहा — यही तो चाहती हूँ। स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए क्या-प्रयास करना चाहिए, ये तुमलोगों को मालूम है। स्वास्थ्य का ध्यान रखो, तो फिर कोई भी हाँफोगे नहीं। तब तुम्हारा स्वास्थ ही तुम्हारी संपदा होगा!

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

क्या-क्या करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है? तुम क्या-क्या करते हो, क्या-क्या नहीं करते हो? नीचे लिखो :

| क्या-क्या करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है? | इनमें तुम क्या-क्या करते हो? | इनमें तुम क्या-क्या नहीं करते हो? |
| --- | --- | --- |
| | | |

# स्वास्थ्य ही संपदा है

शिक्षिका की बातें सोचते हुए जेम्स घर पहुँचा। उसके चाचा तब व्यायाम कर रहे थे। उनके छात्र उन्हें देख रहे थे। इसके बाद वे लोग भी व्यायाम करेंगे। अब जेम्स को समझ में आया, चाचा का स्वास्थ ही उनका संपद है। अच्छे स्वास्थ्य से चाचा को कितनी सुविधा होती है। कितना काम करते हैं, फिर भी हाँफते नहीं हैं। अभी हाल ही में हजार मीटर दौड़ का मेडल जीत चुके हैं।

स्कूल जाकर जेम्स ने अपने काका के बारे में बताया।

शिक्षिका ने कहा— स्वस्थ्य शरीर ही हमारी संपदा हो सकता है। इसके लिए कुछ नियम मानकर चलना पड़ता है।

जेम्स ने कहा— चाचा कहते हैं- समय से भोजन करना, पानी पीना और व्यायाम करना जरूरी है।

टिकाई ने कहा— तैरना भी बहुत जरूरी है। अच्छी नींद आती है। शरीर अच्छा रहता है।

रिमझिम ने कहा— मैंने आज सुबह तीन

गिलास पानी पिया है। अब से रोज ही खूब पानी पीऊँगी।

— हाँ, सही मात्रा में पानी पीना बहुत जरूरी है।

मिठाई ने कहा — मैंने लौकी डण्ठल की सब्जी के साथ भात खाया है। खीरा भी खाया है।

— वाह! बहुत अच्छा! जो मिले वही खाओ। क्या करना होगा, यह तुम्हें अच्छी तरह मालूम है। शरीर स्वस्थ रहे तो हर काम में मन लगता है। शरीर खराब रहे तो कोई काम अच्छा नहीं लगता।

चित्तो ने कहा — हमारे दादाजी भी यही कहते थे।

— तुमलोग कोशिश करो कि तुम्हारा स्वास्थ्य ही तुम्हारी संपदा बने।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुम्हारे परिचितों में किसका स्वास्थ्य अच्छा है और किसका खराब है? तुमलोग समझ-बूझ कर नीचे लिखो :

| परिचितों के नाम/सम्पर्क | स्वास्थ्य अच्छा है या खराब | ऐसा क्यों है? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# चाहिए पानी, हवा, मिट्टी और आसमान

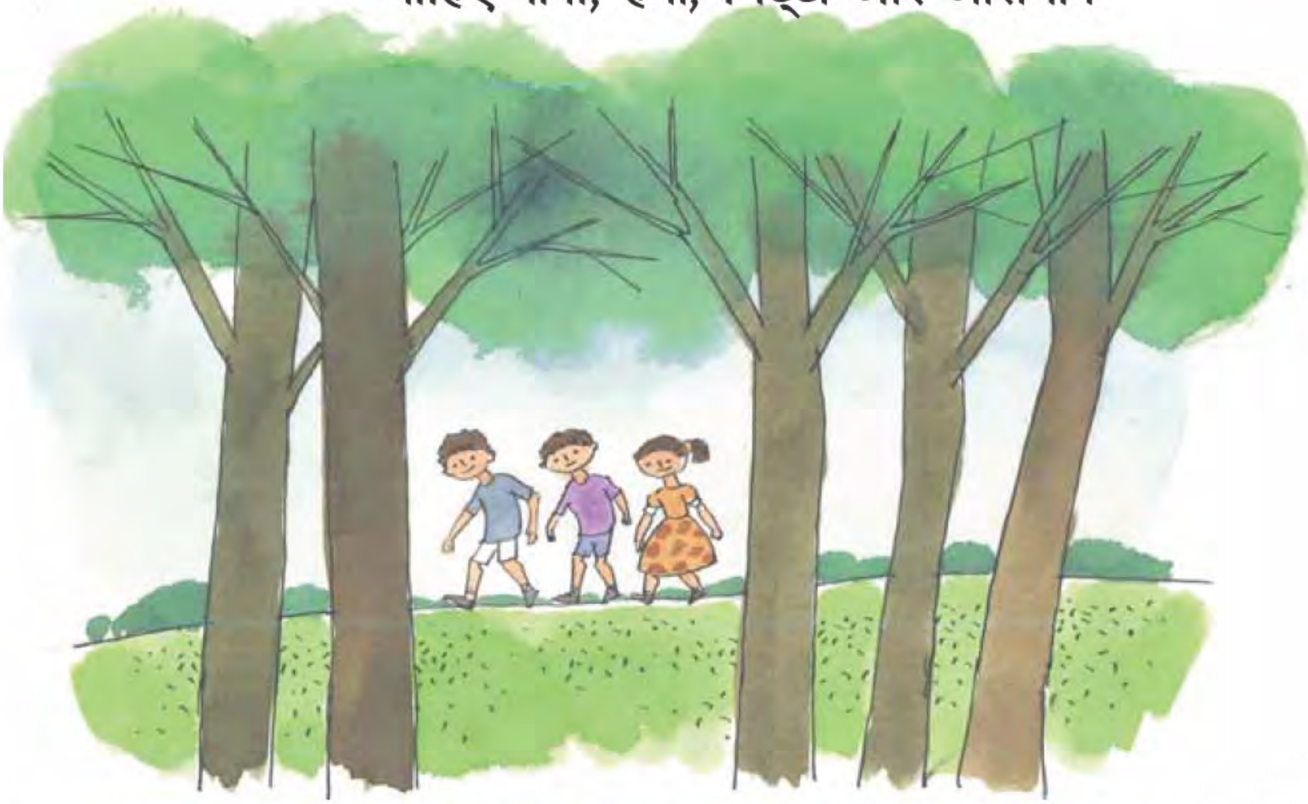

स्वास्थ्य के आलावा हमारी संपदा और क्या-क्या है? और क्या अच्छा रहने से हमें सुविधा हो? तालाब का पानी गंदा हो तो स्नान करने का मन नहीं होता। पानी में बदबू हो, तो पीते समय उल्टी हो सकती है। साफ पानी क्या हमारी संपदा है?

हवा में धुआँ हो तो आँखों में जलन होती है। धूल रहे तो साँस लेने में दिक्कत होती है। ठण्डी हवा हमारे तन-मन को प्रसन्न कर देती है। तो क्या साफ हवा भी हमारी संपदा है?

मिट्टी गंदी हो तो हमारे चलने-फिरने में असुविधा होती है। जहाँ-तहाँ पालिथीन पड़े हों तो नीचे की मिट्टी को हवा-पानी-धूप नहीं मिलती। उर्वर मिट्टी में पेड़-पौधे जल्दी बड़े होते हैं। मिट्टी भी क्या हमारी संपदा है?

यही सोचता हुआ चित्तो स्कूल गया। उसने पानी, मिट्टी, हवा के बारे में अपने विचार बाताए। शिक्षिका ने चित्तो की काफी तारीफ की। कहा— पानी, हवा, मिट्टी आदि प्रकृति की प्रधान संपदा हैं। जन्म से ही हमें प्रकृति से ये सब प्राप्त होते हैं।

रीना ने कहा— वनों में उगे पेड़ भी तो किसी ने लगाया नहीं है।

— ठीक कहती हो। वनों के पेड़-पौधे भी प्रकृति की संपदा हैं। अवसर मिलते ही तुमलोग पेड़ लगाओ। सम्भव हो तो फलों के पेड़ लगाओ। इससे तुम्हें फल भी खाने को मिलेंगे। हमारे पशु-पक्षी भी फलों को खा सकेंगे।

रिम्पा ने कहा— मगर पानी, हवा, मिट्टी और सूरज के प्रकाश के बिना पेड़ नहीं उग सकते।

— ठीक। इसीलिए ये प्रकृति की प्रधान संपदा हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

प्रकृति में और भी संपदाएं हैं। उनके संबंध में नीचे लिखो :

| प्राकृतिक संपदाओं के नाम | कहाँ हैं? | क्या करने से वे नष्ट हो जाएँगे? | क्या करने से वे नष्ट नहीं होंगे? |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

## पानी संचय करो, पानी भरो, पानी बचाने की कोशिश करो

ट्यूबवेल दबा कर कृष्णा पानी निकाल रहा था। उसने सोचा, मिट्टी के नीचे का पानी कभी खत्म नहीं होगा। खेतों में कितने सारे मिनी डीप ट्यूबवेल बिठाये गये हैं। पानी फिर भी खत्म नहीं होता।

स्कूल जाकर कृष्णा ने सबसे यही कहा। हरान ने उसकी बात सुनकर कहा– बिल्कुल गलत है। मेरी बुआजी के मुहल्ले में मिनी ट्यूबवेल से अब पानी नहीं निकलता।

शिक्षिका ने कहा — ठीक कहा। मिट्टी के नीचे से पानी निकालना आसान है। मगर नीचे पानी भेजना आसान नहीं है। नदी या सागर के करीबी इलाकों में मिट्टी के नीचे थोड़ा पानी जमा हो सकता है। मगर दूर-दराज के इलाके में यह संभव नहीं है।

कृष्णा ने कहा— तो फिर नल का पानी नष्ट करना तो ठीक नहीं है।

— बिल्कुल सही बात है। जितना सम्भव हो, बारिश के पानी से सिंचाई करनी चाहिए। तालाबों को गहरा करना चाहिए। इसके किनारे पेड़ लगाना चाहिए। शीतऋतु में उसी पानी से सिंचाई करनी चाहिए।

— मैडम, बहुत से लोग टाइमकल का नल खोल कर रखते हैं। यह पानी कहाँ से आता है?

पिन्टू ने कहा— देखा नहीं है? डीप ट्यूबवेल से पानी को पाइप द्वारा भेजा जाता है।

— वह भी तो मिट्टी के नीचे का पानी है। इस तरह लोग नष्ट क्यों करते हैं?

— तुमलोग सबको समझाना। कोई भी नल खोलकर न रखे। कहीं भी पानी का नल खुला दिखे तो बन्द कर देना। यह भी देखना कि कोई भी पानी का नल तोड़े नहीं।

— मैडम, मेरी मौसी के घर में पानी का बड़ा अभाव है। मौसी लोग फूलों के पौधों में कच्ची सब्जी धोया हुआ पानी डालते हैं।

— ऐसा ही करना चाहिए। मिट्टी के नीचे का पानी जितना बचाया जाए, उतना ही अच्छा। ऐसा न हो, तो आगे चलकर पीने का पानी मिलना मुश्किल हो जाएगा। ऐसा भी हो सकता है कि तुमलोग जब तक बड़े होओगे, तब तक मिट्टी के नीचे का पीने का पानी ही खत्म हो जाए।

अमिना ने कहा — मैडम, बारिश के समय हमलोग छत पर इकट्ठा किए गए पानी से स्नान करते हैं।

— वाह! तुम में से कई लोग पानी का संचय करते हो। अब से सबलोग मिलकर, जितना सम्भव हो, उतना पानी बचाने की चेष्टा करो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुमलोग किस तरह पानी बचाते हो? पानी बचाने के लिए और क्या-क्या करना चाहिए, नीचे लिखो :

| मिट्टी के नीचे के पानी से क्या-क्या करते हो? | पानी को बचाने के लिए क्या-क्या करते हो? | पानी को बचाने के लिए और क्या-क्या करना चाहिए? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# हरी संपदा का बुलावा

तृप्ति के यहाँ आम के अनेक पेड़ हैं। पहले ये पेड़ लगाये नहीं जाते थे। जितने भी नये पेड़ हैं, वे सब दादा जी ने लगाये हैं। तृप्ति ने सोचा, जो पेड़ स्वयं उगे हैं, वे प्रकृति की संपदा हैं। जिन पेड़ों को अलग से लगाया गया है, वे मनुष्य की संपदा हैं।

स्कूल जाकर तृप्ति ने सबको बताया। उसकी बात सुनकर करीम ने कहा– हमलोगों के भी ऐसे पेड़ हैं। किसी ने लगाया नहीं। गुलाब जामुन, कनक चम्पा के पेड़ भी किसी ने नहीं लगाए। मगर नारियल के कुछ पेड़ हैं, आम के पेड़ हैं, जिन्हें भैया ने लगाया है।

शिक्षिका ने सब सुना। फिर कहा– फल-फूल के पेड़ों के साथ अभी ऐसी ही बात है। मनुष्य द्वारा तैयार कुछ संपदाएं हैं। कुछ संपदाएं प्रकृति ने तैयार कर रखी है। जैसे स्कूल के मैदान में छातिम, शिरीष, सेमल, बेल आदि के पेड़ लगाए गये हैं। मगर तालाब के किनारे के बाँसों के झुरमुट को किसी ने नहीं लगाया।

– मैडम, अभी क्यों बोल रही हैं? पहले क्या ऐसा नहीं था?

—हाँ, पहले सारे फल-फूल प्रकृति की संपदा थे। वनों के पेड़ों की तरह। पहले लोग वनों के फल-फूल खाकर ही जीवित रहते थे।

यह बात उन्हें मालूम थी। हमीद ने कहा– अभी अनेक फूल-फल हैं, जो धान-पाट की तरह उगाये जाते हैं। अमरूद का बगीचा ऐसे ही लगाया जाता है।

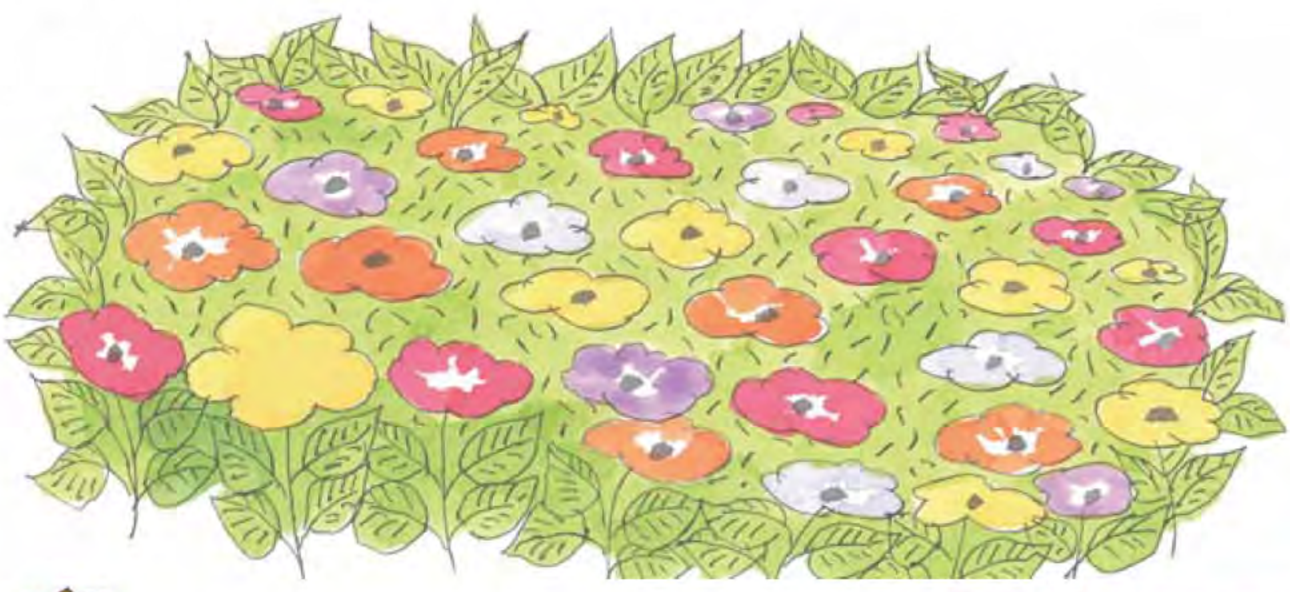

छोटे-छोटे पेड़। कहीं-कहीं पूरे खेत में गेंदे का फूल। परेश चाचा घृतकुमारी, बासक, कालमेघी के पौधे लगाते हैं। कहते हैं- इससे औषधि बनती है।

वीणा ने कहा-मेरे मामा के घर के पास आम के बड़े-बड़े बगीचे हैं। दादाजी कहते हैं- सारे पेड़ दो-तीन सौ साल पुराने हैं। किसी ने भी उन पेड़ों को लगाया नहीं।

-इसका मतलब वे प्रकृति की संपदा हैं। खेती से जो उगाए जाते हैं, उसे कृषि-संपदा कहते हैं। बगीचा के फल बगीचा-संपदा कहलाते हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

संपदाओं में प्राकृतिक संपदा कौन-कौन सी है? मनुष्य द्वारा तैयार कौन सा है? वे कहाँ मिलते हैं। नीचे लिखो :

| फूल-फल-फसलों के नाम | कहाँ मिलता है? | यह किस प्रकार की संपदा है? |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# एक पेड़ अनेक प्राण

पौधा लगाओ उत्सव में हम सबको पौधा लगाना होगा। बहुत आनन्द आएगा।

विपाशा ने कहा — मगर उत्सव के साथ पौधे क्यों लगाए जाते हैं।

शिक्षिका ने कहा — पेड़, जीवन के लिए बहुत उपकारी है।

साथी ने कहा — सचमुच। पेड़-पौधों से हमें फूल मिलता है, फल मिलता है, साग-सब्जियाँ मिलती हैं।

राबिया ने कहा — पेड़-पौधों से हमें भोजन ही मिलता है, केवल ऐसी ही बातें नहीं है। हमारे घर के पास वाले आम के पेड़ पर चिड़ियों के घोंसले हैं।

सुखेन ने कहा — एक पेड़ पर मैंने चीटिंयों के घोंसले भी देखे हैं.

रवि ने कहा — गर्मी की दोपहरी में पेड़ की छाया में बैठने पर बहुत आनन्द आता है।

रूपा ने कहा — हमारे घर की खाट, अलमारी, दरवाजे, खिड़कियाँ सब लकड़ी से ही बनी हुई हैं।

मजिद ने कहा — नाव तो पेड़ की लकड़ी से ही तैयार होती है।

— कागज बनाने में भी बाँस का उपयोग होता है। कुछ-कुछ पेड़ों के कई हिस्से भी काम में आता है।

रूपा ने कहा — मैडम, फिर तो कागज बनाने के लिए बहुत सारे पेड़ काटने पड़ते होंगे?

—हाँ, सच कहती हो। हमें इसीलिए अधिक कागज बर्बाद नहीं करना चाहिए। नहीं तो फिर अधिक से अधिक पेड़ काटने होंगे।

प्रशान ने कहा — तब तो हमें पुस्तकों को सँभाल कर रख देनी चाहिए।

— कागज उपयोग करते-करते पुरना पड़ जाता है। कभी-कभी सड़ जाता है। इनसे भी नया कागज बन जाता ं

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

विभिन्न जीवों को पेड़ से क्या-क्या मिलता है? मनुष्य कागज का उपयोग किस तरह करता है? ये सारी बातें नीचे लिखों।

| जीवों के नाम | पेड़ों से क्या-क्या प्राप्त कर सकता है |
|---|---|
| चिड़िया | |
| बंदर | |
| चींटी और मधुमक्खी | |

| | |
|---|---|
| किस-किस तरह कागज बर्बाद होता है? | |
| किस-किस तरह से कागज बनाया जा सकता है? | |
| तुमलोग किस तरह कागज का उपयोग करते हो और कागज को बचाते हो? | |

# हाथों से तैयार शिल्प-संपदा

मनुष्य द्वारा तैयार और भी ढेरों चीजें हैं जो हमारे काम आती हैं। मिट्टी की हाँड़ी, सुराही, लोहे की कुदाल एवं और भी अनेक चीजें। ये सब के सब मनुष्य के हाथों द्वारा निर्मित संपदा हैं। यानी हस्तशिल्प संपदा। ये सब तो कृषि संपदा हैं नहीं। संजीव ने स्कूल में बताया।

सुनकर तड़ित ने कहा- पीतल के बर्तन भी तो मनुष्य द्वारा निर्मित है।

शिक्षिका ने कहा- ये सब शिल्प संपदा हैं। छोटे-छोटे घरेलू शिल्प। तुम्हारे आस-पास ही ये शिल्प हैं।

झुम्पा ने कहा- बाँस की टोकरी, घास की चटाई भी क्या शिल्प संपदा हैं?

राबिया ने कहा- बाँस तो बागान में मिलता है। घास मैदान में उगती है। ये प्राकृतिक संपदा या कृषि-संपदा हो सकती है।

— बाँस की खेती हो, तो कृषि-संपदा है। यह टोकरी तैयार करने का कच्चा माल है। मगर टोकरी तैयार करना तो हाथ का काम है। चटाई तैयार करना भी एक बात है। घास चटाई का कच्चा माल है।

- हाथ का काम क्या शिल्प है?

— ये सब घरेलू हस्तशिल्प हैं। और अच्छी तरह कहें तो कुटीर-उद्योग। इस तरह के कामों से ही शिल्प की शुरुआत होती है।

रतन ने पूछा- लकड़ी की कुर्सी-टेबुल बनाना?

—वह भी हाथ का काम है।

— अच्छा मैडम, क्या घर तैयार करना भी शिल्प है?

— हाँ, घर तैयार करने को निर्माण-शिल्प कहते हैं।

माम्पी ने कहा- घर? घर तैयार करना शिल्प है?

— हाँ, हाथ का काम या घरेलू शिल्प। इस तरह के अनेक शिल्प तुमलोगों ने देखा होगा।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

तुमलोग नाना प्रकार के घरेलू शिल्प, छोटे शिल्प अथवा हाथों के काम के विषय में जानते हो, देखते हो। वे सब नीचे लिखो :

| संपदाओं के नाम | किस-किस चीज से तैयार होती है? | वह किस प्रकार की संपदा है? |
| --- | --- | --- |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

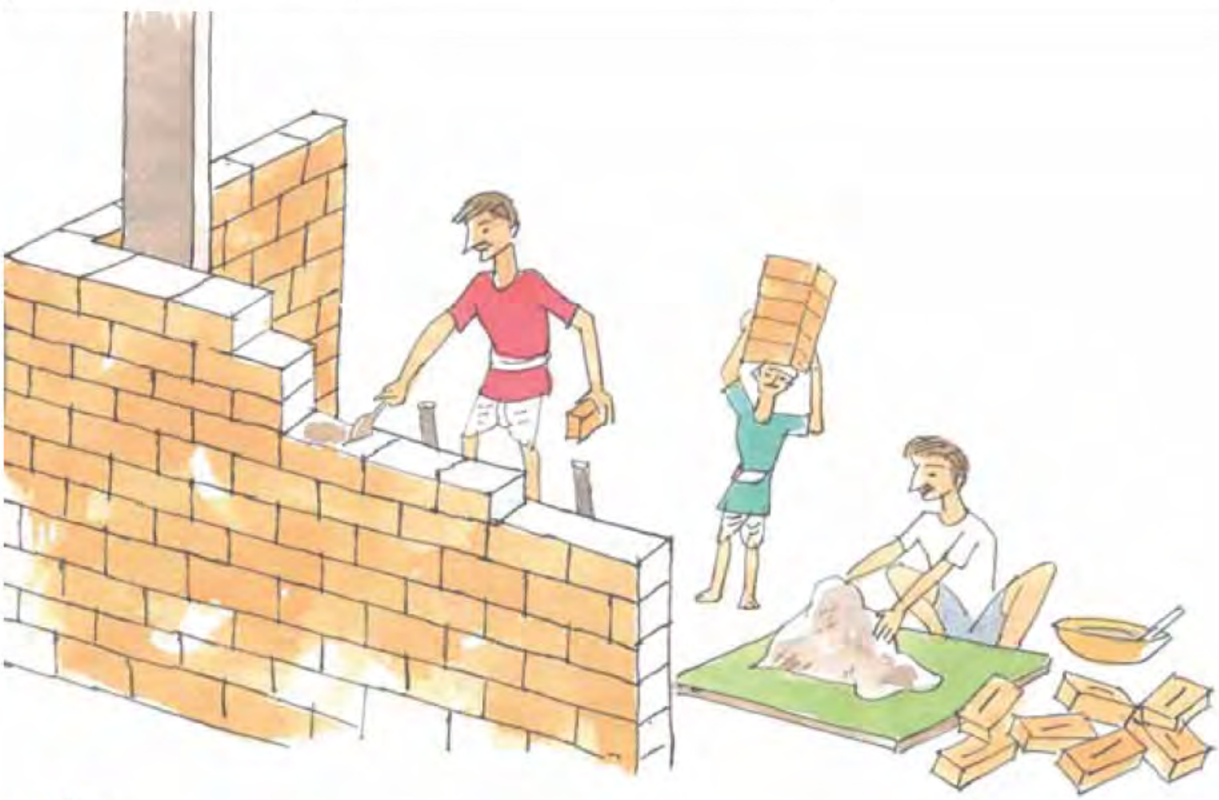

# नान प्रकार की शिल्प-कथा

स्वपन ईंट भट्ठे के करीब से जा रहा था। पचीस-तीस लोग ईंट तैयार कर रहे थे। दस-पन्द्रह लोग उन ईंटों को धूप में डाल रहे थे। आठ-दस लोग धूप से उठा रहे थे। और लगभग पन्द्रह-बीस लोग भट्ठे के भीतर से पकी हुई ईंटों को निकालकर सजा रहे थे। स्वपन ने सोचा, ईंट-भट्ठा भी क्या घरेलू शिल्प है?

इलियास का घर एक चावल मिल के पास है। उस मिल में बहुत काम होता है। बॉयलर में धान डालना, उबला हुआ धान सूखने के लिए देना, धान को पलटते रहना। कितने काम हैं। कुल मिलाकर साठ-सत्तर लोग काम करते हैं। इलियास सब देखता है और सोचते रहता है कि चावल मिल क्या घरेलू-शिल्प है?

उन लोगों ने स्कूल में बताया।

शिक्षिका ने कहा-वाह! तुमलोगों ने अच्छी तरह देखा है। ये कुछ बड़े शिल्प हैं। सबलोग इसी तरह का शिल्प देखकर आओगे। देखने के बाद अपने साथियों को बताओगे।

स्वपन सोचने लगा। कुछ बड़े शिल्प से, मैडम का क्या तात्पर्य है? उसने पूछा-मैडम, और भी बड़े शिल्प हैं?

-है न। मनुष्य ने बहुत सी चीजें तैयार की हैं। उन्हें तैयार करने में बड़ी-बड़ी मशीनों की जरूरत पड़ती है। थोड़ा सोचो। कौन-कौन सी चीजें तुमलोग उपयोग में लाते हो? मगर तैयार होते नहीं देखा है।

अर्णव ने कहा-सीमेण्ट, बिजली।

-ठीक कहते हो। इसके अलावा बड़ी-बड़ी मशीनें, गाड़ियाँ मनुष्य ने तैयार की हैं।

-मसाले पीसने की मिक्सचर मशीन, रास्ते तैयार करने का रोलर, ट्रैक्टर, पावर टिलर।

-ठीक। इन सब मशीनों को तैयार करने वाले शिल्प ही बड़े शिल्प हैं।

# घरेलू शिल्प की अनेक बातें

राबिया के घर में छोटी सी एक टोकरी है। बाँस की पतली-पतली खपची से बनी हुई है। सुन्दर फूलदार ढक्कन लगा हुआ है। किसी काम में नहीं आता। मगर माँ उसे निकालकर साफ-सुथरा करती रहती हैं। फिर रख देती हैं। स्कूल के विद्यार्थी अपने हाथों से बनी चीजों की प्रदर्शनी लगाएंगे। आज कक्षा में इसी विषय पर बातचीत हुई। राबिया ने स्कूल में उस टोकरी की बात की। उसके बाद उसने कहा- मैडम, यह टोकरी तो किसी काम में नहीं आती। यह भी क्या शिल्प संपदा है?

शिक्षिका ने कहा– क्यों ? वह दखने के काम में आता है। उसे देखने में अच्छा लगता है!

रवि ने कहा–वैसे तो बहुत चीजें हैं। देखने में अच्छी लगती हैं। शो–केस में सजाकर रखी जाती हैं।

तुहीन ने कहा–हमारे घर में सीप से बना एक खिलौना है।

राबिया ने पूछा –यह भी क्या हाथ का काम है? घरेलू शिल्प?

–केवल हाथ का काम नहीं। ये सब हाथों का सूक्ष्म काम है। असल अर्थ में कहें तो कला।

रवि ने कहा– समझ गया। चित्र बनाने की तरह। जैसे चित्रकार चित्र बनाते हैं।

मिन्टू ने कहा– नाटकों में जो अभिनय करते हैं, वे भी कलाकार हैं।

तुहीन ने कहा–मिन्टू की इच्छा है कि वह नाटक में अभिनय करेगा।

–यह तो अच्छी बात है। स्पष्ट उच्चारण के साथ बातचीत करने का अभ्यास करो। शारीरिक भंगिमा द्वारा मन के भावों को प्रकट करने का तरीका सीखो। तब देखना, तुम्हें नाटकों में अभिनय करने का अवसर मिल जाएगा।

तियासा ने कहा–रमेश चाचा पत्थरों की खुदाई कर मूर्ति तैयार करते हैं। वह भी तो बारीक काम की कला है।

–ठीक कह रहे हो! ये सब सुन्दर करने की कला है। सौन्दर्य सृष्टि की कला। मन को आनन्द देने वाली कला। ऐसी कला–संपदा तुम्हारे चारों ओर बिखरे पड़े हैं।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

१) अनेक प्रकार की शिल्प-संपदाओं की बातें तुम जानते हो। उन्हें नीचे लिखो :

| शिल्प-संपदाओं के नाम | तैयार होते देखा है या नहीं ? | तुम्हारे परिचित किसी ने देखा है या नहीं ? | किस प्रकार की शिल्प संपदा है ? |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

२) तुम्हरे आस-पास की शिल्प-संपदाओं को ध्यान से देखो। जितना देखा, उन्हें नीचे लिखो :

| सुन्दर शिल्प-संपदाओं के नाम | किस चीज से तैयार हैं ? | कहाँ देखा है ? | कौन या कितने लोगों ने तैयार कीया है ? |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

# सतर्क रहो भूलो मत
# (१)

कुमकुम बहुत अच्छी लड़की है। रास्ते पर चलते हुए सारे नियमों का पालन करती है। गाड़ियों को अपने-सामने रखकर अपनी बाईं ओर से चलती है। फुटपाथ हो तो उसके ऊपर से ही चलती है।

रास्ता पार करना है ? पहले दोनों तरफ देखती है। किसी ओर से कोई गाड़ी तो नहीं आ रही ? शहर के रास्तों पर पार करने के लिए जेब्रा-क्रॉसिंग का उपयोग करती है। फिर भी जब तक हरा-मानव-सिग्नल न हो जाए, तब तक पार नहीं करती।

जेब्रा-क्रॉसिंग क्या है? रास्ते पर बने हुए जेब्रा के शरीर की तरह निशान। उसे ही जेब्रा-क्रॉसिंग कहते हैं। कल कुमकुम कोलकाता गई थी। हरा-मानव-सिग्नल होने के बाद ही उसने रास्ता पार किया था।

राह चलते-चलते अगर आँधी आ जाए तो कुमकुम पेड़ के नीचे खड़ी नहीं होती। उसने सुना है कि आँधी के समय किसी के सिर पर पेड़ की डाल गिर पड़ी थी। यह सुनने के बाद बहुत सावधान रहती है। आँधी आते ही वह दौड़कर नजदीकी किसी घर के बरामदे में चली जाती है।

एक दिन कुमकुम और रिम्पा खुले मैदान से होकर अपने एक दोस्त के घर जा रही थीं। अचानक ही बज्रपात शुरू हो गया। कुमकुम ने सुन रखा था कि ऊँचे पेड़ पर बज्र गिरता है। खड़ी रहे, तो बज्र कहीं उन्हें ही ऊँचे पेड़ न समझ ले। इसीलिए उसने रिम्पा से उकड़ूँ लेट जाने को कहा। स्वयं भी उकड़ूँ होकर लेट गई।

कुछ देर बाद बज्रपात कम हो गया। बारिश कम नहीं हुई थी। दोस्त के घर पहुँचने तक वे लोग भीग कर पूरी तरह सराबोर हो गई थीं। दोस्त के कपड़े कुछ ढीले पड़ गये थे। फिर भी उनलोगों ने पहन लिया। सूखने से पहले तक उनलोगों ने अपने कपड़े नहीं पहने। कुमकुम ने कहा-भीगे कपड़े पहनने से बहुत तकलीफ हो जाती है। छीक, गले की खुसकी, नाक की जलन। लगभग सात दिनों की परेशानी।

कुमकुम को इतना मालूम है। फिर भी वह सब से जानना चाहती है। चलने-फिरने में और क्या-क्या सावधानी जरूरी है?

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

चलने-फिरने में सावधानी रखने लिए कुमकुम को क्या-क्या करना जरूरी है? नीचे परामर्श लिखो :

| समस्या | तुम्हारे अनुसार क्या करना उचित है? |
|---|---|
| पैर में चमड़े के जूते हैं, रास्ते पर पानी जमा हुआ है। | |
| पास आ कर दो कुत्ते पूँछ हिलाने लगे हैं। | |
| | |
| | |
| | |
| | |

## सतर्क रहो, भूलो मत (२)

जरूरत के अनुसार कुमकुम सब्जी काटने में अपनी माँ का हाथ बँटाती है। पहले धोती है, फिर छिलके उतारती है। तब काटती है। अन्त में पँहसुल के धारदार हिस्से को दीवार की ओर फेरकर रख देती है। बाद में फिर वहीं से लेती है।

कुमकुम के पास नेलकटर नहीं है। ब्लेड से ही नाखून काटती है। पर बहुत सावधानी से काटती है। सबसे पहले नाखूनों को पानी में भिगोकर नरम कर लेती है। उसके बाद हल्के दबाव से नाखून काटती है। उसके मामा अपने सूखे नाखून काटने की कोशिश में एक बार मुश्किल में पड़ गये थे। सख्त नाखून को जोर लगाकर काट रहे थे।

कच्चे नाखून के साथ चमड़े का कुछ अंश भी कट गया था। खून निकल आया था। इंजेक्शन लेना पड़ा था। यह सुनकर ही कुमकुम सावधान रहती है।

टुकुन के पास एक छोटी सी कुदाल है। उसी से वह बागान में मिट्टी गुड़ाई करता है। फूल, मिर्च, बैगन के पौधे लगाया करता है। चाचा जी ने उसे मिट्टी गुड़ाई करने का कौशल सिखाया है। इस तरह कुदाल चलाता है ताकि पैर में न लगे।

दरवाजे–खिड़की बन्द करते समय टुकुन बहुत सावधान रहता है। उसने एक बार देखा था कि एक छिपकली की पूँछ दरवाजे के पल्ले में दबकर कट गई थी। उसके बाद से ही वह दरवाजा बन्द करते समय हमेशा ख्याल रखता है कि हाथ कहीं दरवाजे से दब न जाए।

बातें करें मिलकर

रखेंगे लिखकर

तुमलोग किस काम में किस तरह की सावधानी रखते हो? नीचे लिखो :

| घरेलू कामों के नाम/विवरण इत्यादि | कैसे सावधान रहोगे? |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |

# सतर्क रहो भूलो मत (३)

इलेक्ट्रिक स्विच पर हाथ रखने से पहले कुमकुम अपने हाथों को पोंछ लेती है, ताकि हाथों में पानी न रहे। पानी रहने पर शॉक लग सकता है। इस्त्री करते समय भी बहुत सावधान रहती है। जब तक स्विच ऑफ नहीं कर लेती, तब तक इस्त्री को हाथ नहीं लगाती। यदि इस्त्री खराब रहे तो शॉक लग सकता है।

एक बार एक प्लग काम नहीं कर रहा था। कुमकुम के भाई प्लग के छेद में तार लगा कर देखने लगे कि क्या हुआ है? तभी जोरों का एक शॉक लगा था। उसी से कुमकुम सावधान हुई है। प्लग अगर काम नहीं कर रहा हो, तो टेस्टर से चेक करती है। कभी भी दूसरी चीज नहीं डालती।

कुमकुम मोमबत्ती जला पाती है। एक हाथ में दियासलाई का बॉक्स और एक हाथ में दियासलाई की तीली लेती है। उसके बाद तीली को जलाती है। तब मोमबत्ती की बत्ती के पास माचिस का सिरा पकड़ती है। एक बार कुमकुम की छोटी मौसी ने मोमबत्ती के नीचे माचिस की तीली को पकड़ा था। मोमबत्ती पिघल-पिघल कर गिर रही थी। बत्ती नहीं जली। यही देख कर कुमकुम ने सीखा था।

जाड़े के मौसम में कुमकुम अपने नहाने का पानी स्वयं गरम करती है। सबसे पहले चूल्हे पर एक पतीला पानी रखती है। उसके बाद गैस का चूल्हा जलाती है। दियासलाई जलाने के बाद गैस का नॉब घुमाती है। पानी गरम हो जाने के बाद गरम पतीला खाली हाथों से नही पकड़ती। एक कपड़े से पकड़ती है। उस पानी को फिर बाल्टी के ठण्डे पानी में मिला लेती है।

घर से बाहर जाने पर कुमकुम हमेशा अपने पैर में चप्पल या जूती पहनती है। रास्ते में कहीं पैर में कुछ चुभ न जाए! एक बार उसके भैया नंगे पाँव बाहर गये थे। पाँव में जंग खाई एक कील चुभ गई थी। तब से ही कुमकुम बहुत सावधान रहती है। बाहर से आकर घर में घुसने से पहले हमेशा अपने हाथ-पैर अच्छी तरह धो लती है। अपने कपड़ों का भी कुमकुम बेहद ख्याल रखती है।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

इलेक्ट्रिक और आग से काम लेते समय क्या सावधानी रखते हो ? नीचे लिखो :

| काम का नाम/ विवरण | कैसे सावधान रहते हो ? |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |

## हम सब हैं दूसरे के लिए

तैराक के रूप में टिकाई का नाम स्कूल में विख्यात है। उसके दोस्त इतना अच्छा तैरना नहीं जानते। राजू एक बार पानी में डूब रहा था। उसे बचाने के लिए टिकाई तालाब में कूद गया था। पलाश भी अच्छा तैरना जानता था। वह भी पानी में कूद पड़ा। राजू के करीब पहुँचकर टिकाई ने कहा–सावधान! तुम मुझे मत जकड़ना, नहीं तो हम दोनों को ही डूबना पड़ेगा!

उसके बाद उसने एक गमछा राजू की तरफ उछाला। राजू ने उसे झपटकर पकड़ लिया। गमछे का दूसरा सिरा टिकाई ने पकड़ा। अब वह तैरता रहा। राजू के पीछे पलाश था। वह उसे धक्के दे रहा था। ऐसा करते हुए वे लोग किनारे तक पहुँचे। उसके बाद उसे पानी से निकाला। राजू तब बातें नहीं कर पा रहा था।

इस हालत में ज्यादा देर नहीं रखा जा सकता। टिकाई ने इसीलिए राजू को पेट के बल सुला दिया। दोनों हाथ दोनों तरफ फैला दिया गया। सिर को एक तरफ कर दिया गया। अब उसकी पीठ के दोनों तरफ दबाव दिया जाने लगा। इससे काफी पानी निकल गया। ऐसा लगभग मिनट भर चला। पर राजू के शरीर में कोई हरकत नहीं हूई। अव राजू को चित लिटा दिया गया। उसकी नाक के पास टिकाई ने अपना कान लगाया। साँसों की कोई आवाज न थी। उनलोगों ने राजू की टुड्ढी को कुछ ऊँचा किया। राजू के सिर को पीछे की ओर झुका दिया गया। उसके बाद टिकाई ने राजू के खुले हुए मुँह में अपनी दो उँगलिया घुसेड़ दी। ऐसा करते ही कुछ कीचड़ और शैवाल के पत्ते निकल आए। अपने सीने में साँस भरकर टिकाई ने राजू के खुले हुए मुँह पर अपना मुँह रख दिया। फिर उसने अपनी पूरी साँसें राजू के मुँह में भर दिया। पलाश ने अपनी दो उँगलियों के सहारे राजू की नाक दबा रखी थी। ताकि टिकाई

द्वारा भरी गई साँसें राजू के नाक से निकल न जाए। यह प्रक्रिया दो–तीन बार करने के बाद भी राजू में कोई हरकत नहीं हुई। इसी बीच इनलोगों को देखकर जेम्स के चाचाजी दौड़कर आ गये थे।

चाचा ने कहा– टिकाई, लग रहा है की राजू के हृदय की धड़कन काम नहीं कर रही है। देखूँ जरा कि नस की गति चल रही है कि नहीं। राजू के कण्ठ पर चाचा ने अपनी एक उँगली रखी। ध्यान लगाकर अनुभव करने की कोशिश की। चाचा के ललाट पर चिन्ता की लकीर उभर आई। उन्होंने कहाँ– राजू का पल्स नहीं चल रहा। टिकाई जल्दी करो। लगता है, अब राजू के सीने पर ऊपर से दबाव देना पड़ेगा। इसी प्रकार हृदय की गति वापस लानी होगी।

टिकाई ने पूछा– चाचा जी, मैं श्वाँस–प्रश्वास का काम चालू रखूँ तो ?

चाचा ने कहा– हाँ, तुम श्वाँस–प्रश्वास का काम चालू रखो। मैं हृदय पर दबाव डालता हूँ। इतना कहकर चाचा

४ और ५ नम्बर वाली तस्वीर में दिखायी गयी विधि लगातार करते रहना होगा

राजू के बगल में घुटनों के बल बैठ गये। पलाश ने कहा- देखो, राजू के सीने के सबसे नीचे की दो हड्डियाँ यहाँ आकर मिली हैं। उस जगह से ठीक दो उँगली ऊपर चाचा जी अपने दोनों हाथो से दबाव डालने लगे। दबाव इस तरह डाल रहे थे कि दो इंच तक दबाया जा सके। 'एक-दो-तीन-चार' कहते-कहते एक ही लय में दबाव डाल रहे थे। पलाश से उन्होंने कहा- इस तरह प्रति मिनट में लगभग साठ बार दबाव डालना होगा। 'एक-दो-तीन-चार' कहते-कहते गिनने से सुविधा होती है। ऐसा करते हुए चाचा जी ने लगभग पन्द्रह बार हृदय पर दबाव बनाया। और टिकाई दो-दो बार करके श्वाँस-प्रश्वास चलाने की कोशिश में लगा रहा। तब तक रीना डॉक्टर बाबू को बुलाकर ले आई थी। तभी राजू ने आँखें खोली। अब वह स्वयं ही साँसें लेने की कोशिश कर रहा था।

चाचा ने देखा, राजू के गले की नस में गति लौट आई थी। राजू, जैसे नींद से जगा हो। अपने आस-पास लोगों की भीड़ देखकर उसने पूछा- क्या हुआ था मुझे ?

डॉक्टर बाबू ने हँसकर कहा- संयोग से तुम्हारा दोस्त टिकाई, पलाश, रीना और चाचा थे। उन्हें धन्यवाद दो। ये लोग न होते तो पता नहीं क्या होता। तैरना नहीं जानते हो तो पानी से सावधान रहा करो।

डॉक्टर बाबू दूसरे दिन टिकाई के स्कूल गए। कोई डूब गया हो तो क्या क्या करना चाहिये इसे उन्होंने चित्रों के सहारे समझाया। साथ वाले पन्ने पर चित्र दिए हुए हैं। सबलोग अच्छी तरह देख लो।

बातें करें मिलकर
रखेंगे लिखकर

कोई पानी में डूब जाए तो उसे निकालना पड़ेगा। तब कैसे सावधान रहोगे ? उसके बाद क्या-क्या करोगे ? इस विषय में तुम क्या सोचते हो, नीचे लिखो :

| काम | सावधानी |
|---|---|
| पानी से निकालते समय | |
| पेट से पानी निकालते समय | |
| साँस चालू करते समय | |
| हृदय की गति शुरू करने के लिए | |

रं
ग
ब
हा
र

नीचे चित्र बने हुए हैं। अपनी इच्छानुसार रंग भरो।

नीचे चित्र बने हुए हैं। अपनी इच्छानुसार रंग भरो।

नीचे चित्र बने हुए हैं। अपनी इच्छानुसार रंग भरो।

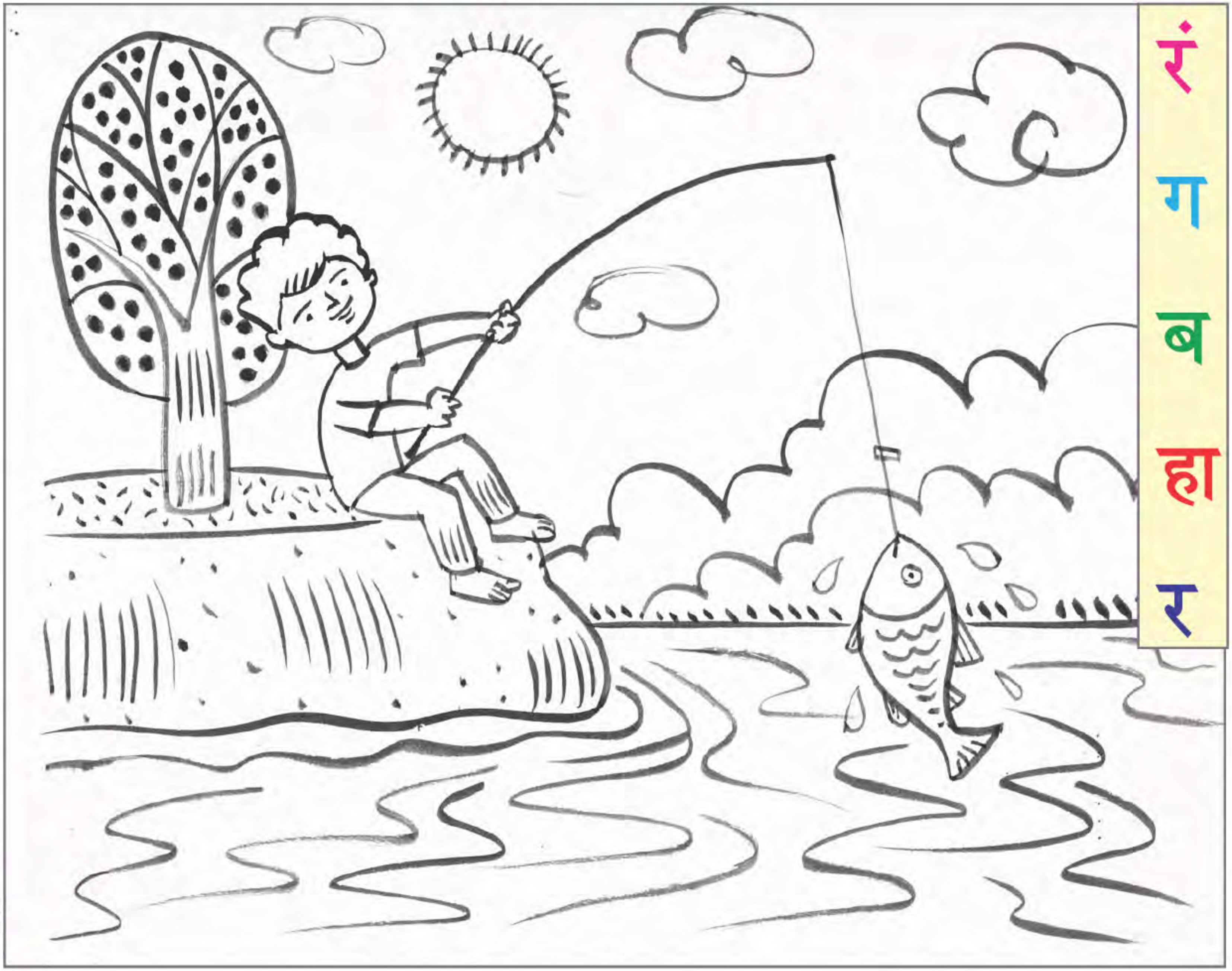

# हमारा पन्ना – 1

यह पुस्तक तुम्हें कैसी लगी ? लिखकर, चित्र बनाकर समझा दो :

# हमारा पन्ना – 2

यह पुस्तक तुम्हें कैसी लगी ? लिखकर, चित्र बनाकर समझा दो :

## हमारा पर्यावरण (तृतीय श्रेणी)

## पाठ्य सूची

### १. शरीर

(क) मानव शरीर : मुख्य वाह्य अंग व उसका नाम

(ख) शरीर की देखभाल और अच्छी आदत का विकास

(ग) विभिन्न इन्द्रियाँ व उनका काम

(घ) चलने, तैरने और खेलने में उपयोग होने वाले अंगों के नाम

(ङ) पहचाने पर्यावरण में विभिन्न प्राणियों के शरीर

(च) मनुष्य के शरीर के साथ दूसरे प्राणियों के शरीर की समानता

### २. खाद्य

(क) मनुष्य का खान-पान : हमारे परिचित खाद्य-पदार्थों के नाम

(ख) खाने योग्य विभिन्न उद्भिजों के नाम एवं प्रासंगिक धारणा

(ग) विभिन्न प्रकार के प्राणिज खाद्यों के नाम एवं प्रासंगिक धारणा

(घ) पैकेट में तैयार खाद्य

(ङ) रसोई

(च) खाद्य विनिमय

(छ) पशुपालन और रसोई

### ३. पोशाक

(क) मनुष्य की पोशाक : पहनने योग्य पोशाकें और उनका रंग

(ख) शीतऋतु व साल के दूसरे मौसमों की पोशाक

(ग) वर्तमान पोशाकों के उपादान एवं उत्स

(घ) प्राचीन लोगों की पोशाक

### ४. निवास स्थान

(क) मनुष्य का निवास स्थान : विभिन्न आकारों के घर-द्वार

(ख) घर और आस-पास के उपादान

(ग) घर के जरूरी हिस्से एवं उनका महत्त्व

(घ) घर तैयार करने के जरूरी सामान

(ङ) आधुनिक लोगों के घर

(च) घर के आस-पास के उपादान

(छ) आपदा-प्रवण अंचलों में घर

(ज) आदि मानव का घर

### ५. परिवार

(क) परिवार : परिवार के सदस्य, उनके नाम व पारस्परिक संबंध

(ख) मनुष्य का परिवार : निकट संबधियों के नाम और उनका निवास-स्थान

(ग) प्राणियों का परिवार

(घ) वर्तमान मनुष्यों के निवास-स्थान

(ङ) परिवार के सदस्यों द्वारा जीविका परिवर्तन

### ६. आकाश

(क) दिन और रात का आकाश

(ख) सूर्य की स्थिति और दिशा निर्णय

(ग) सूर्य और पृथ्वी

(घ) सूरज की स्थिति और समय परिवर्तन

(ङ) अमावस्या और पूर्णिमा

(च) तारे अथवा नक्षत्र

(छ) मेघ

(ज) आसमान में रंगों की छटा

### ७. स्वास्थ्य

(क) संपदा और स्वास्थ्य

(ख) संपदा व जल, हवा, मिट्टी

(ग) संपदा और हस्त-शिल्प

### ८. सावधानी

(क) साधारण सुरक्षा नियमः राह चलना

(ख) दैनिक उपयोग के सामान व सुरक्षा के नियम

| तीन पर्याय-क्रमों में मूल्यांकन के लिए निर्धारित पाठ्य सूची |
| --- |
| १) प्रथम पर्यायक्रम का मूल्यांकन : शरीर, खाद्य (पृ. १-५०)<br>२) द्वितीय पर्यायक्रम का मूल्यांकन : पोशाक, घर-द्वार, परिवार (पृ. ५१-१११)<br>३) तृतीय पर्यायक्रम का मूल्यांकन : आकाश, संपदा, सावधानी (पृ.११२-१५४) |

| प्रस्तुतिकालीन मूल्यांकन के लिए सक्रियतामूलक कार्यावली | प्रस्तुतिकालीन मूल्यांकन में उपयोगी सूचक समूह |
| --- | --- |
| १) सारणी पूरण | १) हिस्सेदारी |
| २) चित्रों का विश्लेषण | २) प्रश्न और अनुसंधान |
| ३) तथ्य संग्रह और विश्लेषण | ३) व्याख्या और उपयोग का सामर्थ्य |
| ४) सामूहिक कार्य और चर्चा | ४) समानुभूति और सहयोगिता |
| ५) कार्यपत्र पूरण और समीक्षा का विवरण | ५) नान्दनिकता एवं सृष्टिशीलता का प्रकाश |
| ६) साथी का मूल्याकंन एवं स्व-मूल्यांकन | |
| ७) हाथों का काम एवं मॉडेल की प्रस्तुति | |
| ८) कार्य क्षेत्र में काम (field work) | |

## प्रश्नों के नमूने

(इस प्रकार के नमूने का अनुसरण करते हुए ................ प्रश्नपत्र तैयार किए जा सकते हैं। आवश्यक हो, तो दूसरे तरह के प्रश्नों का भी व्यवहार किया जा सकता है। किस-किस प्रकार के प्रश्नपत्र तैयार किए जा सकते हैं उसका प्रारूप नीचे दिया जा रहा है।)

**(१) लघुउत्तरीय प्रश्न :**

निम्नलिखित में से कौन सा खाद्य दूध से तैयार होता है?

(क) रोटी (ख) चनाचूर (ग) छेना (घ) मूढ़ी

**(२) सही वाक्य में (✓) चिह्न लगाओ एवं गलत में (✗) का चिह्न दो।**

(क) एप्रॉन डाक्टरों की पोशाक है। (  )

(ख) मुँह के लार भोजन हजम करने के काम में नहीं आता है। (  )

**(३) खाली स्थानों की पूर्ति करो।**

(क) तालाब का पानी वाष्प बनकर ........................... तैयार करता है।

**(४) बेमेल शब्दों को खोजो :**

(क) चनाचूर, निमकी, भात, चिप्स (ख) धोती, सलवार, पंजाबी, बरसाती (ग) आलू, आम, मिर्च, अनारस
(घ) उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी, सुकुमार राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सत्यजित राय

**(५) क स्तम्भ के साथ ख स्तम्भ का मिलान करो :**

| क स्तम्भ | ख स्तम्भ |
| --- | --- |
| (क) माँ की बहन | (क) खेतों में पाए जाने वाले चूहे का बिल |
| (ख) मिट्टी के नीचे का गड्ढा | (ख) शुक्लपक्ष का प्रथमा |
| (ग) अमावस्या के बाद वाले दिन | (ग) नाड़ियों की धड़कन |
| (घ) सीप से तैयार खिलौने | (घ) घरेलू शिल्प |
| (ङ) हृदय | (ङ) मौसी |

(६) **संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न (एक या दो वाक्यों में उत्तर दो):**

(क) यायावर लोग कहाँ रहते थे? (ख) पालक, कच्चू, पान और धान का कौन-कौन सा हिस्सा हम खाते हैं? (ग) शीतऋतु में पशु-पक्षि ठण्ड से कैसे बचते हैं? (घ) आग का उपयोग सीख जाने पर लोगों को क्या-क्या सुविधा हुई?

(७) मैडम ने तुम्हें चिरैता का एक पत्ता और एक वासक का पत्ता दिया। तुम इन्हें कैसे काम में लगाओगे?

(८) अक्सर तुम्हारे दोस्त के पैरों की त्वचा फट जाती है। तुम अपने दोस्त को कैसी सावधानी बरतने को कहोगे?

(९) चिह्नों का उपयोग करते हुए तुम अपने घर के दरवाजे, खिड़की, शयनकक्ष, बरामदा और रास्ता दिखाओ।

(१०) अन्तर बताओ : (क) खीर और आलू (ख) आँख और जीभ (ग) रोआँ और पंख (घ) टेलर और ड्राइवर

(११) (क) पानी में तैरने वाले किसी एक जीव का चित्र बनाओ (ख) एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद कर जाने वाले एक जीव का चित्र बनाओ (ग) गर्मी में खाने वाले एक फल का नाम बताओ (घ) मिट्टी की दीवार और पुआल की छावनी वाला एक घर का चित्र बनाओ।

(१२) **निम्नलिखित शब्दों पर २-३ वाक्य लिखो :**

स्किपिंग, साबुन, रक्ताल्पता, इन्द्रिय, व्यायाम, हनुमान की बुद्धि, चिम्पांजी, पनडुब्बी, अनाज, हजम, जहरीला फल, आग, जहाज, शिकार, सूती की पोशाक, पोशाक बुनना, मानचित्र, टाली, टीन, सीमेण्ट, ईंट, पानी का पम्प, आँधी, बाढ़, तम्बू, कमर दर्द, परिवार, ठिकाना, पोस्ट कार्ड, जीविका, आसमान का रंग, छाया, सूर्य, चाँद, तारा, मेघ, वर्षा, स्वास्थ्य, जलपान, धुआँ, श्वाँस का कष्ट, उर्वर मिट्टी, प्राकृतिक संपदा, जल, मिट्टी, तालाब, बाँस, कृषि संपदा, सिग्नल, जेब्रा-क्रॉसिंग, नेल कटर, ब्लेड, मोमबत्ती, इस्त्री, काँटी, मिट्टी का चूल्हा, फेफड़ा, हृदय, नाड़ी, श्वाँस, मेडल, पहाड़, विद्युत, सवेरा, संध्या, घण्टा, कम्प्यूटर, पालकी, फोटोकॉपी, दुकान।

(१३) इस पुस्तक के निम्नलिखित पृष्ठों के चित्र विद्यार्थियों को दिखाएँ और चित्रों के संबंध में तीन वाक्य लिखने को कहें :

पृष्ठ संख्या : 4, 7, 17, 19, 23, 28, 35, 39, 40, 43, 48, 49, 53, 55, 58, 60, 65, 70, 74, 80, 83, 84, 86, 87, 89, 97, 98, 100, 103, 106, 109, 110, 113, 114, 120, 124, 135, 136, 137, 140, 142, 143, 144, 146, 147, 149, 152

(१४) नीचे शब्दों की टोकरी में नाना प्रकार के शब्द दिए गए हैं। करीबी सम्पर्क वाले शब्दों की तालिका बनाओ।

मधुमक्खी
नाखुन बाघ डैना
सिंह गौरैया चिम्पांजी
आँख फतिंगा शल्क
पालक रोआँ
हरिण

लुंगी
स्वेटर चादर कमीज
टोपी बरसाती ग्लब्ज
ऐप्रन जैकेट सोना जर्सी
चूड़ीदार कोट-पैण्ट गंजी
साड़ी शर्ट धोती
पंजाबी

हण्डी थाली
मिट्टी आग बर्तन कप
कुम्हार का चाक पीतल
ताम्बा सोना लोहा पत्थर
चानी मिट्टी तीर धनुष
भाला लाठी
भाँड़ हण्डी

भिण्डी
ओल टमाटर
खीरा आलू प्याज लौकी
गाजर सेम मटर परवल
पुई नारियल पानी
खजूर का रस
पीने का पानी

## शिक्षण परामर्श

### स्वागत, सभी मित्रो। आइए हम सभी मिलकर बच्चों को सीखने में मदद करें

बच्चे शैशवावस्था से ही सीखते हैं। परिवार से, मुहल्ला से, निकटतम सम्बन्धियों से। बहुत कुछ उन्होंने सुना है। किन्तु सही ढंग से समझ नहीं पाए। विचारों ने जन्म लिया, लेकिन वह भी अपूर्ण रूप में। इसीलिए उनमें कौतूहल ने जन्म लिया। इस स्थिति में उनकी धारणाओं को उनके ज्ञान के रूप में परिणत करने के लिए कुछ सहायता की आवश्यकता है। बहुत से क्षेत्रों में यह अचानक ही सम्भव नहीं है। उसकी पहली सीढ़ी है यह पुस्तक।

बच्चे रोज ही अपने अनुसार नया विचार बना लेते हैं। उनमें ज्ञान होते ही कुछ विषयों के प्रति गलत विचार बना लेते हैं। गलत निर्णय की उनमें क्षमता नहीं होती। गलत-सही का निर्णय करना न सीख पाए तो उसके भावी जीवन में काफी संशय पैदा हो सकता है। किस प्रकार तर्कपूर्ण ढंग से अपने विचारों की सत्यता निर्णय करना पड़ता है, यह सोचने में भी उनको मदद करने की जरूरत है। हम उनके विश्वासों को चोट न पहुँचाते हुए भी उन विषयों पर उनकी सहायता करने का प्रयास कर सकते हैं।

बहुत से विषयों में बच्चे कोई विचार ही नहीं बना पाते। अत: उनके भावी जीवन को आनन्दमय बनाने में ये सब विचार जरूरी है। ज्ञान का होना आवश्यक है। यही सब विषय लेकर वे सोचना शुरू करें, उत्तम विचार मन में विकसित हो, यही हम चाहते हैं। उन्हें सोचने के लिए कैसे उत्साहित किया जाए? इस विषय पर हमारी सामूहिक भावना जगने की जरूरत है।

> '........ बच्चे को अगर सही इन्सान बनाना है, तो बचपन से ही उसे सही इन्सान बनाने की शिक्षा देनी होगी, नहीं तो वह बच्चा ही रह जाएगा, इन्सान नहीं बन पाएगा। बचपन से ही, केवल उनकी स्मरणशक्ति के ऊपर बल न देकर, साथ ही साथ यथेष्ट ढंग से उनकी चिन्तनशक्ति और कल्पनाशक्ति को मुक्त उड़ान भरने का अवसर देना होगा।'
>
> 'शिक्षा की फेरबदल', रवीन्द्रनाथ ठाकुर, १८९२

**हमारा पर्यावरण**

**अनुकूल पर्यावरण ही सभ्यता की नींव है**

आज का बालक भविष्य का नागरिक है। उनके मन में यह विचार स्पष्ट होना चाहिए। इसीलिए पर्यावरण के संबंध में उन्हें ज्ञान होना आवश्यक है। किस प्रकार वर्तमान पर्यावरण बना, इसका इतिहास भी जानना होगा। आने वाले समय में पर्यावरण को कैसे साफ रखा जाए, इसे समझना होगा। सृष्टिशीलता के साथ इस बात का उपयोग भी करना होगा।

इस बोध का समूचा भूगोल, इतिहास, विज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा आदि विभिन्न विषयों एवं पाठ्य पुस्तकों से टूटती एक प्रथा बहुत दिनों से चली आ रही है। लेकिन बच्चों के पास, उनका पर्यावरण एक सम्पूर्णता लेकर आता है। उनका वर्तमान के साथ ही अतीत और आने वाले दिन भी जुड़े होते हैं। इतिहास मिल जाता है भूगोल से, पर्यावरण मिल जाता है विज्ञान से। इस मिलने-जुलने के बीच ही है, बच्चों की जिज्ञासाओं को शान्त करने का असीम भण्डार। उस कौतूहल युक्त भावना और चिन्ताओं को उसी समय कहने की आवश्यकता है। विषय का खण्डन उसकी शिक्षा को प्राणहीन शरीर में परिणत कर देता है।

इसीलिए 'हमारा पर्यावरण' पुस्तक सम्पूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। विभिन्न विषय में पर्यावरण को खण्डित नहीं किया गया है। शिशुओं के असीम कौतूहल को विषयों के आर्वत्त में बाँधकर रखने की अपेक्षा उसने विरत रहने का पूरा प्रयास किया गया है। बच्चे के मन में सबसे पहले जो प्रसंग जरूरी हो सकता है, इसी को आधार बनाकर नाना विषयों को स्वयं सीख लें, इसकी कोशिश की गई है।

उन पर बच्चे अल्प मात्रा में भी अगर कुछ सीखते हैं, तो उनका तत्काल उपयोग करने की कोशिश करते है। इस बात को मानने में बहुतों को आपत्ति नहीं होगी, मगर प्रयोग करने का समय आए तो आपत्ति करते हैं। वे सोचते हैं, बच्चों को इस तरह शिक्षित करना असम्भव है। वे जिसे शिक्षा कहते हैं, उसे इस तरह देना असम्भव है। वे बहुत से विषय निर्धारित कर देते हैं, .... इतना इतिहास का अंश, भूगोल के इतने पृष्ठ, ........ बच्चों का मन शिक्षा को जितना ग्रहण कर पाए, कम भी हो, तो वही शिक्षा है, और शिक्षा के नाम पर जो उनके मन को भार कर देता है उसे पढ़ाना कह सकते हैं, मगर सिखाना नहीं।....... इस पीड़ा और प्रताड़ना के कारण उन्हें कितना नुकसान सहना पड़ता है, कितना मूल्य चुका कर, कितना घर लाता है, इसे कौन समझेगा, स्वीकार नहीं करेंगे, कोई समझते हैं, तो स्वीकार करते हैं, मगर प्रयोग करने के समय जैसा चला आ रहा है, वैसा ही चलाए जाते हैं।'

'आवरण', रवीन्द्रनाथ ठाकुर, १९०६

## ताड़नाहीन, पीड़ाहीन शिक्षा

**खेल, कहानी और नोंक-झोंक**
**आनन्द लें बे-रोकटोक**

हर एक चीज में ही खेल का आनन्द है। और अच्छा लगे, तो सीखना आसान हो जाता है। अच्छे लगने वाले कुछ सम्भावनापूर्ण विषय हम चुन लेते हैं।

- खेल
- आपस में बातचीत और तर्क-वितर्क
- घर और मुहल्ले के प्रिय व्यक्तियों और बड़ों के साथ बात करना

थोड़ा पढ़ना सीख लेने के बाद तीनों तरीकों से सीखने में शिशुओं को आनन्द आएगा। आप (शिक्षक/शिक्षिका) उन्हें और उत्साहित करें। प्रत्येक पृष्ठ पर कुछ बच्चों के साथ उनकी शिक्षिका की बातचीत, किसी भी मूल विषय पर दिखाया गया है। यही पाठ्य है। पढ़ते ही आप को लगेगा कि जो बातें हैं उसे विद्यार्थी और आप स्वयं ही बता सकते थे। इसी भंगिमा में वे आपस में छोटे-छोटे समूह बनाकर और भी बातचीत करें। इसे समझने के लिए ही प्रत्येक कर्मपत्र से पहले 'बातें करें मिलकर/रखेंगे लिखकर' कहा गया है।

आपस में यह अभ्यास बहुत आवश्यक है। ध्यान दें, इस अभ्यास में कौन, और कितना हिस्सेदारी कर रहा है। हो सकता है कभी-कभी यह अभ्यास कक्षा में तथाकथित अच्छे और बुरे के विपरीत चोट करने वाला हो। कई बार ऐसा भी होता है कि जो अच्छा पढ़ पाता है या लिख पाता है, वह कुछ नया नहीं कह पाता। एक उदाहरण ले सकते हैं। पुस्तक के ४३ वें पृष्ठ के अन्त में देखें। ऐसा भी हो सकता है कि रसोई के संबंध में एक व्यक्ति और क्या लगेगा ? और क्या करें ? इसे लेकर तर्क के दौरान बहुत बातें की हैं। वहीं दूसरा व्यक्ति कुछ भी नहीं जानता। उसने सुना। अब लिखने की बारी है। अब इसे दूसरे ने लिखा। पहला व्यक्ति बिना देखे लिख नहीं सकता। उसने उसको देखकर लिखा। इसमें कोई हानि नहीं है। बिना देखे ताड़ना और पीड़न के साथ जो भी सीखता, इससे अधिक ही दोनों सीखेंगे। अभिभावक/अभिभाविका से बताएँ कि इन दोनों में कौन ज्यादा तेज है, इसकी तुलना करेंगे तो दोनों को ही हानि होगी।

# शरीर से शुरू, सावधानी में अन्त

## कहाँ था ? कहाँ जाऊँगा ? कौन हूँ ?

बच्चे को स्वयं और उसके चारों तरफ के मनुष्य एवं प्राणीजगत के शरीर संबंधी विभिन्न प्रकार के विषयों को लेकर सीखने की सामग्री १ से २५ पृष्ठों तक दिया गया है। इस भाग में विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद, भूगोल पर्यावरण से संबंधी सारे विषय सम्मिलित हैं। रंगीन और आकर्षक चित्रों को बच्चे देखेंगे। अपने साथ उन चित्रों का मिलान करेंगे। कोई-कोई तो चित्रों को अपनी तरह से चित्रित भी कर लेंगे। उसे उत्साहित करें। कोई-कोई अपने खेल के मैदान, तालाब इत्यादि से संबंधित अनेक बातें करेंगे। उसके विचार को उत्साहित करें। मानवेत्तर प्राणियों को लेकर विभिन्न बातें १९ से २५ पृष्ठों तक की गई हैं। इस भाग में आप देखेंगे कि तथाकथित रूप से पिछड़े बच्चे कितनी जानकारी रखते हैं। उनके इस ज्ञान की प्रशंसा कीजिए। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। मैं भी कर सकता हूँ- यह विश्वास आएगा। ऐसा सोचते ही वह बच्चा, जो पहले कुछ भी करने से हिचकता था, वह करने की कोशिश करेगा।

यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पुस्तक का अधिकांश भाग बातचीत पर आधारित है। बच्चे छोटे-छोटे समूहों में मिलकर अभिनय भी कर सकते हैं। अभिनय के साथ सीखना बहुत आसान होता है। किस तरह बातों को कहना चाहिए, ऐसा सोचते हुए अर्थ को अच्छी तरह समझ सकते हैं। नया संवाद भी तैयार कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार आप उनकी भाषा को थोड़े परिमार्जित कर सकते हैं। स्थानीय अंचलों की विचित्रता को भाषा के माध्यम से संवाद बनाने में मदद करेंगे। सारे बच्चों से अन्ततः एक बार अभिनय जरूर करवाएँगे।

इसके बाद खाद्य का प्रसंग आया है २६ से लेकर ५० वें पृष्ठ तक। इस भाग में सबसे पहले विज्ञान, शारीरिक ज्ञान, स्वास्थ्य के साथ भूगोल एवं अन्त में इतिहास का प्रसंग आया है। इतिहास की सारी आलोचनाओं को वर्तमान के प्रसंगों के साथ शुरू की गई है। वर्तमान का कोई भी विषय अतीत में कैसे बचा रहेगा, इसे लेकर विचार करने से ही इतिहास के प्रति लगाव बनेगा। इसी विचार को अनेक सूत्रों से परिचय कराने का प्रयास रहा है। उदाहरण के तौर पर, आग के प्रयोग वाला विषय लिया जा सकता है। आग जलाना एक समस्या है, इसे पृष्ठ ४३ पर बताया गया है। इसके बाद ही वर्तमान में आग जलाने की बात लाई गई है। आग जला देने के बाद बर्तन-वासन का प्रसंग पृष्ठ ४४ पर आया है। मनुष्य ने सबसे पहले आग कहाँ से पाया, यह प्रसंग पृष्ठ ४८ पर है। इसी प्रकार एक-एक प्रसंग उठाकर विचार को दिशा दे देना पड़ता है। तभी ज्ञान के विस्तार की सम्भावना बनती है। एक साथ ही बहुत कुछ कह देने से विचारने का समय नहीं मिलता। हम चाहते हैं कि बच्चे चिन्तन करें। घर, मुहल्ले की खोज-खबर लें। और जब आपस में बात करें तो अपने अनुभव बताएँ।

विचार विमर्श करने के बाद उसे अपने व्यवहार में प्रयोग कर रहा है कि नहीं, उसे भी बीच-बीच में देखने की कोशिश की गई है। उदाहरण स्वरूप पृष्ठ ३७-३८ पर कथोपकथन के द्वारा विषफल की पहचान करने की पद्धति बता दी गई है। पृष्ठ ४८-४९ पर प्राचीनकाल में आग के उपयोग के साथ पालतू पशुओं का प्रसंग भी आया है। यहाँ पर बच्चों से स्वयं चिन्तन करने की उम्मीद की गई है। पशुओं की पहचान करने के लिए हमेशा एक ही तरह की विधि अपनाई गई थी, उसे वे स्वयं बोले। उन्हें ऐसा करने की छूट देने का मतलब ही है- चिन्तनशक्ति और कल्पनाशक्ति को मुक्त उड़ान भरने देना। कोशिश करें कि इस खण्ड में भी सभी को एक बार नाटक में अभिनय करने का अवसर अवश्य मिले। एकाधिक बार हो तो और भी अच्छा है।

पोशाक का प्रसंग है ५१से ६४ पृष्ठ पर। यह प्रसंग क्षण भर के लिए भूगोलकेन्द्रित प्रतीत हो सकता है। मगर प्रस्तुति में पोशाक का आर्थिक प्रसंग आया है पृष्ठ ५६ से ५८ पर। मनुष्य का श्रम बहुत ही मूल्यवान है, इसे ज्ञान के तौर पर न सिखला कर बच्चों को अपनी अनुभूति के आधार पर श्रम से संबंधित विचार तैयार हो, ऐसी ही कोशिश की गई है। पोशाक का इतिहास उल्लेखित है पृष्ठ ५९ से ६२ पर। यहाँ भी बच्चों से अनुभव लेकर कथा प्रसंग में आश्चर्यचकित कर देने लायक कई सारे तथ्य बताए गए हैं। लेकिन वास्तविक रूप से उन्हें विचारने का एक भरपूर खुराक दिया गया है। पोशाक के प्रसंग को खत्म किया गया है, पृष्ठ ६२ से ६३ तक आदि मानवों की पोशाकों की धारणा लेकर। ध्यान रहे कि नाटक करने का अवसर यहाँ भी रहे।

आगला प्रसंग घर–द्वार का है। पृष्ठ ६५ से ९० तक। यहाँ प्रधान और नई बात है– चित्र और मानचित्र के सम्पर्क में अन्तर की धारणा तैयार करना। इसके बाद मानचित्र देखना और समझना है। फिर स्वयं चित्र बनाना सीखना। इस काम में आनन्द आने पर बच्चों के भूगोल की नींव मजबूत होगी। यहाँ पर भी घर–मकान का मूल्य निर्धारण करने की बात है। घर और मकान की विकासशीलता के इतिहास को भी उल्लेखित किया गया है। पहले की ही तरह, एक ही धारा में। मानवेत्तर प्राणियों के घर–द्वार का उल्लेख छोड़ दिया जाए तो पर्यावरण की समग्रता की हानि ही होगी। इसलिए उसे भी ८९–९० पृष्ठ तक रखा गया है। यहाँ तक पहुँचने के बाद बहुत से बच्चे उत्साही होकर नाटक के लिए प्रेरित करेंगे। आप भी दूसरों को इसमें हिस्सेदारी करने के लिए प्रेरित करेंगे।

अब परिवार की कहानी है। ९१ से १११ पृष्ठ तक। यहाँ परिवार की शाखा-प्रशाखा, परिवार में सभी की पारस्परिक सहयोगिता, पता–ठिकाना, जीविकोपार्जन की बात बताई गई है। यहाँ पर, और आगे भी, कुछ विषयों में शिशु को स्वयं अपना एक विचार बनाने के लिए कहा गया है। कौन सा विचार सही है, इसे लेकर कुछ भी नहीं कहा गया है। देखिएगा, कोई पक्षपात की आशंका का जन्म न होने पाए। विभिन्न परिस्थितियों की बातें उभर कर आए। मासूम बच्चें स्वयं इन सब विषयों को लेकर विचार करें। अपने विचार उन पर लाद देना स्वतंत्र शिक्षा पद्धति के लिए ठीक नहीं है। पहले से सीखी हुई बातों को यहाँ प्रयोग करने के अवसर भी दिए गए हैं। इतिहास और भूगोल आपस में मिलजुल से गए हैं। मानवेत्तर प्राणियों की अवधारणा भी यहाँ है। मानव और मानवेत्तर प्राणी से संबंधित नाना प्रकार के पारस्परिक अभिनय करने का अवसर यहाँ भी उपलब्ध है। जहाँ तक सम्भव हो उसे व्यवहार में लाया जाएगा, यही आशा की जा रही है। इसके बाद ११२ से १३० पृष्ठ तक आया है आकाश का प्रसंग। सूर्य, चन्द्रमा, बादल, वर्षा, बज्रपात, इन्द्रधनुष, क्षितिज की कहानी प्रस्तुत की गई है। भौतिक विज्ञान यहाँ मुख्य रूप से आया है। फिर भी यह सदैव ही समाज एवं परिवेश के प्रसंग को लेकर ही आया है। भूगोल का विषय भी इससे अछूता नहीं रहा। सूर्य और चन्द्रमा को लेकर निरीक्षण करने की बात कही गई है, उन्हें व्यावहारिक रूप में प्रयोग करने के लिए उत्साहित करें। समय लेकर करते रहें। बीच–बीच में स्मरण कराते रहिए। अन्तिम अध्यायों को अभिनय के माध्यम से करने के लिए उत्साहित करें।

बाद का विषय है सम्पदा। १३१ से १४६ पृष्ठ तक। पहले शरीर के बारे में जो कुछ सीख चुके हैं, यहाँ उसे प्रयोग में लाएँगे। जल, वायु, मिट्टी एवं आकाश सभी मिलकर प्रकृति के प्रति सचेतन होंगे। मनुष्य द्वारा निर्मित सम्पदा के बारे में भी प्राथमिक जानकारी प्राप्त करेंगे। यहाँ बहुत से विषय आपस में संलग्न हैं। यहाँ भी अभिनय करने की सारी सम्भावनाएँ उपस्थित हैं। साथ ही यहाँ इस विशाल प्रकृति के नाना प्रकार के रहस्य मिलेंगे। बच्चे प्रकृति के और ज्यादा सन्निकट जाएँ और प्रकृति से सीखें। उनका मन-प्राण सजीव हो उठे, यही कामना है। पानी–मिट्टी–पेड़-पौधों का स्पर्श पाकर को हों।

अन्तिम प्रसंगों में नित्य जीवन में घटनेवाली दुर्घटनाओं से सावधान किया गया है। १४७ से १५४ पृष्ठ तक। जैसे सावधानीपूर्वक शहर, नगर का रास्ता पार करने और सावधानी के साथ कुदाल चलाने की बात कही गई है। इसी प्रकार बच्चों (शिशु) को क्रमश: स्वावलम्बी बनाने का प्रयास किया गया है। अन्तिम प्रसंग में अभावग्रस्त मित्रों को हमेशा मदद को तैयार होने की बात है।

बाकी तीन पृष्ठों पर रंगबहार (पृष्ठ १५५ से १५७) में पाँच चित्र हैं। अपने चारों तरफ रंगों की विभिन्नता देखते हैं। उन्हीं रंगों से अपने चित्रों को रंगीन करें।

पृष्ठ १६१–१६२ पर मूल्यांकन की रूप रेखा दी गई है।

पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर कर्मपत्र दिए गए हैं। विद्यार्थी उन कार्यों को कैसे सम्पन्न करते हैं इसका आप ध्यान रखें। इसी आधार पर पिछड़ रहे विद्यार्थियों को अतिरिक्त एवं आवश्यक मदद करें। इसी तरह विद्यार्थियों का सामग्रिक मूल्यांकन (CCE) होता रहेगा।

पुस्तक में विभिन्न प्रकार की पारदर्शिता को समझने के लिए प्रत्येक पाठ के बाद दिया गया कर्मपत्र नाना प्रकार से आपके काम आ सकते है। आलोचना एवं परीक्षा देने में किस प्रकार भाग ले रहे हैं, इसका ध्यान रखेंगे। किसी के लिखे हुए को गलत नहीं कहेंगे। फिर भी जो देख रहे हैं उस विषय से सम्बन्धित तथ्य आप संग्रहित करेंगे। किस प्रकार संरक्षण करेंगे, उसे आपलोग सोचेंगे। अपने स्कूल एवं विभिन्न पड़ोसी विद्यालयों के सहकर्मियों के साथ आलोचना करिए। पहले पारदर्शिता के लिए कुछ क्षेत्रों को चुन लीजिए। उन विषयों से विद्यार्थी को सामर्थ्य पर्यवेक्षण एवं संरक्षण के लिए अभ्यस्त होने पर और कुछ क्षेत्रों को चुन लीजिए। इस प्रकार आपलोगों के पर्यवेक्षण से जो तथ्य तैयार होगा उससे शिक्षा को एक नई दिशा मिलेगी।